नपुंसकामृतार्णव

हिन्दीटीकासहित

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई-४

श्रीटकसालनिवासी-(आयुर्वेदोद्धारक)
वैद्यपञ्चानन-पण्डितरामप्रसाद-
वैद्योपाध्यायविरचित:

नपुंसकामृतार्णव:

हिन्दीटीकासमेत:

संस्करण : मई २००९, सम्वत् २०६६

मूल्य ५० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

भूमिका

पाठक भाइयो! इस विषय के अधिक विवेचना की आवश्यकता नहीं कि, इ
समय संसार की क्या अवस्था है, जो है वह किसी से भूली हुई नहीं, प्रायः आँ
उठाकर देखते ही अपने कुकर्म से दूषित शरीरवाले नवयुवकों के झुंड ही दिखा
पड़ते हैं इन झुंडों में कुछ ऐसे भी होते हैं जो अपनी ऐसी रद्दी अवस्था होने से घर
जाना मानो काल के मुख में पड़ना समझते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जिनको स्वयं नपुंस
होने के सबबसे अपने घर के दुश्चरित्र देखने पड़ते हैं, ऐसी दुःखव्यंजक अवस्था में
जानें यह बिचारे क्या क्या सोचते होंगे सो भगवान् जाने परन्तु कोई कोई मू
महान् अनर्थ भी कर बैठते हैं, जिसके फल से इनका तो यह लोक और परलो
दूषित होता ही है परन्तु यह दुष्ट अपने माता पिता आदि कुटुंबियों का जीवन भ
कलंकित कर जाते हैं इस दुःख से बढ़कर इस समय भारत को क्या दुःख हो सकत
है, ऐसा विचारकर मुझे महान् खेद हुआ करता था। दैवयोग से सं० १९६५ के
आरंभ में ही मैं अखिल भारतीय आयुर्वैदिक यूनीवर्सिटी के महोत्सव में बंबई के
निकट पनवेल गया था वहाँ पर परमोदारचरित शास्त्रोद्धारक वैश्यकुलभूषण
श्रीयुत् सेठ खेमराजजी से भेंट हुई और कुछ इस विषय की चर्चा चली और लोगे
की व्यवस्था तथा उनका झूठे सच्चे इस्तिहारों से लूटना आदि विशेष विवेचन हो
के अनंतर श्रीयुक्त सेठजी ने "इस विषय का कोई उत्तम ग्रंथ बनाकर भेजिये" ऐस
इच्छा प्रगट की मैं पहले ही से ऐसा ग्रंथ लिखना चाहता भी था सो श्रीयुक्त सेठज
के कहने से मानो सोती हुई इच्छा इस पुस्तक को बनाने को एकदम उठ खड़ी हु
मैंने घर आने पर अवकाश पाकर यह नपुंसकामृतार्णव नामक ग्रंथ नव तरंगों
लिखकर आधुनिक लोगों के कल्याण के लिये श्रीमान् शास्त्रोद्धारक सेठजी के प्रति
समर्पण किया और सेठजी ने इसे निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस में छापकर सबके
कल्याण के लिये प्रसिद्ध किया। आशा है सद्गुणग्राही इस ग्रंथ से स्वयं लाभ उठाक
औरों को भी शिक्षा देंगे।

आपका शुभचिंतक-
रामप्रसाद उपाध्याय

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass
Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial
Estate, Pune 411 013.

श्रीः

अथ नपुंसकामृतार्णवग्रंथस्थविषयानुक्रमणिका

॥श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरवे नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

नपुंसकामृतार्णवः

हिन्दीटीकासमेतः

मंगलाचरणम्

विलोलद्वीचिसंयुक्ता दुःखत्रयविनाशिनी ॥
राजते ह्यापगा यस्य शशिशोभितमस्तके ॥१॥
गिरिजा यस्य वामांगे सपुत्रा च विराजते ॥
भस्मोद्धूलितदेहाय नमस्तस्मै पिनाकिने ॥२॥

दोहा

चपल वीचि युत आपगा, करहि दुःखत्रयनाश ॥
शशि शोभित मस्तक विषे, रही निरंतर भास ॥१॥
गणनायक को अंक ले, गिरजा वामाधार ॥
भस्म लिप्त तनु देवको, नमः है बारंबार ॥२॥

ग्रंथारंभः

पुंस्त्ववृद्धिकरं चैव षंढादिदेषनाशनम् ॥
संतत्यादिसुखकामायुरारोग्यदं तथा ॥१॥
तरंगैरष्टभिः शुद्धैर्नपुंसकामृतार्णवम् ॥
अनुभवकृतैर्योगैस्तथैव शास्त्रसंमतैः ॥२॥

निबध्नामि नियोगाच्च सतां लोकहितैषिणाम् ।।
वैद्यो रामप्रसादोहं दृष्ट्वा लोकस्य संस्थितिम्।।३।।

संसार के हित चाहनेवाले श्रेष्ठ पुरुषों की आज्ञा से तथा इस समय लोगों की अवस्था देखकर रामप्रसाद नामक वैद्य मैं इस 'नपुंसकामृतार्णव' ग्रंथ को शास्त्रसंमत अनुभव कियें हुए योगों से निबंधन करता हूं अर्थात् ग्रंथरूप से लिखता हूं। सो यह नपुंसकामृतार्णव (नपुंसकोंके लिये अमृतका समुद्र) सुंदर शुद्ध आठ तरंगोंसे युक्त होगा। और पुरुषार्थ का बढ़ानेवाला तथा षंड (नपुसंक) आदि दोषों का हरनेवाला और संतानादि सुख का करनेवाला, आयु तथा आरोग्यता को देनेवाला होगा।।१-३।।

शरीरे सर्वधातूना सार वीर्यं प्रकीर्तितम् ।।
तदेव चौजस्तेजश्च बलं कांतिः पराक्रमः ।।४।।
यस्मिञ्छुद्धे शरीरस्य गतिः शुद्धा भवेत्सदा ।।
ब्रह्मचर्यदशायां हि क्षीणे क्षीणपराक्रमः ।।५।।
धैर्यतेजोविरहितः रोगग्रस्तकलेवरः ।।
सारहीनं यथावस्तु तथैव स नरः स्मृतः ।।६।।

शरीर में सब धातुओं का सारभूत वीर्य ही कहा जाता है, वही "वीर्य" ओज, तेज, बल, कांति और पराक्रम रूप से शरीर में है। जिसके शुद्ध होने से शरीर की गति सर्वदा सब तरह से शुद्ध रहती है, ब्रह्मचर्य अवस्था में वीर्य के क्षीण होने से मनुष्य पराक्रम तथा धैर्य और तेज से हीन होकर अनेक रोगों से युक्त शरीरवाला होता है। जैसे सारहीन पदार्थ रद्दी होता है वैसे ही वीर्य से बिना पुरुषार्थ है।।४-६।।

अन्यैरपि महारोगैर्नरः क्लीबत्वमाप्नुयात् ।।
मातृपितृजदोषाच्च तथा दैवप्रभावतः ।।७।।

परं च बहवो लोके दुःखिता निजदोषतः ॥
ब्रह्मचर्यविहीनास्ते स्वयं क्लीबत्वमागताः ॥८॥

और भी बहुत सी महाव्याधियों से मनुष्य नपुंसकता को प्राप्त होता है तथा माता पिता के रजवीर्यसंबधी विकारों से मनुष्य को नपुंसकता होती है। और पूर्व जन्म के पापों के सबब से भी असाध्य नपुंसक होते हैं। परंतु इस समय अधिकतर मनुष्य ब्रह्मचर्य से विहीन होकर अपने ही कुकर्मों के फल से नपुंसकता को प्राप्त होकर दुःख भोग रहे हैं॥७॥८॥

शिष्य उवाच

आश्चर्यमिदमत्यंतं दृष्ट्वा लोकस्य संस्थितिम् ॥
निवृत्तिर्दृश्यते नित्यं धर्मात्कर्माद्द्वयात्तथा ॥९॥
सत्ययोगतपोभ्यश्च ब्रह्मचर्याद्विशेषतः ॥
शमो दमस्तु कुत्रास्ति विवेकोपि गतः स्वयम् ॥१०॥
प्रवृत्तिर्मैथुने कामे सदा सर्वत्र दृश्यते ॥
दुःखितापि भृशं नाथ परदाराभिमर्षणात् ॥११॥
उपदंशप्रमेहादीन्प्राप्य वेश्याप्रभावतः ॥
नपुंसकत्वं संप्राप्य अयोनिमैथुनात्तथा ॥१२॥
हतदृष्टिरुजार्ताश्च पश्यन्तोपि हि तत्फलम् ॥
न ते पापान्निवर्तंते न तान्दृष्ट्वा जनाः स्वयम् ॥
कारणं चात्र किंनाथ कृपया वद मे प्रभो ॥१३॥

हाथ जोड़कर शिष्य कहने लगे कि हे गुरो! इस समय संसार की अवस्था देखकर अत्यंत आश्चर्य होता है, प्रायः मैं जिधर देखता हूं सब मनुष्यों की प्रवृत्ति धर्मादिकों में नहीं है। बल्कि धर्म से दया से कर्मकाण्ड से तथा सत्य से और योग तप आदि से निवृत्ति ही दिखाई देती है।

खासकर ब्रह्मचर्य तो नष्टप्राय सा प्रतीत होने लगा। मन में शांतभाव और इन्द्रियों का दमन तो कहाँ था परंतु विवेक भी मानो भारत को ही छोड़ भागा। हे नाथ! इस समय जिधर देखा जाय प्रायः सब की प्रवृत्ति संसार की विषयवासना से भरी हुई है। और ऐसा विचित्र समय आया कि अनुचित मैथुनेच्छा को ही मनुष्य शरीर धारण का मुख्य कर्तव्य समझने लगे। हे गुरो! यद्यपि इन कुकर्मियों को परस्त्रीगमन से अनेक दुःसह दुःखों से सामना करना पड़ता है और वेश्यागमन आदि से आतसक सोजाक आदि दारुण रोगों की करडी ज़ेल की सेवा सदा के लिये करनी पड़ती है। तथा अयोनिमैथुन (हस्तमैथुन व गुदमैथुन) से नपुंसकता को प्राप्त होकर अनेक दुःसह रोगों की जंजीर से जकड़े जाते हैं बल्कि इन विचारों की दृष्टि, बल, बुद्धि, शरीर इन विषयों की भेंटही हो लेती है। परंतु आश्चर्य यह है कि अपने कुकर्म का फल देखकर भी न तो यह (रोगी) आप ही इन महापापों से आगे को बचने के लिये घृणा करते हैं न इनको देखकर और मनुष्य भी बुरा समझते हैं सो हे आयुर्वेद के ज्ञाता! मुझ पर कृपा करके कहिये इस अनर्थ का कारण क्या है।।९-१३।।

प्रश्नमेतादृशं श्रुत्वा सद्गुरुः शिष्यवत्सलः ।।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमना उवाच कृपया तदा ।।१४।।

गुरु उवाच

धन्य तात त्वया चाद्य प्रश्न एतादृशः कृतः ।।
विद्याबलं समासाद्य दीर्घायुं प्राप्स्यसि भृशम् ।।१५।।
कारणं यत्त्वया पृष्टं लोकानुग्रहकांक्षया ।।
तदहं संप्रवक्ष्यामि श्रूयतां शिष्यसत्तम ।।१६।।

इस प्रश्न को सुनकर शिष्य के प्यारे सद्गुरु बड़े प्रसन्न हुए मुख की

कांति उज्ज्वल हो उठी मन में आनंद हुवा फिर कृपाकरके शिष्य को कहने लगे कि हे पुत्र! तुमको धन्य है तुमने बहुत ही अच्छा प्रश्न किया है। तुम विद्याबलसंपन्न होकर दीर्घायु होगे। सांसारिक मनुष्यों पर कृपा करने की इच्छा से इस समय की कुकर्मजनित अवस्था का जो कारण पूछा है वह सुनाता हूं, सो हे शिष्य श्रेष्ठ! सावधान होकर सुनो।।१४-१६।।

सर्वदेवमयो राजा नेता लोकस्य दर्शितम् ।।
तस्मिन्धर्मरते लोके प्रजा धर्मपरायणा ।।१७।।
राज्ञि पापरते नित्यं प्रजा पापरता भवेत् ।।
यत्र राजा स्वार्थपरो प्रजापीडनतत्परः ।।१८।।
तत्र प्रजा भवेत्सर्वा शिश्नोदरपरायणा ।।
जातिधर्मो न तत्रास्ति कुलधर्मो न विद्यते ।।१९।।
पितरौ च तदा पुत्रानज्ञानात्पालयंति हि ।।
स्वधर्मान्नाध्यापयंति यतो मूर्खाः स्वयं हिते ।।२०।।
द्विजाश्च नित्यं ससुता गच्छंति नर्तनादिषु ।।
बालोपि पितरं पश्यन् वेश्यया सह मोदते ।।२१।।
अभ्यासं पितृजं प्राप्य तस्मिन्नेव रतः सदा ।।
मद्यादीन् विषयान् प्राप्य हतधर्मपराक्रमः ।।२२।।
स्वधर्मं नैव जानाति यतः शिक्षा न विद्यते ।।
नानादुःखान्यपि पश्यन् नेच्छंति ते निवर्तितुम् ।।२३।।
एवं रुजार्दिता एते न लभंते प्रतिक्रियाम् ।।
राजा च जनकश्चैव कारणानि इमे स्वयम् ।।२४।।

शास्त्रों में लिखा है कि परमात्मा ने सब देवताओं की शक्तियों से राजा बनाया है। इसीलिये राजा संसार का नेता होता है। यदि यह

राजा धर्मात्मा हो तो सब प्रजा भी धर्मपरायण होती है। यदि राजा पाप में लीन हो तो प्रजा भी वैसी ही हो जाती है। जिस जगह राजा स्वार्थ पर होकर प्रजा को पीडित करनेवाला होता है उस राजा की प्रजा तमाम शिश्नोदरपरायण हो जाती है।जातिका व कुलका धर्म तथा वर्णव्यवस्था नष्ट हो जाती है। उस समय माता पिता अपनी संतान के उचित संस्कार न कराकर अज्ञान से पालन करते हैं और अपनी जाति के अनुकूल धर्म की शिक्षा नहीं देते क्योंकि वह विचारे स्वयं ही धर्म के विषय में मूर्ख होते हैं। फिर वर्णोचित शिक्षा न होने से ब्राह्मण क्षत्री वैश्य भी अपने पुत्रों को गोद में लेकर वेश्या के नाच में बैठकर वेश्याओं के अनुचित हास्य करते हैं। बालक भी अपने पिता को वेश्या से हास्य करते देखकर स्वयं उस काम में प्रवृत्त होते हैं। अपने पिता से प्राप्त हुए अभ्यास में ही रत रहते हैं फिर जवान होने पर मद्य पीकर वेश्यागमन आदि कुकर्म को अपना मुख्य कर्तव्य मानने लगते हैं। अपने धर्म पराक्रम आदि को उसी में नष्ट कर डालते हैं क्योंकि इन विचारों को धर्म की शिक्षा ही नहीं दी गई। इसलिये यह अपने धर्म को जानते ही नहीं, अपने कुकर्म से अनेक दुःख भोगते हुए भी वह उनसे हटना नहीं जानते। सो हे शिष्यसत्तम! संसार में इस अनर्थ का कारण एक तो राजा, दूसरा माता पिता, तीसरे यह विचारे स्वयं आप ही हैं।।१७-२४।।

यज्ञो वै ब्रह्मचर्यं हि यतः पुरुषार्थसाधनः ।।
ब्रह्मचर्यप्रभावेण नरः प्राप्नोति गौरवम् ।।२५।।
ब्रह्मचर्यं शरीरस्य साधनं परमं मतम् ।।
ब्रह्मचर्यविहीनानां जीवनं हि निरर्थकम् ।।२६।।

हे तात! ब्रह्मचर्य ही परम यज्ञ है क्योंकि ब्रह्मचर्य के बिना मनुष्य किसी पुरुषार्थ का साधन नहीं कर सकता। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से मनुष्य

बड़ाई को प्राप्त हो सकता है। ब्रह्मचर्य ही शरीर का परम साधन है। ब्रह्मचर्य के बिना मनुष्य का जीवन ही निरर्थक है।।२५।।२६।।

शिष्य उवाच

ब्रह्मचर्यविहीनानां स्वेच्छया च विहारिणाम् ।।
के रोगा विघ्नकर्तारः कां गतिं प्राप्नुवंति ते ।।२७।।

शिष्य बोले–हे गुरो! जो मनुष्य अपनी इच्छानुसार विहार करके ब्रह्मचर्य को खो बैठे उनकी शरीरयात्रा में विघ्न डालनेवाले कौन कौन से रोग होते हैं और उन ब्रह्मचर्यविहीन पुरुषों की क्या गति होती है।।२७।।

गुरुरुवाच

पंचविंशतिपर्यंतं विंशतिं तु विशेषतः ।।
ब्रह्मचर्यं न चरति ज्ञात्वा वाऽज्ञानतः पुमान् ।।२८।।
गतिं तस्य प्रवक्ष्यामि लोकद्वयभयावहाम् ।।
ब्रह्मचर्यविहीनत्वाद्रोगग्रस्तकलेवरः ।।२९।।
इहाऽऽमुष्मिककार्येषु ह्यसमर्थतनुर्भवेत् ।।
मेहक्लीबादिभी रोगैर्दुःखितो विमनाः सदा ।।३०।।

गुरु कहने लगे हे तात! पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये। और बीस वर्ष तक तो अवश्य ही ब्रह्मचारी रहना चाहिये। यदि इस प्रथमावस्था में मनुष्य ज्ञान से अथवा अज्ञान से ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करते, उनकी गति को इस लोक और परलोक में भयकारक है उसका कथन करता हूं। ब्रह्मचर्य के न होने से उन मनुष्यों का शरीर रोगों से ग्रसा हुआ होता है और इस लोक और परलोक के सब कामों में असमर्थ होते हैं। प्रमेह और नपुंसक आदि रोगों से दु:खित होकर मन में सदा दु:खित ही रहते हैं।।२८-३०।।

शिष्य उवाच

क्लीबत्वं कतिधा नृणां दुःसहं दुःखदायकम् ॥
कः कारणैर्भवति तद्वद नो भिषजां वर ॥३१॥

शिष्य कहने लगे कि हे गुरो! मनुष्यों को दुःसह दुःख के देनेवाली नपुंसकता कितने प्रकार की है और किन किन कारणों से यह बीमारी होती है। हे वैद्यों में श्रेष्ठ! कृपा करके मेरे पास कथन करो॥३१॥

नपुंसकाधिकारः

क्लीबः स्यात्सुरताशक्तस्तद्भावः क्लैब्यमुच्यते ॥
तच्च सप्तविधं प्रोक्तं निदानं तस्य कथ्यते ॥३२॥

जो मनुष्य स्त्री से मैथुन करने में इच्छा तो करे परंतु इन्द्रिय की कमजोरी से मैथुन न कर सके उसको क्लैब्य कहते हैं। वह क्लैब्य (नपुंसकता) सात प्रकार की होती है। उसका निदान कहते हैं॥३२॥

निदान

तैस्तैर्भावैरहृद्यैस्तु रिरंसोर्मनसि क्षते ॥
ध्वजः पतत्यतो नृणां क्लैब्यं समुपजायते ॥३३॥

पुरुष के हृदय को अप्रिय (जिनसे नफरत हो) ऐसे भय शोक क्रोधादिकों से चित्त दुःखित होने से लिंग में शिथिलता होवे और मैथुन की इच्छा न हो उसको नपुंसक कहते हैं॥३३॥

१ मानसक्लैब्य

द्वेष्यस्त्रीसंप्रयोगाच्च क्लैब्यं तन्मानसं स्मृतम् ॥३४॥

जिस पुरुष को मैथुनविषयक वार्ता बुरी लगे और स्त्रीरमण से द्वेष हो उसको मानसक्लीब कहते हैं॥३४॥

२ पित्तजक्लीबता

कटुकाम्लैः सलवणैरतिमात्रोपसेवितैः ॥
पित्ताच्छुक्रक्षयो दृष्टः क्लैब्यं तस्मात्प्रजायते ॥३५॥

मिरच खटाई नमक आदि पित्तकर्ता पदार्थों का अत्यंत सेवन करने से पित्त बढ़कर वीर्य को बिगाड़ देता है उससे वीर्य क्षीण होकर नपुंसकता प्राप्त होती है (यह दूसरी नपुंसकता है)॥३५॥

३ शुक्रक्षयजनपुंसकता

अतिव्यवायशीली यो न च वाजीक्रियारतः ॥
ध्वजभंगमवाप्नोति स शुक्रक्षयहेतुतः ॥३६॥

जो मनुष्य मैथुन तो अधिक करे और वीर्य बढ़ानेवाली वाजीकरण औषधि का सेवन न करे उसके वीर्य के क्षीण होने से इन्द्रिय शिथिल हो जाती है। उसको शुक्रक्षयज्ञ नपुंसक कहते हैं॥३६॥

४ चतुर्थनपुंसकता

लिंगवृद्धिकरान्योगान् सेवते यः प्रमादतः ॥
महता मेढ्रयोगेन चतुर्थीं क्लीबतां व्रजेत ॥३७॥

जो मनुष्य प्रमादसे अज्ञानवश लिंग के बढ़ानेवाली औषधिका उपयोग करते हैं उससे लिंग बड़ा होनेके कारण चौथी क्लीबता होती है ॥३७॥

पंचम नपुंसकता

पंचमी क्लीबता ज्ञेया शिराच्छेदादिकारणात् ॥३८॥

पांचवीं नपुंसकता वीर्यवाही नस के कटने से और दारुण प्रमेहादिकों से भी होती है॥३८॥

षष्ठ नपुंसकता

बलिनः क्षुब्धमनसो निरोधाद्ब्रह्मचर्यतः ॥
षष्ठं क्लैब्यं स्मृतं तत्तु वीर्यस्तंभनिमित्तकम् ॥३९॥

यदि बलवान् मनुष्य खिन्न मन होकर ब्रह्मचर्य से वीर्य रोक लेवे व वीर्यस्तम्भ निमित्तक छठी क्लीबता है॥३९॥

सप्तम नपुंसकता

जन्मप्रभृति यत्क्लैब्यं सहजं तद्धि सप्तमम् ॥४०॥

जो पुरुष जन्म से ही नपुंसक हो उसको सहज नपुंसक कहते हैं॥४०॥

नपुंसकता के अन्य कारण

बीजध्वजोपघाताभ्यां जरया शुक्रसंक्षयात् ॥
वैक्लव्यसंभवस्तस्य सामान्यं शृणु लक्षणम् ॥४१॥
संकल्पप्रवणो नित्यं प्रियां वश्यामथापि वा ॥
न याति लिंगशैथिल्यात्कदाचिद्याति वा यदि ॥४२॥
श्वासार्तः खिन्नगात्रांशो मोघसंकल्पचेष्टितः ॥
म्लानशिश्नश्च निर्बीजः स्यादेतत्क्लैब्यलक्षणम् ॥
सामान्यत्वाच्च क्लैब्यानां लक्षणं समुदाहृतम् ॥४३॥

वीर्य तथा लिंग में खराबी होने से और बुढ़ापे के कारण शुक्र के क्षय हो जाने से जो नपुंसकता होती है, हे शिष्यसत्तम! उसके लक्षण सुनो नपुंसकता के सामान्य लक्षण यह हैं कि रमण करने का विचार तो नित्य करे परंतु लिंग की शिथिलता के सबबसे अपनी विवाहिता स्त्री से भी गमन न कर सके। कदाचित् करे भी तो श्वास हो देह कंधों में पसीना आवे और इस विचारेका सब संकल्प निष्फल होवे लिंग मुर्झाया हुवा और वीर्यरहित हो सामान्यता से नपुंसकों के यह लक्षण हैं॥४१-४३॥

श्रूयतां तन्मना भूत्वा विस्तरेण प्रवक्ष्यते ॥
बीजोपघातध्वजभंगजराक्षयसमुद्भवान् ॥४४॥

हे शिष्य! सावधान होकर सुनो बीजोपघात, ध्वजभंग, जरासंभव और क्षयज नपुंसकों के विस्तारपूर्वक लक्षण कथन करता हूं।।४४।।

बीजोपघात के लक्षण और निदान

शीतरूक्षाम्लसंक्लिष्टविरुद्धाजीर्णभोजनात् ।।
शोकचिंताभयत्रासात्स्त्रीणां चात्यर्थसेवनात् ।।४५।।
वातादीनामोजसश्च तथैवानशनाच्छ्रमात् ।।
नारीणामनभिज्ञत्वात्पंचकर्मापचारतः ।।४६।।
बीजोपघातो भवति पांडुवर्णः सुदुर्बलः ।।
अल्पप्रजोल्पहर्षश्च प्रमदासु भवेन्नरः ।।४७।।

शीतल, रूखा, खट्टा, कठोर तथा विरुद्ध भोजन करने से और अजीर्ण में भोजन करने से शोक, चिंता, भय, अति मैथुन से तथा अभिघात और अविश्वास से रसादि धातुओं की क्षीणता से भोजन न करने से निर्जलव्रत करने से अति परिश्रम से स्त्रियों पर प्यार न होने से वमन विरेचनादि पंचकर्म के बिगड़ने से मनुष्यों का वीर्य बिगड़ता है। फिर उस मनुष्य के यह लक्षण होते हैं। देह में पीलापन, शरीर दुबला होना, संतान का अल्पायु होना और कम होना या न होना, स्त्रियों में स्नेह न होना श्वासादि होना बीजोपघात नपुंसक के लक्षण हैं।।४५-४७।।

ध्वजभंग नपुंसकता

ध्वजभंगस्य चोत्पत्तिलक्षणं शृणु विस्तरात् ।।
अत्यम्ललवणक्षारावरुद्धाजीर्णभोजनात् ।।४८।।
अत्यंबुपानाद्विषमपिष्टान्नगुरुभोजनात् ।।
दधिक्षीरानूपमांससेवनादतिकर्षणात् ।।४९।।

कन्यायां चैव गमनादयोनिगमनादपि ॥
दीर्घरोम्णीं चिरोत्सृष्टां तथैव च रजस्वलाम् ॥५०॥
दुर्गंधां दुष्टयोनिं च तथैव च परिश्रुताम् ॥
नरस्य प्रमदां मोहादतिहर्षात्प्रगच्छतः ॥५१॥
चतुष्पदाभिगमनाच्छेफसश्चाभिघातततः ॥
अधावनाद्वा मेढ्रस्य शस्त्रदंतनखक्षतात् ॥५२॥
काष्ठप्रहारनिश्शेषशूकानां चातिसेवनात् ॥
रेतसश्च प्रतीघाताद्ध्वजभंगः प्रवर्त्तते ॥५३॥

अत्यंत खटाई अत्यंत नमक और तीक्ष्णखार विरुद्ध भोजन (दूध मछली आदि) कच्चा अन्न तथा विना भूख भोजन करने से,बहुत जल पीने से,विषम अन्न पिष्ट भारी पदार्थ खाने से,दधि दूध अनूप संचारी जीवों के मांस खाने से,अत्यंत कमजोरी से,१२ वर्ष से कम उमरवाली स्त्रीगमन से, अयोनि (गुदमैथुन वा हस्तमैथुन) मैथुन से, जिसकी बड़े कड़े बालयुक्त योनि हो जो देर में स्खलित हो रजस्वला, दुर्गंधयुक्त योनिवाली और जिसकी गरमी या सोमरोग हो अथवा प्रदर आदि से दूषित गीली योनि हो ऐसी स्त्रियों से मैथुन करने से, मूर्खता से मैथुन करने से, अथवा चौपाये जानवर से मैथुन करने से, लिंग में चोट लगने से लिंग को न धोने से अथवा छुरी आदि शस्त्र के घाव से लकड़ी के लगने से और कामशास्त्रोक्त शूक प्रयोग से,वीर्य के नष्ट होने से ध्वजभंग (लिंग का सुस्त होकर गिर जाना) होता है॥४८-५३॥

श्वयथुर्वेदना मेढ्रे रागश्चैवोपलक्ष्यते ॥
स्फोटास्तीव्राश्च जायते लिंगपाको भवत्यपि ॥५४॥
मांसवृद्धिर्भवेच्चापि व्रणाः क्षिप्रं भवत्यपि ॥
पुलकोदकसकाशः स्रावः श्यावारुणप्रभः ॥५५॥

वलयीकुरुते वापि कठिनं च परिग्रहम् ॥
ज्वरस्तृष्णा भ्रमो मूर्छा छर्दिश्चास्योपजायते ॥५६॥
रक्तं कृष्णं स्रवेच्चापि नीलमाविललोहितम् ॥
अग्निनैव च दग्धस्य तीव्रो दाहः सवेदनः ॥५७॥
बस्तौ वृषणयोर्वापि सीवन्यां वंक्षणेषु च ॥
कदाचित्पिच्छिलो वापि पाण्डुस्रावश्च जायते ॥५८॥
श्वयथुश्च भवेन्मंदस्तिमितोल्पपरिस्रवः ॥
चिरात्स पाकं व्रजति शीघ्रं वाथ प्रपद्यते ॥५९॥
जायंते कृमयश्चापि क्लिद्यंते पूतिगंधि च ॥
प्रशीर्यंते मणिश्चास्य मेढ्रमुष्कावथापि च ॥
ध्वजभंगकृत्तं क्लैब्यं कथितं शिष्यसत्तम ॥६०॥

लिंग का सूज जाना, उसमें पीड़ा होना लाल हो जाना, घोर फोड़े होवें लिंग पक जावे, लिंग में मांस का बढ़ना तत्काल घाव होना उसमें से काले लाल या धोवन के रंग का स्राव होना तथा लिंग में गोल चूडीसी आटे से कठोर जड़वाले होना उस मनुष्य को इस रोग से पीडित होने के कारण ज्वर, तृषा, मूर्च्छा, वमन आदि विकार होवें लिंग में से लाल काला स्राव हो अग्निसे जलने की सी दाह हो,बस्ती, वृषण, सीवन, वंक्षण इनमें दाहयुक्त दर्द होवे। कभी इनमें से गाढ़ा पीला स्राव हो, कभी इन्हीं स्थानों में मन्द सूजन और थोड़ा स्राव हो, कभी देर में कभी जल्दी पक जावे उसमें कृमि पड़ जावें सदैव गीला रहै और दुर्गन्ध आवे और सुपारी गलकर गिर जावे अथवा लिंग पोते दोनों गिर जावें। हे शिष्यसत्तम! यह ध्वजभंग के महाउपद्रव हैं।।५४-६०।।

जरासंभवनपुंसक के कारण और लक्षण

जघन्यमध्यप्रवर वयस्त्रिविधमुच्यते ॥

अथ च प्रवरे शुक्रं प्रायशः क्षीयते नृणाम् ।।६१।।
रसादीनां संक्षयाच्च तथैवावृष्यसेवनात् ।।
बलवर्णेंद्रियाणां च क्रमेणैव परिक्षयात् ।।६२।।
परिक्षयादायुषश्चाप्यनाहाराच्छ्रमात्क्लमात् ।।
जरासंभवजं क्लैब्यमित्येतैर्हेतुभिर्नृणाम् ।।६३।।
जायते तेन सोत्यर्थं क्षीणधातुः सुदुर्बलः ।।
विवर्णो विह्वलो दीनः क्षिप्रं व्याधिमथाश्नुते ।।६४।।

बुढ़ापे से हुए नपुंसक के यह लक्षण हैं। अवस्था तीन प्रकार की है। अधम मध्यम उत्तम, सो वृद्ध अवस्था में मनुष्यों का वीर्य क्षीण होता है उसकां कारण यह है कि रसादिकों का क्षय होने से विना वृष्यपदार्थों के सेवन किये मैथुन करने से क्रम से बल वर्ण इंद्रियों के क्षीण होने से भोजन न करने से परिश्रम करने से इन कारणों से बुढ़ापे का नपुंसकत्व होता है। फिर उस बुढ़ापे में मनुष्य अत्यंत क्षीण दुर्बल हो जातां है देह का वर्ण पलट जाता है विह्वल और दीन हो जाता है इसको रोग शीघ्र ही घेर लेते हैं यह जरासंभव नपुंसक के लक्षण हैं।।६१-६४।।

क्षयजनपुंसक के लक्षण

अतिप्रचिंतनाच्चैव शोकात्क्रोधाद्भयादपि ।।
ईर्ष्योत्कंठात्तथोद्वेगात्समाविशतिको नरः ।।६५।।
कृशो वा सेवते रूक्षमन्नपानमथौषधम् ।।
दुर्बलप्रकृतिश्चैव निराहारो भवेद्यदि ।।६६।।
अथाल्पभोजनाच्चापि हृदये यो व्यवस्थितः ।।
रसः प्रधानधातुर्हि क्षीयेताशु नरस्ततः ।।६७।।

रक्तादयश्च शीर्यंते धातवस्तस्य देहिनः ॥
शुक्रावसानास्तेभ्यो हि शुक्रं धाम परं मतम् ॥६८॥
चेतसो वातिहर्षेण व्यवायं सेवते तु यः ॥
शुक्रं तु क्षीयते तस्य ततः प्राप्नोति संक्षयम् ॥६९॥
घोरां व्याधिमवाप्नोति मरणं वा समृच्छति ॥
शुक्रं तस्माद्विशेषेण रक्ष्यमारोग्यमिच्छता ॥७०॥

अतिचिंता, शोक, क्रोध, भय, ईर्षा, उत्कंठा, उद्वेग इनके अत्यंत करने से बीस वर्ष का मनुष्य भी कृश होकर रुक्ष अन्न पान औषधि का सेवन करे और दुर्बल होकर निराहार रहे अथवा बहुत थोड़ा भोजन करे तो ऐसे करने से हृदयस्थ प्रधान धातु क्षीण हो जाता है जिससे यह मनुष्य शीघ्र क्षीण होकर रुधिर से वीर्य पर्यंत सब धातु क्षीण हो जाते हैं। अथवा प्रसन्न चित्त से जो अन्धाधुन्दी अधिक मैथुन करता है उसका शुक्र क्षीण हो जाता है ऐसा होने से मनुष्य महाभयंकर व्याधि अथवा मृत्यु को भी प्राप्त होता है। इसलिये आरोग्यता की इच्छावाले पुरुष को शुक्र की अवश्य रक्षा करनी चाहिये॥६५-७०॥

कुकर्मजआधुनिकनपुंसकता

एतन्निदानलिंगाभ्यामुक्तं क्लैब्यं चतुर्विधम् ॥
समयेस्मिन्प्रमादाच्च मद्यवेश्याप्रभावतः ॥७१॥
ब्रह्मचर्यविहीनत्वादयोनिमैथुनात्तथा ॥
हतशुक्रहतोत्साहाः हतबुद्धिपराक्रमाः ॥७२॥
अप्रजाल्पप्रजा वा च म्लानध्वजयुताथ वै ॥
समर्था मनने चैवासमर्थाः पत्निरंजने ॥७३॥

हे पुत्र! इस प्रकार निदान लक्षण से चार प्रकार की नपुंसकता यह कही है। परन्तु हे शिष्य! इस समय अधिकतर प्रमादवश मद्य पीकर

वेश्यागमन करने से, छोटी उमर में ब्रह्मचर्य के नष्ट होने से हस्तमैथुन तथा गुदमैथुन से मनुष्यों के वीर्य और बुद्धि तथा पराक्रम यह सब नष्ट हो जाते हैं फिर या तो इनके संतान होती ही नहीं या हो भी तो गर्भपात या छोटी उमर में ही मृत्यु को प्राप्त हो। और यह मनुष्य इन्द्रिय की शिथिलता के सबब मन में तो स्त्रीविषय का विचार करे परन्तु स्त्री के समीप जाकर लज्जित होकर कुछ न कर सके।।७१-७३।।

अन्यमत से नपुंसकनिदान

रूक्षान्नशाकाद्यशनाच्चकिंचित्प्रभूतरूक्षाम्लनिषेवणाच्च ।। बीजान्नजोवैंकृतिजन्यदोषादोजक्षयःपुंस्त्वाविनाशहेतुः।।७४।। रीहार्वाहदमाबीजः ओजस्तेजस्त्वसंकरःाशुद्धशरीरिणां तात कांतिकामबलास्पदम्।।७५।।

रूक्ष अन्न और रूक्ष शाक आदिके सेवन से तथा अत्यंत खार (निमक) खटाई आदि के खाने से दोष कुपित होकर मनुष्य के वीर्य व रुधिर को बिगाड़ देते हैं जिससे इसका ओज (शरीर की सत्ता) क्षीण हो जाता है जब ओज क्षय हुवा तो पुरुषार्थ भी नष्ट हो जाता है। सो हे तात! उस पुरुषार्थ के प्रधान कारण अन्यमत से चार माने हैं जैसे १ रीह अर्थात् कामोत्पादकवायु और २ अर्वा है अर्थात् चार प्रकार की रूह, ३ दम अर्थात् रुधिर ४ बीज अर्थात् वीर्य इन चारों के ओज का शुद्ध तेज शुद्ध शरीरियों के कांति बल और काम का प्रकाशक है।।७४।।७५।।

बलोत्साहौ मनस्थैर्यं वैशद्यं प्रतिभा धियः ।।
वर्णप्रसादक्षुद्वृद्धिर्दीपनं पुष्पधन्विनः ।।७६।।
ओजसः स्युश्चनैरुज्यादोजोनिर्दोषताबलात् ।।

गुणाः भवेयुः प्रागुक्ता दोषास्तन्नाशजाः स्मृताः ।।७७।।
ओजः क्षीणाद्बलं क्षीणं स्मरः क्षीणः सुखापहः ।।
रिरंसोरपि पुंसः स्याद्ध्वजपातश्चिरं पुनः ।।७८।।
यावनीयमतं तात माथुरेण प्रकाशितम् ।।
वाग्भेदस्य हि भेदोस्ति कथितं विस्तरात्पुरा ।।७९।।

बल उत्साह मन की स्थिरता विशदपना बुद्धि का (फैलना) देह के वर्ष का उत्तम होना क्षुधा का बढ़ना कामदेव की चैतन्यता यह ओज के गुण हैं और बलवान् होने से बलवाले होते हैं उस ओज के नाश होने से बल उत्साह आदि का नाश होता है तब बल घटता है और बल घटने से कामेच्छा क्षीण होती है उस कामेच्छा के क्षीण होने से मैथुन में आनन्द नहीं आता इसी सबबसे मैथुन करते वक्त इंद्रिय ढीली पड़ जाती है। हे पुत्र! मथुरानिवासी चौवेजी ने युनानी ग्रंथों से निकालकर यह मत एक पुस्तक में लिखा है परंतु मैं तुमको पहिले विस्तारपूर्वक सुना चुका हूं आयुर्वेद से ही निकालकर किसी ने कुछ किसीने कुछ लिखा परन्तु इसमें तो केवल वाणी का ही भेदमात्र है यथार्थ में विस्तार से आदि आयुर्वेद से बढकर किसी ने कुछ नहीं किया।।७६-७९।।

सुश्रुतोक्त अन्य नपुंसक

मातृपितृजदोषैर्हि ये प्रोक्ता वै नपुंसकाः ।।
तानहं संप्रवक्ष्यामि शृणु विस्तरतस्तु तान् ।।८०।।

माता पिता के दोषों से जो नपुंसक होते हैं अब मैं उनका विस्तार से कथन करता हूं हे पुत्र! सावधान होकर सुनो।।८०।।

पित्रोरत्यल्पवीर्यत्वादासेक्यपुरुषो भवेत् ।।
स शुक्रं प्राश्य लभते ध्वजोच्छ्रायमसंशयम् ।।८१।।

यः पूतियोनौ जायेत स सौगंधिकसंज्ञकः ॥
स योनिशेफसो गंधमाघ्राय लभते बलम् ॥८२॥
स्वे गुदेऽब्रह्मचर्याद्यः स्त्रीषु पुंवत्प्रवर्तते ॥
कुंभिकः स तु विज्ञेय ईर्ष्यकं शृणु चापरम् ॥८३॥
दृष्ट्वा व्यवायमन्येषां व्यवाये यः प्रवर्तते ॥
ईर्ष्यकः स तु विज्ञेयो दृग्योनिरयमीरितः ॥८४॥
यो भार्यायामृतौ मोहादंगनेव प्रवर्तते ॥
तत्र स्त्रीचेष्टिताकारो जायते खंडसंज्ञकः ॥८५॥
ऋतौ पुरुषवद्वापि प्रवर्तेतांगना यदि ॥
तत्र कन्या यदि भवेत्सा भवेन्नरचेष्टिता ॥८६॥

१ पिता के अत्यंत अल्पवीर्य से जो गर्भ रहता है उससे आसेक्य नपुंसक पैदा होता है वह जब अन्य पुरुष के वीर्य को पीवे तो उसका लिंगोत्थान होता है उसको मुखयोनि भी कहते हैं। २ जो बालक दुर्गंधित योनि से प्रगट हुवा उसकी सौगंधिक संज्ञा है इसको लिंग व योनि के सूंघने से चैतन्यता होती है इसको नासायोनि भी कहते हैं। ३ जो मनुष्य स्वयं गुदभंजन करावे तब स्त्रीगमन की चैतन्यता हो इसको कुंभिक और गुदयोनि भी कहते है। ४ दूसरे को मैथुन करते देखकर फिर स्वयं मैथुन में प्रवृत्त हो इसको ईर्ष्यक और दृग्योनि भी कहते हैं। ५ जो मनुष्य ऋतु से शुद्ध स्त्री से स्त्री वन्मैथुन करे अर्थात् आप नीचे हो और स्त्री ऊपर पुरुषवत् हो यदि उस समय गर्भ रह जावे तो पुत्र हो तो स्त्री की सी चेष्टावाला हो उसको खंड और कन्या हो तो पुरुष की चेष्टावाली हो इनको नारीषंढ कहते हैं।।८१-८६।।

आसेक्यश्च सुगंधी च कुंभिकश्चेर्ष्यकस्तथा ॥
सरेतसस्त्वमी ज्ञेया अशुक्रः षंढसंज्ञकः ॥८७॥

१ आसेक्य २ सुगंधी ३ कुंभिक ४ ईर्ष्यक यह चार तो वीर्ययुक्त होते हैं और षण्ढ नपुंसक वीर्यरहित होता है।।८७।।

अनया विप्रकृत्या तु तेषां शुक्रवहा शिरा ।।
हर्षात्स्फुटत्वमाप्नोति ध्वजोच्छ्रायस्ततो भवेत् ।।८८।।

इस प्रकार इन आसेक्यादि नपुंसकों की विरुद्ध चेष्टा से शुक्रवाही नसें हर्ष से फूल जाती हैं इसीसे उनको चैतन्यता होती है।।८८।।

नपुंसकों में साध्यासाध्यता

केचित्क्लैब्ये त्वसाध्ये द्वे ध्वजभंगक्षयोद्भवे ।।
वदंति शेफसच्छेदाद्वृषणोत्पाटनेन वा ।।८९।।

कोई आचार्य ध्वजभंग और क्षयज को असाध्य मानते हैं कोई कहते हैं वीर्यवाही नस के कटने से तथा अंडकोश के न रहने से असाध्य होते हैं।।८९।।

मातापित्रोर्बीजदोषादशुभैश्च कृतात्मनः ।।
गर्भस्थस्य यदा दोषा प्राप्य रेतोवहाः शिराः ।।९०।।
शोषयंत्याशु तन्नाशाद्रेतश्चाप्युपहन्यते ।।
तत्र संपूर्णसर्वांगः स भवत्यपुमान् पुमान् ।।
एते त्वसाध्या व्याख्याता सन्निपातसमुच्छ्रयात्।।९१।।

माता पिता के वीर्य दोष से और अपने पूर्वजन्म के पाप के प्रभाव से गर्भस्थ दोष वीर्यवाही नसों में प्राप्त होकर उन नसों को सुखा देते हैं तब उन नसों के क्षीण होने से इसका वीर्य भी मारा जाता है फिर उस गर्भ से जो बालक होता है वह सर्वांग सुन्दर होते हुवे भी नपुंसक होता है यह सब नपुंसक तीनों दोषों की आधिक्यता से होते हैं इसलिये असाध्य हैं।।९०।।९१।।

दूषित शुक्र के लक्षण

मिथ्याहारविहाराभ्यामयोनिमैथुनादिभिः ॥
वेगाघातात्क्षयाच्चापि धातूनां सप्तदूषणात् ॥९२॥
दोषाः पृथक् समस्ता वा प्राप्य रेतोवहाः शिराः ॥
शुक्रं संदूषयंत्याशु तद्वक्ष्यामि विभागशः ॥९३॥

अनुचित आहार और अनुचित विहार करने से अयोनि मैथुनादि खराबियों से बड़े वेग से भागने से चोट के लगने से धातुओं की क्षीणता से तथा खराबी से वात पित्त कफ कुपित होकर अलग २ अथवा मिलकर वीर्यवाही नसों में प्राप्त हो वीर्य को दूषित करते हैं सो उनका मैं अलग अलग कथन करता हूं॥९२॥९३॥

दूषित शुक्र के भेद

फेनिलं तनु शुष्कं च विवर्णं पूति पिच्छिलम् ॥
अन्यधातूपसंसृष्टमवसादि तथाष्टमम् ॥९४॥

झागदार, थोड़ा, शुष्क, विवर्ण दुर्गंधित, पिच्छिल रसरक्तादि अन्य धातुयुक्त, और वीर्य के गुणों से रहित यह दूषित शुक्र के आठ भेद हैं॥९४॥

वातदूषित

वातेन फेनिलं शुक्रं कृच्छ्रेणापिच्छिलं तनु ॥
भवत्युपहते शुक्रं न तद्गर्भाय कल्पते ॥९५॥

झागदार, सूखा हुवा कठिनता से निकले, ल्हेसदार और थोड़ा ऐसा वीर्य वायु से दूषित होता है इससे गर्भ नहीं होता॥९५॥

पित्तदूषित

सनीलमथवा पीतमत्युष्णं पूतिगंधि च ॥
दाहलिंगं विनिर्याति शुक्रं पित्तेन दूषितम् ॥९६॥

नीला, पीला, अत्यन्त गरम, सड़ी हुई दुर्गंधयुक्त, निकलते वक्त लिंग में दाह हो ऐसा शुक्र पित्तदूषित होता है॥९६॥

कफदूषित

श्लेष्मणा बद्धमार्गं तु भवत्यत्यर्थपिच्छिलम् ॥९७॥

कफ से दूषित हो तो अत्यंत गाढ़ा कतलेदार होता है॥९७॥

रुधिरयुक्त वीर्य निकलने के कारण

स्त्रियामत्यर्थगमनादभिघातात्क्षयादपि ॥
शुक्रं प्रवर्तते जंतोः प्रायेण रुधिरान्वितम् ॥९८॥

अत्यंत स्त्रीगमन से, चोट लगने से, अत्यन्त क्षीणता से, और वीर्य के क्षय होने से मनुष्य का वीर्य रुधिरयुक्त निकलता है॥९८॥

वीर्य क्षय होने के लक्षण

शुक्रक्षये मेढ्रवृषणवेदनाऽशक्तिर्मैथुने चिराद्वा ॥
प्रसेकः प्रसेके चाल्परक्तशुक्रदर्शनं च ॥९९॥

शुक्र, क्षीण होने से लिंग और वृषणों में वेदना, स्त्रीगमन में अशक्ति, कभी देर से वीर्यपात होना, पात होने में कुछ रक्तता लिये और थोड़ा होना॥९९॥

असाध्यसाध्य

तेषु कुणपग्रंथिपूतिपूयक्षीणरेतसः कृच्छ्रसाध्याः ॥
मूत्रपुरीषरेतसस्त्वसाध्याः शेषाः साध्या इति ॥१००॥

इनमें मुर्दे की गन्धवाला, और ग्रंथियुक्त दुर्गन्ध और राधसदृश और क्षीणवीर्य कष्टसाध्य है। मूत्रपुरीषयुक्त असाध्य है बाकी सब साध्य हैं॥१००॥

शुद्धशुक्र के लक्षण

स्फटिकाभं द्रवं स्निग्धं मधुरं मधुगंधि च ॥
शुक्रमिच्छंति केचित्तु तैलक्षौद्रनिभं तथा ॥१०१॥

जो वीर्य सफेद हो, पतला, चिकना, मीठा हो, तथा मधुकी सी गन्धयुक्त हो तो, शुद्ध वीर्य जानना। कई आचार्य तैल अथवा शहद की समान वीर्य शुद्ध होता है ऐसा मानते हैं।।१०१।।

तरंग की समाप्ति

अतोधिको यदस्ति चेद्वाक्यभेदं विजानीहि ।।
सामान्यतस्तरंगेस्मिन् यथावद्वर्णितं मया ।।१०२।।

इससे अधिक नपुंसकों के निदान के विषय में यदि कहीं कुछ कहा है वह केवल वाक्यभेद ही है और सूक्ष्म स्थूल रीति से जैसा होना चाहिये वैसा इस प्रथम तरंग में वर्णन कर दिया है इसको हे शिष्य! तुम यथोचित समझ लेवो।।१०२।।

इति श्रीवैद्य० पं० रामप्रसादप्रणीतनपुंसकामृतार्णवे नपुंसक-निदानवर्णनं नाम प्रथमस्तरंगः ।।१।।

अथ द्वितीयस्तरङ्गः

शिष्य उवाच

अथ क्लैब्यं चिकित्सां च वाजीकरणमेव च ।।
शुक्रशुद्धकरं चैव विधानं कृपया वद ।।१।।

इस प्रकार नपुंसकोंका निदान सुनने के अनंतर शिष्य बोले,हे नाथ! अब कृपा करके वीर्य के शुद्ध करने की विधि और नपुंसकों की चिकित्सा तथा वाजीकरण विधि को कथन कीजिये।।१।।

गुरुरुवाच

श्रूयतां विधिना तात शुक्रशोधकरं विधिम् ।।
तेष्वाद्याञ्शुक्रदोषांस्त्रीन्स्नेहस्वेदादिभिर्जयेत् ।।
क्रियाविशेषैर्मतिमांस्तथा चोत्तरवस्तिभिः ।।२।।

गुरु बोले हे तात! वीर्य के शुद्ध करने की विधि सुनो-पहले जो दुष्ट वीर्यों का वर्णन कर आये हैं उनमें वायु से दूषित वीर्य में स्नेहपान स्वेदन आदि करावे, पित्तदूषित में विरेचन करावे और कफदूषित में वमन और विरेचन दोनों करावे तथा उत्तर वस्ति आदि करावे।।२।।

पाययेत्तं नरं सर्पिर्भिषक् कुणपरेतसि ।।३।।
धातकीपुष्पखदिरदाडिमार्जुनसाधितम् ।।
पाययेदथवा सर्पिः सालसारादिसाधितम् ।।४।।
ग्रंथिभूते शठीसिद्धं पालाशे वापि भस्मनि ।।
परुषकवटादिभ्यां पूयप्रख्ये तु साधितम् ।।५।।
विट्प्रभे पाययेत्सिद्धं चित्रकोशीरहिंगुभिः ।।
वाजीकरणविधिं तात कर्तव्यं क्षीणरेतसि ।।६।।

जिसके वीर्य में मुर्दे की सी गंध होवे उसको धाय के फूल, दाडिम अर्जुन वृक्ष की छाल, इनसे सिद्ध किया घृत पिलावे अथवा साल सारादिगण से सिद्ध घृत पिलावे। जो ग्रंथियुक्त वीर्य हो तो कचूर से सिद्ध किया घृत पिलावे अथवा पलास की भस्म से सिद्ध किया घृत पिलावे जिसका वीर्य राध सदृश हो उसको फाल से और वटादिगण से सिद्ध किया घृत पिलावे। जिसके वीर्य में विष्ठा की गंध हो उसको चित्रक खस और हींग से सिद्ध किया घृत पिलावे और क्षीणवीर्यवाले को वाजीकरण औषधियों का सेवन करावे।।३-६।।

नपुंसकों की चिकित्सा

अथ चिकित्सितं वक्ष्ये क्लीबानां हितकाम्यया ।।
क्लैब्यानामिह साध्यानां कार्यो हेतुविपर्ययः ।।७।।

इसके उपरांत गुरु बोले अब हम नपुंसकों के कल्याण के लिये चिकित्सा का कथन करते हैं जो साध्य नपुंसक हैं उनकी नपुंसकता के

कारण से उलटा कर्म करे।।७।।

सामान्य चिकित्सा

मुख्यं चिकित्सितं यस्मान्निदानपरिवर्जनम् ।।
क्लैब्योपशांतये कुर्यात्क्षीणक्षतहितं च यत् ।।८।।
वस्तयः क्षीरसर्पींषि वृष्ययोगाश्च ये मताः ।।
रसायनप्रयोगाश्च सर्वानितान्प्रयोजयेत् ।।९।।
समीक्ष्य देहदोषाग्निबलभेषजकालवित् ।।
व्यपैति हेतुजं क्लैब्यं यत्स्याद्धेतुविपर्ययात् ।।१०।।

मुख्य चिकित्सा यह है कि जिस कारण से रोग हुवा हो उसको त्याग देवें फिर जो नुकसान पहुँच चुका हो उसका यत्न करे नपुंसकता की शांति के वास्ते जो क्षीणक्षत में हितकारी औषधि हो उसका उपयोग करे, तथा दूध, घी, पुष्टिकारक पदार्थ, और रसायन इनका उपयोग करे। और जो नपुंसकता के कारण को नष्ट करनेवाले उपयोग हों उनको औषधी और काल के जाननेवाला वैद्य देहदोष और अग्नि का बलाबल देखकर करे।।८-१०।।

विशेष चिकित्सा और बीजोपघात की चिकित्सा

सुस्विन्नस्निग्धगात्रस्य स्नेहयुक्तं विरेचनम् ।।
प्रदद्यान्मतिमान् वैद्यस्ततस्तमनुवासयेत् ।।११।।
पलाशैरंडमुस्ताद्यैः पश्चादास्थापयेत्ततः ।।
वाजीकरणयोगाश्च योज्या बीजोपघातजे ।।१२।।

प्रथम स्वेदन कराके स्नेहयुक्त विरेचन करावे फिर पलास, एरंड, मोथा इनके क्वाथों से अनुवासन, आस्थापन कराकर वाजीकरण योग सेवन करावे तो बीजोपघातज नपुंसक अच्छा हो जाता है।।११।।१२।।

ध्वजभंग का यत्न

ध्वजभंगकृतं क्लैब्यं ज्ञात्वा तस्याचरेत्क्रियाम् ॥
प्रदेहान्पारिषेकांश्च कुर्याद्वा रक्तमोक्षणम् ॥१३॥
स्नेहपानं च कुर्वीत सस्नेहं वा विशोधनम् ॥
ततोनुवासनं कुर्यादथवास्थापनं पुनः ॥
व्रणवच्च क्रियाः सर्वास्तत्र कुर्याद्विचक्षणः ॥१४॥

ध्वजभंग का पहले निदान द्वारा निश्चय करके फिर चिकित्सा करे लेप या सेचन अथवा नसवेधन करके रुधिर निकाले अथवा घृततैलादि स्नेह पान करावे या स्नेहयुक्त विरेचन करावे। फिर अनुवासनवस्ति अथवा आस्थापनवस्ति कर्म करे तथा इस ध्वजभंग नपुंसक की व्रण के समान विग्लापन पाटन रोपणादि क्रिया क्रमपूर्वक करें।।१३।।१४।।

जरासंभव और क्षयज की चिकित्सा

जरासंभवजे क्लैब्ये क्षयजे चैव कारयेत् ॥
स्नेहस्वेदोपपन्नस्य सस्नेहं शोधनं हितम् ॥
क्षीरसर्पिर्वृष्ययोगाः बस्तयश्चैव यापनाः ॥१६॥
रसायनप्रयोगाश्च तयोर्भेषजमुच्यते ॥
इति विशेषतो ज्ञात्वा वाजीकरणमपिश्शृणु ॥१७॥

वृद्धअवस्था के कारण जो नपुंसक हों अथवा क्षयज नपुंसक हों उनको स्नेहन स्वेदन करके स्नेहयुक्त शोधन करे फिर दूध, घी, वाजीकरणयोग और यापन वस्ती तथा रसायन पदार्थों का सेवन करावे। इस प्रकार नपुंसकों की चिकित्सा क्रम को समझो और हे तात! अब वाजीकरणयोगों को सुनो।।१५-१७।।

अथ वाजीकरणम्

येन नारीषु सामर्थ्यं वाजिवल्लभते नरः ॥
व्रजेच्चाप्यधिकं येन वाजीकरणमेव तत् ॥१८॥
यद्द्रव्यं पुरुषं कुर्याद्वाजीव सुरतक्षमम् ॥
तद्वाजीकरणं ख्यातं मुनिभिर्भिषजां वरैः ॥१९॥

जिस प्रयोग से मनुष्य घोड़े की सदृश और वारवार स्त्रियों से रमण कर सके उसको वाजीकरण कहते हैं। अथवा जो द्रव्यपुरुष को घोड़े की सदृश मैथुनशक्तिवाला बना दे उसको वाजीकरण कहते हैं॥१८॥१९॥

वाजीनामप्रकाशत्वात्तच्च मैथुनसंज्ञकम् ॥
वाजीकरणसंज्ञाभिः पुंस्त्वमेव प्रचक्षते ॥२०॥

वाजी अर्थात् घोड़े का यहां प्रकाश न होने से वाजी शब्द मैथुनसंज्ञक है बस जो पदार्थ मैथुनशक्ति को बढ़ावे वह वाजीकरण है अथवा वाजी नाम प्रकाशक होने से मैथुनसंज्ञक है इसलिये कामशक्ति के वर्द्धक पदार्थ को वाजीकरण कहते हैं॥२०॥

त्रिविध वाजीकरण

शुक्रस्रुतिकरं किंचित् किंचिच्छुक्रविवर्द्धनम् ॥
स्रुतिवृद्धिकरं किंचित् त्रिविधं वृष्यमुच्यते ॥२१॥

वीर्य्र के निकालनेवाली, और वीर्य के बढ़ानेवाली, तथा वीर्य के निकालने और बढ़ानेवाली इस प्रकार वृष्य (वाजीकरण) तीन प्रकार का है॥२१॥

नरो वाजीकरान्योगान्सम्यक्छुद्धो निरामयः ॥
सप्तत्यंतं प्रकुर्वीत वर्षादूर्ध्वं तु षोडशात् ॥२२॥

नचैव षोडशादर्वाक् सप्तत्या परतो न च ॥
आयुष्कामो नरः स्त्रीभिः संयोगं कर्तुमर्हति ॥२३॥
क्षयवृद्धयुपदंशाद्या रोगाश्चातीवदुर्जयाः ॥
अकालमरणं च स्याद्भजतः स्त्रियमन्यथा ॥२४॥

मनुष्य को चाहिये कि पहले भले प्रकार वमन विरेचन से शुद्ध देह होकर सोलह १६वर्ष की अवस्था से ऊपर ७० सत्तर वर्ष की अवस्था पर्यन्त वाजीकरण औषधियों का सेवन करे। आयु की कामनावाले मनुष्य को १६ वर्ष की अवस्था से कम और ७० सत्तर से ऊपर स्त्रीसंग न करना चाहिये जो इस कथनानुसार नहीं चलते उनको क्षय, अंडवृद्धि, उपदंश, प्रमेह आदि बड़े दुर्जय घोर रोग हो जाते हैं बल्कि अकालमृत्यु को भी प्राप्त होते हैं।।२२-२४।।

विलासिनामर्थवत्तां रूपयौवनशालिनाम् ॥
नराणां बहुभार्याणां विधिर्वाजीकरो हितः ॥२५॥
स्थविराणां रिरंसूनां स्त्रीणां वालभ्यमिच्छताम् ॥
योषित्प्रसंगात्क्षीणानां क्लीबानामल्परेतसाम् ॥२६॥
हिता वाजीकरा योगा प्रीत्यपत्यबलप्रदाः ॥
एतेऽपि पुष्टदेहानां सेव्याः कालाद्यपेक्षया ॥२७॥

विलासी, धन रूप यौवनवाला, जिसके अनेक स्त्री हों, जो बूढ़े हो गये हों परन्तु स्त्रीरमण की इच्छा रखते हों, जो स्त्रियों से स्नेह रखते हों, जो स्त्रीरमण से क्षीण हो गये हों, जो नपुंसक तथा अल्पवीर्य हों, इतने पुरुषों का वाजीकरण योग हितकारी, और स्त्रियों में प्रीति के देनेवाले तथा संतान और बल के देनेवाले होते हैं तथा स्वस्थ हृष्टपुष्ट मनुष्यों को भी अपने वीर्य की रक्षा के लिये वाजीकरण पदार्थों का समयानुसार सेवन करना चाहिये।।२५-२७।।

बुढ़ापे के कारण

पंथाः शीतं कदन्नं च वयोवृद्धाश्च योषितः ॥
मनसः प्राप्तिकूल्यं च जरायाः पंच हेतवः ॥२८॥

बहुत रास्ता चलने से अत्यंत शीत सहने से, सड़ाबुसा अन्न खाने से वृद्धा स्त्री से गमन करने से, मन में सदैव शोक रहने से, इन पां कारणों से मनुष्य को शीघ्र बुढ़ापा आता है॥२८॥

वाजीकरण पदार्थ

भोजनानि विचित्राणि पानानि विविधानि च ॥
वाक्छ्रवणाभिरामा च त्वचः स्पर्शसुखावहाः ॥२९॥
यामिनी सेन्दुतिलका कामिनी नवयौवना ॥
गीतं श्रोत्रमनोहारि ताम्बूलं मदिरा स्रजः ॥३०॥
गंधा मनोज्ञा रूपाणि चित्राण्युपवनानि च ॥
मनसश्चाप्रतीघातो वाजीकुर्वन्ति मानवम् ॥३१॥

विचित्र भोजन अनेक उत्तम दूध शर्बत आसव आदि पीने के पदा जो सुनने में प्यारे प्रतीत हों ऐसे वचन, देह को सुखकारक, सुन्द नरमवस्त्र आभूषण, पूर्णचंद्रमा से शोभायमान रात्री, सर्वांग सुं नवयौवना स्त्री, कानों और मन को हरनेवाले सुंदर गीत, पान बीड़ा, मद्य, फूलमाला, सुन्दर सुगन्ध, मन को हरनेवाला सुंदर सुंदर विचित्र बाग बगीचे, मन की इच्छापूर्वक, मन को दु:ख न हो, सब वाजीकर्ता (काम को बढ़ानेवाले) पदार्थ हैं॥२९-३१॥

शतावरीघृतम्

घृतं शतावरीगर्भं क्षीरे दशगुणे पचेत् ॥
शर्करापिप्पलीक्षौद्रयुक्तं तद्वृष्यमुच्यते ॥३२॥

१ सेर गोघृत लेकर उसमें दश १० सेर सतावर का स्वरस और

१० सेर गौ का दूध मिलाके पकावे फिर १० तोले पीपल, १० तोले शहद, २० तोले खांड इन सबको मिलाकर इस घृत को दो तोले नित्य खाकर दूध पीवे तो वीर्य को बढ़ावे और पुष्ट करे॥३२॥

लघुवाजीसर्पिः

कल्केन वाजीगंधाया विपचेद्घृतमुत्तमम् ॥
चतुर्गुणमजाक्षीरं दत्त्वोद्धृत्याथ शीलिते ॥
सितां समां प्रदायाद्याद्बलपुष्टिविवृद्धये ॥३३॥

१ सेर उत्तम गोघृत, असगंध का कल्क १ सेर, बकरी का दूध १ सेर इन सबको मिलाके घृत सिद्ध कर लेवेइसमें बराबरकीमिसरी मिलाकर नित्य सेवन करे तो बल और वीर्य को बढ़ावे॥३३॥

गोधूमादिघृतम्

गोधूमांश्च पलशतं निःक्वाथ्य सलिलाढके ॥
पादावशेषे पूते च द्रव्याणीमानि दापयेत् ॥३४॥
गोधूमं मुंजातफलं माषद्राक्षापरूषकम् ॥
काकोली क्षीरकाकोली जीवंती सशतावरी ॥३५॥
अश्वगंधा सखर्जूरं मधुकं त्र्यूषणं सिता ॥
भल्लातकमात्मगुप्ता समभागानि कारयेत् ॥३६॥
घृतप्रस्थं पचेदेकं क्षीरं दत्त्वा चतुर्गुणम् ॥
मृद्वग्निना च संसिद्धे द्रव्याण्येतानि निक्षिपेत् ॥३७॥
त्वगेला पिप्पली धान्यकर्पूरं नागकेशरम् ॥
यथालाभं विनिक्षिप्य सिताक्षौद्रपलाष्टकम् ॥३८॥
दुग्धेक्षुदंडेनालोड्य विधिवद्विनियोजयेत् ॥
शाल्योदनेन भुंजीत पिबेन्मांसरसेन वा ॥३९॥
केवलस्य पिबेदस्य पलमात्रप्रमाणतः ॥

न तस्य लिंगशैथिल्यं न च शुक्रक्षयं व्रजेत् ॥४०॥
बल्यं परं वातहरं शुक्रसंजननं परम् ॥
मूत्रकृच्छ्रप्रशमनं वृद्धानां चापि शस्यते ॥४१॥
पलद्वयं तदश्नीयाद्दशरात्रमतंद्रितः ॥४२॥
रमते दशरामाभिः पीत्वा चानुपिबेत्पयः ॥
अश्विभ्यां निर्मितं चैतद्गोधूमाद्यं रसायनम् ॥४३॥
जलद्रोणे तु गोधूमक्वाथे तच्छेषमाढकम् ॥
मुंजातकस्य स्थाने तु तद्गुणं तालमुस्तकम् ॥४४॥
कल्कद्रव्यसमं मानं त्वगादेः साहचर्यतः ॥४५॥

सफेद गेहूँ का सत्त्व ५ सेर लेकर बीस सेर जल में पकावे जब ५ से वाकी रहे तो इसको छान लेवे फिर आगे लिखी औषधियों को कूट मिलावे। सफेद गेहूँ, मुंजातकफल, उड़द, दाख, फालसे, काकोली क्षीरकाकोली, जीवंती, शतावरी, असगंध, छुहारे, मुलहठी, सोंठ, मि पीपल, मिसरी मिलावें, कौंच के बीज प्रत्येक ६ मासे, गौ का घी १ से दूध चार सेर, इनको घृतपाकविधि से मन्द आंच से पकावे औ दालचीनी, इलायची, पीपल, धनियां, भीमसेनी कपूर, प्रत्येक मासे बारीक पीसकर पकते पकते में डाल देवे। सिद्धि होने पर छान ले और इससे ३२ तोले शहद और ३२ तोले मिसरी मिलावे फिर इस ईख के डंडे में मथकर दूध में मिलाके पीवे, अथवा शाली चावलों भात से खाय, या मांसरस से पीवे, इसको दो तोले से ८ तोले तक ब के अनुसार खावे यदि यह अकेला पीना हो तो इसकी ४ तोले की मा है। इसके सेवन में लिंग में शिथिलता नहीं होती, वीर्य क्षीणता को प्रा नही होता। यह बल को बढ़ाता है, वातरोगों को शांत करता है। वी को पैदा कर मूत्रकृच्छ्र को दूर करे, बूढ़े पुरुषों के लिये परमोपयोगी

दशरात्रि दूध के साथ सेवन करने से दश स्त्रियों से गमन करे, यह गोधूमादि रसायन अश्विनीकुमार ने कहा है॥३४-३५॥

वानरी गुटिका

बीजानि हिकपिकच्छोः कुडवमितानितुस्वेदयेच्छनकैः ॥ प्रस्थे गोभवदग्धे दुग्धं यावद्भवेद्गाढम् ॥४६॥ त्वग्रहितानि च कृत्वा सूक्ष्मं संपेषयेत्तानि ॥ पिष्टिकायाश्च वटिकाः कृत्वा गव्ये पचेदाज्ये ॥४७॥ द्विगुणितशर्करया ता वटिकाः सपक्वया लेप्या ॥ वटिका माक्षिकमध्ये मज्जनयोगेऽखिलाः स्थाप्याः ॥४८॥ पंचटंकमितास्तास्तु प्रातः सायं च भक्षयेत् ॥ अनेन शीघ्रद्रावीयो यश्च स्यात्पतितो ध्वजः ॥४९॥ सोपि प्राप्नोति सुरते सामर्थ्यमतिवाजिवत् ॥ नानेन सदृशं किंचिद्द्रव्यं वाजीकरं परम् ॥५०॥

एक पाव कौंच के बीज लेकर १ सेर दूध में पकावे, जब दूध गाढ़ा हो जावे तब उतारकर बीजों का छिलका दूर करके उन बीजों की पीठी पीस लेवे फिर इस पीठ की एक एक तोले की टिकिया बनाकर गोघृत में पका लेवे फिर आधा सेर खांड़ की चासनी करके इन टिकियों पर बालूशाही की भांति चढ़ा देवे, फिर इनको शहद में डुबा देवे, इनमें से नित्य नित्य १५ मासे खाकर ऊपर से गर्म दूध पीवे। इसी तरह प्रातः और सायंकाल दोनों वक्त खावे। इसके प्रभाव से जिसका वीर्य शीघ्र निकल जाता और इंद्रिय शिथिल हो उसके सब विकार दूर होने से घोड़े की समान मैथुन करे। इससे बढ़कर दूसरा वाजीकरण योग कोई नहीं है॥४६-५०॥

तिलाश्वगंधाकपिकच्छुमूलैर्विदारिका यष्टिकपिष्टयोगः ॥
आजेनपिष्टःपयसाघृतेन पक्वाभवेच्छष्कुलिकाऽतिवृष्या॥५१॥

काले तिल, असगंध, कौंच के बीज, विदारीकंद, मुलहठी, इन सबको समान भाग लेकर कपड़छान करके, बकरी के दूध में गूंधकर पूड़ी बनाकर बकरी के घी में पका लेवे। इनको मिसरी मिले दूध के संग खावे। इनके खाने से वीर्य पुष्ट हो शरीर में बल आवे॥५१॥

पायस

गवां विरूढवत्सानां सिद्धं पयसि पायसम् ॥
तथा गोधूमचूर्णं च सितामधुघृतान्वितम् ॥
भुक्त्वा हृष्यति जीर्णोपि किं पुनर्यदि यौवने ॥५२॥

जिसका बछड़ा बड़ा हो उस गौ के दूध में कनक का दलिया डालकर खीर बनावे फिर इस खीर में शहद मिसरी मिला के खावे तो बूढ़ा भी काम की इच्छा करने लगे और युवा अवस्था वाले करें तो आश्चर्य ही क्या है॥५२॥

सितादिवृष्य योग

शर्करायास्तुलैका स्यादेका गव्यस्य सर्पिषः ॥
प्रस्थं विदार्याश्चूर्णस्य पिप्पल्याः प्रस्थ एव च॥५३॥
अर्धाढकं तुगाक्षीर्याः क्षौद्रस्याभिनवस्य च ॥
तत्सर्वं मिश्रितं तिष्ठेन्मार्त्तिके घृतभाजने ॥५४॥
मात्रामग्निसमां तस्य प्रातःकाले प्रयोजयेत् ॥
एष वृष्यः परो योगः कंठ्यो बृंहण एव च ॥५५॥

मिसरी ४०० तोले, गौ का शुद्ध घी ६४ तोले, विदारी कंद ६४ तोले, पिप्पली का चूर्ण १२८ तोले, उत्तम शहद १२८ तोले इन सब को मिलाकर उत्तम चिकने मट्टी के बर्तन में रखे, फिर जठराग्नि का

बलाबल विचारकर नित्य प्रातःकाल भक्षण करे। यह योग परमवृष्य (वीर्यवर्द्धक) कंठशोधक और सब रसादिधातुओं को बढ़ानेवाला है।।५३-५५।।

योग्य दूध

गृष्टीनां वृद्धवत्सानां माषपर्णभृतां गवाम् ।।
यत्क्षीरं तत्प्रशंसंति बलकामेषु जंतुषु ।।५६।।

पहलौन व्याई गौ, जिसका बछड़ा बड़ा हो गया हो और उड़दों के पत्ते चरती हो उस गौ का दूध बल और वीर्य के बढ़ाने में परमोपयोगी होता है।।५६।।

रसाला

अर्द्धाढकं च शुचिपर्युषितस्य दध्नः
खंडस्य षोडशपलानि शशिप्रभस्य ।।
सर्पिः पलं मधुपलं मरिचार्द्धकर्षं
शुंठ्यास्तथार्द्धपलमर्द्धपलं चतुर्णाम् ।।५७।।
शुक्ले पटे वरवधूमृदुपाणिघृष्ट
कर्पूरगंधसुरभिर्नवभांडसंस्था ।।
एषा वृकोदरकृता सुरसा रसाला
या स्वादिता भगवता मधुसूदनेन ।।५८।।

गाढ़ा मीठा मलाईदार दही २ सेर, सफेद बूरा १ सेर, घी गौ का १ छटांक, शहद १ छटांक, काली मिरच ६ मासे, इलायची, दालचीनी, नागकेशर छः छः मासे इनको बारीक करके दही में डालकर फिर स्वच्छ सफेद बारीक वस्त्र में स्त्री नरम हाथ से छाने फिर इसको भीमसेनी कपूर की गंध से सुवासित कर मट्टी के नये पात्र में रखे। यह भीमसेन का बनाया रसाला भगवान् मधुसूदन ने भोग लगाया है। यह परम वृष्य है।।५७।।५८।।

अश्वगंधादिघृत

अश्वगंधा प्रस्थमेकं दुग्धं चैवाढकद्वयम् ॥
घृतप्रस्थमितं दद्याच्छनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥५९॥
त्रिकटुकं चतुर्जातं विडंगं जातिपत्रकम् ॥
बला चातिबला चैव श्वदंष्ट्रावृद्धदारुकम् ॥६०॥
पलैकं च प्रदातव्यं लोहं वंगं तथाभ्रकम् ॥
प्रस्थार्द्धं माक्षिकं दद्यात्प्रस्थार्धा शर्करा शुभा ॥६१॥
सर्वमेतद्विनिक्षिप्य स्निग्धे भांडे निधापयेत् ॥
द्वौ कालो भक्षयेन्नित्यं समीक्ष्याग्निबलं यथा ॥६२॥
अर्द्धं वातं हनुस्तंभं संधिवातं कटिग्रहम् ॥
गर्भप्रसवजान्दोषाञ्छुक्रदोषांस्तथैव च ॥६३॥
सर्ववातान्निहन्त्येतद्यथोन्मत्तगजं हरिः ॥
अश्वगंधादिविख्यातं घृतं वाजीकरं परम् ॥६४॥

असगन्ध १ सेर, दूध ८ सेर, शुद्ध गोघृत १ सेर, इनको मन्द अग्नि से धीरे धीरे पकावे और जब घृत पाक पर आवे तब इसमें सोंठ, मिरच पीपल, चतुर्जात, वायविडंग, जावित्री, बला, अतिबला, गोखरु, विधार इन प्रत्येक का चूर्ण चार चार तोले, लोहभस्म, वंगभस्म, अभ्रकभस्म प्रत्येक ४ तोलें, शहद ३२ तोले, उत्तम मिसरी ३२ तोले, इन सबको डालकर घृत को उतार लेवे, फिर चिकने बर्तन में भरकर रख देवे और अग्नि का बलाबल विचारकर दोनों समय इसमें से भक्षण करे। इसके सेवन में अर्दित वात, हनुस्तम्भ, संधिगतवायु, कटिग्रह (कमर का दर्द) यह सब दूर हों और गर्मसम्बन्धी रोग तथा प्रसव के रोग, वीर्य के सब विकार, सब किस्म के वातरोग इन सबको ऐसे जीत लेता है जैसे सिं

मतवाले हाथी को भगा देता है। यह अश्वगन्धादिघृत परमवाजीकरण है॥५९-६४॥

माषादिघृत

माषाणामात्मगुप्तानां बीजानामाढकत्रयम् ॥
जीवकर्षभको मेदे वीरावृद्धी शतावरी ॥६५॥
मधुकं चाश्वगंधा च साधयेत्कुडवोन्मितम् ॥
तमेव स्निग्धघृतप्रस्थे द्रव्याद्दशगुणं पयः ॥६६॥
विदारिणो दशप्रस्थं प्रस्थमिक्षुरकस्य च ॥
दत्त्वा मृद्वग्निना साध्यं सिद्धं सर्पिर्निधापयेत् ॥६७॥
शर्करायास्तु गोक्षीर्य्याः क्षौद्रस्य च पृथक् पृथक् ॥
भागांश्चतुष्पलांश्चात्र पिप्पल्याश्च द्वयं पलम् ॥६८॥
बलपूर्वमतो लीढ्वा ततोन्नमुपयोजयेत् ॥
यदीच्छेदक्षयं शुक्रं शेफसश्चोत्तमं बलम् ॥६९॥

कौंच के बीज ४ सेर, उड़द ४ सेर, जींवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धी, वृद्धी, शतावर, मुलहठी, असगन्ध प्रत्येक १६ तोले लेकर आठगुने पानी में पकावे और जब पकते पकते चौथाई रहे तब उतारकर छान लेवे। फिर इसमें घृत १ सेर, दूध १० सेर, विदारीकंद का स्वरस १० सेर डालकर पकावे। जब पकते पकते घृतमात्र शेष रहे तो इसमें मिसरी, वंशलोचन, शहद, प्रत्येक सोलह तोले, पीपल का चूर्ण ८ तोले मिलाकर चिकने पात्र में रख देवे। इसमें से अग्नि के बलानुसार खाकर ऊपर से मूंग चावल घृत यह इच्छापूर्वक खावे। इसके प्रभाव से वीर्य कभी क्षय नहीं होता। और लिंग में अपूर्व ताकत आ जाती है॥६५-६९॥

महासुगंधितैलम्

कर्पूरागरुचोचपत्रनलिकालाक्षासटीघातकीपुष्पैः
सप्तदलैलवालुसरलैः शैलेयमांसीप्लवैः ।। एलाकुं-
कुमरोचनादमनकैः श्रीवासजातीफलैः कंकोलक्रमु-
कोच्चटामदमुराकांतालवंगामयैः ।।७०।। वालो-
शीरहरेणुकामलयजस्थौणेयचंडानखैर्जातीकोश-
कुलीरपद्मकनतैः स्पृक्कान्वितैः पालिकैः ।।
लाक्षायोजनवल्लिलोध्रसलिलैस्तैलं विपाच्याढकं
तैलाभ्यक्ततनुर्जरन्नपि भवेत्स्त्रीणां परं वल्लभः ।।७१।।
शुक्राढयो द्युतिमाननल्पतनयः षण्ढोपि रत्युत्सुको
वंध्या गर्भवती भवेदपि तथा वृद्धापि सूते सुतम् ।।
कण्डूस्वेदविचर्चिकामलहरं दौर्गंध्यकुष्ठापह-
मश्विभ्यांपरिकीर्तितं बहुगुणंतैलं सुगंधं महत् ।।७२।।

कपूर, अगर, दालचीनी, पत्रज, नलिका, लाख, कचूर, घायके फूल सतवन, एलवालुक, सुगन्धद्रव्य, सरल, छड़, जटामांसी, सुगंधवाला इलायची, केशर, गोरोचन, दोनों प्रकार के मरुवा, श्रीवास, जायफल कंकोल, सुपारी, सफेद, चिरमिटी, कस्तूरी, मुरा, प्रियंगु, लौंग, कूट नेत्रवाला, खस, रेणुका, चन्दन, थुनेर, गठौना, नख, जावित्री काकड़ासिंगी, पद्माख, छड़, स्पृक्का (सुगंधद्रव्य), पालिक, लाख मंजीठ, लोध, प्रत्येक ४ तोले लेकर इनका काढ़ा करे फिर अष्टावशेष रहने पर इस काढ़े को छानकर इसमें ४ सेर शुद्ध तिलतैल मिलाकर मन्द मन्द पकावे। जब पानी जलकर तैलमात्र शेष रहे तो उतारके छान लेवे। इस तैल की मालिश करने से बूढ़ा भी जवान की सदृश स्त्रियों का

प्यारा हो, शुक्रयुक्त, कांतिमान्, बहुत से पुत्रोंवाला हो, नपुंसक भी मैथुनाभिलाषी हो, इस तैल के नित्य सेवन से वंध्या भी गर्भवती हो, वृद्धा स्त्री भी पुत्र जने और देह की खुजली, पसीना, विचर्चिका, मैल, देह की दुर्गंधि, कोढ़, यह सब नष्ट हों। यह अश्विनीकुमार का बनाया महासुगंधि तैल है॥७०-७२॥

चन्दनादितैलम्

चंदनादेर्विधिं तात चंदनं रक्तचंदनम् ॥
पतंगमथ कालीयागरुकृष्णागरूणिच ॥७३॥
देवद्रुमः ससरलः पद्मकं क्रमुकोपि च ॥
कर्पूरो मृगनाभिश्च लताकस्तूरिकापि च ॥७४॥
सिल्हकः कुंकुमं गव्यं सजातीफलमेव च ॥
जातीपत्रं लवंगं च सूक्ष्मैला महती तथा ॥७५॥
कंकोलं फलकं त्वक् च पद्मकं नागकेशरम् ॥
वालकं च तथोशीरं मांसी दारुसितापि च ॥७६॥
मुरा कर्चूरकश्चापि शैलेयं भद्रमुस्तकम् ॥
रेणुकश्च प्रियंगुश्च श्रीवासो गुग्गुलुस्तथा ॥७७॥
लाक्षा नखश्च रालश्च धातकीकुसुमं तथा ॥
ग्रंथिपर्णं च मंजिष्ठा तगरं सिक्थकस्तथा ॥७८॥
एतानि शाणमानानिकल्कीकृत्य शनैः पचेत् ॥
तैलप्रस्थमितं सम्यगेतत्पात्रे शुभे क्षिपेत् ॥७९॥
अनेनाभ्यक्तगात्रस्तु वृद्धोऽशीतिसमोपि यः ॥
सुखी भवति शुक्राढ्यः स्त्रीणामत्यंतवल्लभः ॥८०॥
वंध्यापि लभते गर्भं षण्ढोपि तरुणायते ॥
अपुत्रः पुत्रमाप्नोति जीवेच्च शरदां शतम् ॥८१॥

चंदनादि महातैलं रक्तपित्तं क्षयं ज्वरम् ॥
दाहं प्रस्वेददौर्गंध्यं कुष्ठं कंडूं विनाशयेत् ॥८२॥

हे पुत्र! अब चंदनादि तैल की विधि सुनो। सफेद चन्दन, लाल चंदन, पतंग, हरिचंदन, अगर, काला अगर, देवदार, सरल, पद्माख, सुपारी, कपूर, कस्तूरी, लता कस्तूरी, शिलारस, केशर, गौ का घी, जायफल, जावित्री, लवंग, छोटी इलायची, वड़ी इलायची, कंकोल, तज, कमल, नागकेशर, सुगंधवाला, खस, जटामांसी, देवदारु, दालचीनी, मुरा, कचूर, छड़, शिलाजीत, भद्रमोथा, रेणुका, प्रियंगुपुष्प, श्रीवास, गुग्गल, लाख, नख, राल, धाय के फूल, गठौना, मंजीठ, तगर, मोम इन सबों को चार चार मासे लेकर कल्क बनावे फिर स्वच्छ धुली तिली का तैल १ सेर लेकर उसमें वह कल्क डालकर तैलपाक विधि से इस तैल को बनाकर बोतल में भरकर रख देवे। इसकी मालिश से अस्सी वर्ष का बूढ़ा अत्यंत वीर्यवाला होकर स्त्रियों का प्यारा हो और सुखी रहे, वंध्या भी पुत्रवती हो, नपुंसक भी तरुण हो, जिसके संतान न होती हो, संतान होय, पूर्ण सौ वर्ष की आयु हो। यह चंदनादि तैल, रक्त पित्त, क्षय, ज्वर,दाह, पसीना, दुर्गंध, कोढ़, खाज इनको भी नष्ट करता है॥७३-८२॥

द्राक्षासवम्

द्राक्षातुलामुपादाय जलद्रोणे चतुष्टये ॥
पक्त्वा चतुर्थशेषं तु तं कषायमुपाहरेत् ॥८३॥
दत्त्वा गुडतुलां तत्र धातकीप्रस्थमेव च ॥
निखात्य स्थापयेद्भूमौ यावतासौ वरो भवेत् ॥८४॥
ततस्तत्सारमादद्याद्वारुणीयंत्रतः शनैः ॥
पुनस्तं वारुणीयंत्रे समारोप्य तदाहरेत् ॥८५॥
एवं तु दशधा सारं पुनश्च विधिना हरेत् ॥

ततस्तस्मिंश्चतुर्जातं जातीकोशं लवंगकम् ॥८६॥
कर्पूरं कुंकुमं चापि यथालाभं नियोजयेत् ॥
तं यथाग्निबलं मर्त्यः पिबेत्सर्वक्षयापहम् ॥८७॥
स्निग्धेन भोजनेनैव आसवं विधिना पिबेत् ॥
नरो नवतिवर्षोंपि पौरुषेण महीयते ॥८८॥

४ सेर मुनक्का को १६ सेर पानी में पकावे। जब ४ सेर बाकी रहे तो उतार लेवे फिर इसमें ४ सेर गुड़ और १ सेर धाय के फूल डालकर एक मट्टी के वर्तन में भरकर करडी में दबा देवे। जब वह सड़कर उफान पर आवे तो वारुणीयंत्र द्वारा अर्क खैंच लेवे फिर उस अर्क को दुवारा वारुणीयंत्र द्वारा खैंचे, ऐसे ही बारबार उसी को दस बार चुआवे फिर चातुर्जात, जावित्री, लौंग, भीमसेनी, कपूर, केशर, यह सब अनुमान माफिक मिलावे फिर इसको जठराग्नि का बलाबल विचार कर सेवन करे तो यह क्षय (यक्ष्मा) इनको दूर करे। इसको सुंदर चिकने भोजन के साथ विधिपूर्वक उचित मात्रा से पीवे तो ९० वर्षों का बूढ़ा भी पुरुषार्थ का अभिमान करने लगे॥८३-८८॥

राक्षसयोग

वस्तांडं सर्पिषा भृष्टं कणासैंधवमिश्रितम् ॥
भक्षयेत्सततं यस्तु अंगनामदभंजकः ॥८९॥

बकरे के अंडे को घृत में भूनकर उसमें सेंधा नमक और पीपल मिला के भक्षण करे। इसके निरंतर खाने से बड़ी मदवती स्त्रियों के मद को भंजन करनेवाला पुरुष हो जाता है॥८९॥

मद्यमांसयुता योगा म्लेच्छानां शोभनाः स्मृताः ॥
निंदनीया द्विजातीनामभक्ष्या इति मे मतिः ॥९०॥

मद्यमांस के मेल के जो योग हैं वह म्लेच्छों के लिये ही शोभायमान

हैं, द्विजातियों के लिये यह योग अभक्ष्य हैं और इनका स्पर्श करना निंदनीय है। इस विषय में हे शिष्य! हमारा यही मत है।।९०।।

वाजीकरण पूपालिका

तिलमाषविदारीणां शालीनां चूर्णमेव च ।।
पौंड्रकेक्षुरसेनार्द्रं मर्दितं सैंधवान्वितम् ।।९१।।
वाराहमेदसा युक्तां घृतेनोत्कारिकां पचेत् ।।
तां भक्षयित्वा पुरुषो गच्छेन्नारीं यथेच्छया ।।९२।।

तिल, उड़द, विदारीकंद, शाली चावल, इन चारों का वारीक चूर्ण पौंडा नामक ईख के रस में गूंध लेवे और अनुमान माफिक इन सेंधानमक मिलावे और वराह की मेद का मोमन डाले फिर इसे उत्तम घृत में पूड़ी बना लेवे। यह पूड़ी परम वाजीकरण है इसको खाकर पुरुष यथेच्छ स्त्रीगमन कर सकता है।।९१।।९२।।

म्लेच्छयोग

क्षीरेण बस्तांडयुजा भृतेन
संप्लाव्य कामी च बहूंस्तिलान्यः ।।
सुशोषितानत्ति पिबेत्पयश्च
तस्याग्रतः किं चटकः करोति ।।९३।।

बकरे के अंडे को दूध में डालकर पकावे और इस दूध की भावना तिलों को देवे। इस प्रकार कई भावना देकर सुखा लेवे फिर दो तो तिल खाकर ऊपर से मिसरी मिला धारोष्ण दूध पीवे तो यह मनुष्य के चिड़े से भी अधिक मैथुन करे।।९३।।

पुरुषार्थदायकबस्तिकर्म

जीवंत्यतिबलामेदाकाकोलीद्वयजीरकैः ।।
साभयातिक्तताकृष्णाकाकनासारसायनैः ।।९४।।

स्वयंगुप्तासठीभृंगीजीवकशारिवाद्वयैः ॥
सहचरवराविश्वपिप्पलीमूलभर्जनैः ॥९५॥
पिष्टैस्तैलं घृतं पक्वं क्षीरेणाष्टगुणेन च ॥
दत्तमनुवासनैर्ज्ञेयं शुक्राग्नि बलवर्द्धनम् ॥९६॥
बृंहणं वातपितघ्नं गुल्मानाहहरं परम् ॥
नस्यैः पानैश्च संयुक्तमूर्ध्वजत्रुगदापहम् ॥९७॥

जीवंती, अतिवला, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, दोनों जीरे, हरड, पीपल, काकनासा, वायविडंग, कौंच के बीज, (पुनर्नवा या कचूर), काकडासिंगी, जीवक, ऋषभक, दोनों सारिवा, सहचर (पियावांसा), त्रिफला, सोंठ, पिप्पलीमूल, इन सबका चूरन करके प्रथम थोड़ा घृत में भून लेवे फिर घृत अथवा तैल, या तैल घृत दोनों में उपरोक्त भुने चूर्ण का कल्क मिलावे फिर तैलघृत से आठगुना दूध डालकर पकावे। इसके द्वारा अनुवासनवस्ति देने से वीर्य की तथा अग्नि और बल की वृद्धि होती है। यह इस प्रकार सिद्ध किया घृत, या तैल पुष्टिकारक वातपित्तनाशक, गुल्म, अफरा, इनको दूर करता है। इसको यदि नस्यमें तथा पीने में उपयोग किया जाय तो ऊर्ध्व जत्रुओं के सब रोग दूर होते हैं।।९४-९७।।

वृष्यम्

यत्किंचिन्मधुरं स्निग्धं जीवनं तर्पणं गुरु ॥
हर्षणं मनसश्चैव सर्वं तद्वृष्यमुच्यते ॥९८॥

जो पदार्थ मधुर, चिकने, प्राणरक्षक, तृप्तिकारक, भारी तथा मन में आनंद देनेवाला है उन सबको वृष्य कहते हैं।।९८।।

सामान्यत इमे योगाः पुरुषार्थप्रदायकाः ॥
कथिता विधिवत्तात क्लैब्यानां हितकाम्यया ॥९९॥

अथाग्रे यद्वदिष्यामि क्रमशश्च तरंगके ॥
तत्त्वया प्रश्नक्रमतः श्रोतव्यं हि विभागशः ॥१००॥

गुरु बोले-हे शिष्यो! सामान्यता से नपुंसकोंके कल्याण के लि पुरुषार्थदायक योग हम कह चुके हैं। वह तुमने विधिपूर्वक सुन लि अब जो कुछ हम आगे तरंग प्रतितरंग कहेंगे वह तुम क्रमपूर्व नपुंसकसंबंधी हरेक विषय में प्रश्न करके उत्तररूप से सुन जाओ॥९९॥१००॥

इति प्रबोधित शिष्यस्तरंगेऽस्मिंश्चिकित्सिते ॥
चूर्णपाकरसांस्तैलान्पृष्टवान् क्रमशः पृथक् ॥१०१॥

इस प्रकार गुरुमुख से इस चिकित्सा तरंग में प्रबोधन किया हु शिष्य फिर तरंग प्रतिरंग नपुंसकता के नाश का और वीर्यवर्द्धक चू पाक, रस, तल पूछने लगा सो आगे क्रम से लि जावेंगे॥१०१॥

इति वै० पं० पं० रामप्रसादउपाध्यायप्रणीतनपुंसकामृतार्णवे
नपुंसकचिकित्सितं नाम द्वितीयस्तरंगः ॥२॥

अथ तृतीयस्तरंगः

वाजीकरणादिचूर्णवर्णनम्

शिष्य उवाच

अथ चूर्णप्रकारं हि खंडादिदोषनाशनम् ॥
वीर्यवृद्धिकरं ब्रूहि वाजीकरणमुत्तमम् ॥१॥

इसके उपरान्त शिष्य बोले हे गुरो! नपुंसकता आदि दोषों

हरनेवाले वीर्य को बढ़ानेवाले और उत्तम वाजीकरणकर्त्ता चूर्णों को कथन कीजिये।।१।।

गुरुरुवाच

शृणु चूर्णविधानं हि वीर्यवृद्धिकरं परम् ।।
क्षीणमेहादिशमनमायुरारोग्यदं यथा ।।२।।
अत्यंतशुष्कं यद्द्रव्यं सुपिष्टं वस्त्रगालितम् ।।
तत्स्याच्चूर्णं रजः क्षोदस्तन्मात्राकर्षसम्मिता ।।३।।

इस प्रश्न को सुनकर गुरु बोले हे तात! वीर्य के बढ़ानेवाले और क्षीणता तथा प्रमेह आदि घोर व्याधियों के शमन करनेवाले आयु तथा आरोग्यता के बढ़ानेवाले चूर्णों का कथन करता हूं तुम सावधान होकर सुनो। अत्यन्त सूखी हुई औषधियों को बारीक पीसकर कपड़े में छान लेवे उस छने हुवे रज को चूर्ण रज और क्षोद भी कहते हैं इसकी सामान्यता से मात्रा (खोराक) १ तोले की कही है।।२।।३।।

१ गोक्षुरादिचूर्णम्

गोक्षुरकःक्षुरकःशतमूली वानरी नागबलाऽतिबला च ।।
चूर्णमिदं पयसा निशि पीतं वाजिकरं परमं मनुजाम् ।।४।।

गोखरू, तालमखाना, शतावर, कौंचके बीज, गंगेरण और खरेटी, इन सबका चूर्ण करके बराबर की मिसरी मिला के दो तोले चूर्ण रात्री के समय भक्षण करके मिसरी मिला गर्म अथवा धारोष्ण दूध पीवे तो यह चूर्ण परम वाजीकर्ता और वीर्य का बढ़ानेवाला है।।४।।

२ अथवा

त्रिकंटकात्मगुप्तानां बीजचूर्णं सशर्करम् ।।
क्षीरेण यः पिबेद्गच्छेद्दशवारं निरंतरम् ।।५।।

गोखरू, और कौंच के बीज इन दोनों के चूर्ण को मिसरी मिले गर्म

दूध से जो पुरुष निरन्तर (हमेशा) सेवन करता है वह नित्य स्त्री से दश वार गमन कर सकता है।।५।।

३ नारसिंहचूर्णम्

शतावरीरजः प्रस्थं प्रस्थं गोक्षुरकस्य च ।।
वाराह्या विंशतिपलं गुडूच्याः पंचविंशतिः ।।६।।
भल्लातकानां द्वात्रिंशच्चित्रकस्य दशैव तु ।।
तिलानां शोधितानां च प्रस्थं दद्यात्सुचूर्णितम् ।।७।।
त्र्यूषणस्य पलान्यष्टौ शर्करायाश्च सप्तति। ।।
माक्षिकं शर्करार्धेन माक्षिकार्धेन वै घृतम् ।।८।।
शतावरीसमं देयं विदारीकंदजं रजः ।।
एतदेकीकृतं चूर्णं स्निग्धे भांडे निधापयेत् ।।९।।
पलार्धमुपयुंजीत यथेष्टं चापि भोजनम् ।।
मासैकमुपयोगेन जरां हंति रुजामपि ।।१०।।
वलीपलितखालित्यं मेहपांड्वादिपीनसान् ।।
हंत्यष्टादशकुष्ठानि तथाष्टावुदराणि च ।।११।।
भगंदरं मूत्रकृच्छ्रं गृध्रसीं सहलीमकाम् ।।
क्षयं चैव महाश्वासान्पंचकासान्सुदारुणान् ।।१२।।
अशीतिवातजान्रोगाश्चत्वारिंशच्च पित्तजान् ।।
विंशतिश्लेष्मकांश्चैव संसृष्टान्सान्निपातिकान् ।।१३।।
सर्वानर्शोगदान्हंति वृक्षमिंद्राशनिर्यथा ।।
वीर्यवान्रमते नार्य्यां दशवारं निरंतरम् ।।१४।।
पुत्रान् संजनयेद्वीरान् नरसिंहनिभांस्तथा ।।
नारसिंहमिदं चूर्णं सर्वरोगहरं परम् ।।१५।।

शतावर का चूर्ण १ सेर, दक्षिणीगोखरूका चूर्ण १ सेर,

वाराहीकंदका चूर्ण १ सेर, गिलोय सत्व १। सेर, शुद्ध मिलावे २ सेर, चित्रक की छाल अढ़ाईपाव, शुद्ध तिल १ सेर, त्रिकुटा आधसेर, मिसरी ४।। सेर, शहद २। सेर, गोघृत एक सेर, दो छटाँक इन सबको कूटछान मिला करके चिकते शुद्धपात्र में भरकर रख देवे इसमें से दो तोले प्रातःकाल भक्षण करे और यथेच्छ भोजन किया करे इसके एक महीने के सेवन से बुढ़ापे के रोग दूर हों, देह में गुलजट पड़ना, सफेदबाल होना, गंज,प्रमेह,पांडु,पीनस १८ कोढ़,८ उदररोग,भगंदर,मूत्रकृच्छ्र, गृध्रसी, हलीमक, क्षयरोग, महाश्वास, पांच प्रकार की खांसी, ८० वायु के रोग, ४० पित्तरोग, २० कफ के रोग, मिश्रित और सन्निपात के रोग, सब प्रकार के बवासीर इन सब रोगों को नष्ट करे, जैसे इंद्र का वज्र वृक्षों को नष्ट करता है। इसके सेवन से वीर्य अत्यंत बढ़कर मनुष्य स्त्रियों से नित्य प्रति १० बार गमन कर सकता है, इसके प्रभाव से मनुष्य शेर की समान पराक्रमवाले शूरवीर पुत्रों को उत्पन्न करे यह नारसिंह चूर्ण मनुष्यों के सब रोग नष्ट करनेवाला है।।६-१५।।

४ मुसलीचूर्णम्

मुसलीकंदचूर्णं च गुडूचीसत्त्वसंयुतम् ।।
वानरीगोक्षुराभ्यां च शाल्मलीशर्करामलैः ।।
आलोड्य घृतदुग्धाभ्यां भक्षयेत्कामवृद्धये ।।१६।।

मुसली स्याह, मुसली सफेद, विदारीकंद, गिलोय का सत्त्व, कौंच के बीज, गोखरू, शेंवला की मुसली, इनके चूर्ण में बराबर की शुद्ध मिसरी मिलावे फिर इसमें से १।। तोला या दो तोले की फक्की लेकर ऊपर मिसरी और घी मिला हुआ दूध पीवे तो वीर्य पुष्ट होकर काम की वृद्धि होवे।।१६।।

५ वारहीकंदचूर्णम्

वाराहीकंदभृंगाभ्यां पलं षोडशचूर्णितम् ॥
किंचिदाज्येन भृष्टं च सितायुक्तं च कारयेत् ॥१७॥
त्वक्पत्रनागपुष्पाभ्यां केशरं मधुयष्टिका ॥
एतानि पलमात्राणि शर्करासममेव च ॥१८॥
आलोड्य घृतदुग्धाभ्यां पिबेत्कामं निशामुखे ॥
वीर्यवृद्धिकरं पुसां बहुरामासु रम्यते ॥१९॥

बारहीकंद के चूर्ण को और भांगरे के चूर्ण को १६ सोलह पल लेकर किंचित् घी में भून लेवे फिर इसमें बराबर की मिसरी मिलाकर इसमें से १ तोला चूर्ण खाकर ऊपर से दूध पीवे तो कामशक्ति बलवान् होती है। अथवा दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, मुलहठी इनको चार २ तोले लेकर बराबर की शुद्धचीनी मिलावे फिर घृत और मिसरी मिले दूध से इसका सेवन करे अथवा इस चूर्ण को उपरोक्त विदारीकंद के चूर्ण में ही मिलाकर भक्षण करके दूध पीवे।।१७।।१९।।

६ अन्यच्चूर्णम्

स्वयंगुप्तेक्षुरकयोर्बीजचूर्णं सशर्करम् ॥
धारोष्णेन नरः पीत्वा पयसा न क्षयं व्रजेत् ॥२०॥

कौंच के बीज, तालमखाने, इनके चूर्ण में समभाग मिसरी मिलाकर धारोष्ण दूध से सेवन करे तो उस मनुष्य का वीर्य कभी क्षीण न हो सदैव पुष्ट रहे।।२०।।

७-८ उच्चटादिचूर्णम्

उच्चटाचूर्णमप्येवं क्षीरेणोत्तममुच्यते ॥
शतावर्युच्चटाचूर्णं पेयमेव सुखार्थिना ॥२१॥

इसी प्रकार उटंगण के वीजों का चूर्ण कर मिसरी मिलाकर धारोष्ण

दूध के संग खावे तो वीर्य पुष्ट हो अथवा शतावर और उटंगण इन दोनों के चूर्ण में मिसरी मिलाकर १।। तोला या दो तोले की फंकी लेकर धारोष्ण, तत्काल निकाला (दूध जिसमें से निकालने की गर्माई दूर न हुई हो) दूध में मिसरी मिलाके पीवे तो वीर्य की वृद्धि होकर कामशक्ति बलवान् हो।।२१।।

९ मधुयष्टीचूर्णम्

कर्षं मधूकचूर्णस्य घृते क्षौद्रसमन्विते ।।
प्रयुंक्ते यः पयश्चानु नित्यवेगः स ना भवेत् ।।२२।।

एक तोला मुलहठी के चूर्ण को छः मासे घी और १ तोला शहद मिलाकर चाटकर मिसरी मिला गर्म दूध पीवे तो वह मनुष्य सदैव वीर्य के वेग से युक्त रहता है।।२२।।

१० विदारीकंदचूर्णम्

चूर्णं विदार्याः सुकृतं स्वरसेनैव भावितम् ।।
सर्पिः क्षौद्रयुतं लीढ्वा उष्णदुग्धं ततः पिबेत् ।।२३।।

विदरीकंद के चूर्ण को विदारीकंद के रस की भावना देकर सुखाता जावे इसी प्रकार २१ भावना देकर इसमें से १ तोला चूर्ण में १ तोला घृत और दो तोले शहद मिलाकर भक्षण करे ऊपर से मिसरी मिला गर्म दूध पीवे तो पुरुष अनेक स्त्रियों से यथेच्छ गमन कर सकता है।।२३।।

११ आमलकीचूर्णम्

एवमामलकं चूर्णं स्वरसेनैव भावितम् ।।
शर्करामधुसर्पिर्भिर्युक्तं लीढ्वा पयः पिबेत् ।।
एतेनाशीतिवर्षोपि युवेव परिहृष्यते ।।२४।।

इसी प्रकार नवीन सूखे आमलों के चूर्ण आमलों के रस की २१

भावना देकर मिसरी शहद घी मिलाकर खावे ऊपर से गर्म दूध पीवे तो अस्सी वर्ष का वूढ़ा भी जवान के समान मैथुन करे॥२४॥

१२ शतावर्यादिचूर्णम्

शतावरीनागबलाविदारीत्रिकंटकैरामलकीफलान्वितैः ।
विचूर्णितैःपंचभिरेकशःपृथक् प्रकल्पितैर्वाघृतमाक्षिकप्लुतैः।२५
इति प्रयोगाः षडिमे भिषग्वरैरुदीरिताःशर्करया समन्विताः।
नृणां मदांधप्रमदोपसर्पिणां प्रधानधातोरतिरेक कारणम्॥२६॥

शतावर, खरैटी, विदारीकंद, गोखरू, आमले इन सबका अलग अलग अथवा सबका एकत्र चूर्ण करके इसमें घी और शहद तथा मिसरी मिलावे यह वैद्यों ने पांच अलग अलग और एक सबको मिलाकर छः प्रयोग कहे हैं यह छहों प्रयोग कामदेव से मदांधकर्ता और स्त्रीरमणकर्ता मनुष्यों के वीर्य के बढ़ानेवाले हैं॥२५॥२६॥

१३ गोखरूचूर्ण

शमयति गोक्षुरचूर्णं छागीक्षीरेण साधितं समधु ॥
भुक्तं क्षपयति षांढ्यं यज्जनितं कुप्रयोगेण ॥२७॥

गोखरु का ५ टंक चूर्ण ७ टंक शहद में मिलाकर चाटकर ऊपर से बकरी का गर्म दूध मिसरी मिलाके पीवे तो हस्तमैथुन आदि की नपुंसकता दूर हो॥२७॥

१४ मुसल्यादिचूर्णम्

मुसलिकोकिलगोक्षुरचूर्णकं शशिविलोचनरामसितं पचेत् ।
पयसि प्रातरिदं यदि कोष्णके सुसितया खलु टंकषट्कया॥२८॥
त्रिगुणसप्तदिनं परिभक्षयन् शतवया अपि कांक्षति कामिनीम् ।
किमिह चित्रमुदित्त्वरयौवनःशशिमुखीं शयनान्न जहाति सः।२९

कालीमुसली, तालमखाने, गोखरू, ये क्रम से एक तथा दो और तीन भाग लेवे, काली मुसली ३ तोले, तालमखाने ६ तोले, गोखरू ९ तोले, फिर इनका चूर्ण कर प्रातःकाल मिसरी मिले गर्म दूध से नित्य ६ मासे खावे इस प्रकार २१ दिन भक्षण करनेसे १०० वर्षका बूढ़ा मनुष्य भी स्त्रीरमण की इच्छा करने लगे, फिर यदि चढ़ी हुई जवानीवाला मनुष्य स्त्रीसंग की इच्छा करे तो आश्चर्य ही क्या है।।२८।।२९।।

१५ अन्य शतावर्यादि चूर्ण

शतावरीगोक्षुरकाश्वगंधापुनर्नवानागबलामुसल्यः ।।
घृतेन खंडेनतु भक्षणीया क्षीणा नरा नागबला भवंति ।।३०।।

शतावर, गोखरू, असगन्ध, पुनर्नवा, खरेटी, मुसली, इन सबका चूर्ण कर घी और मिसरी मिलाके गर्म दूध से भक्षण करे तो क्षीण मनुष्य भी हाथी के समान पुरुषार्थी होवे ।।३०।।

१६ अश्वगन्धादिचूर्णम्

अश्वगंधा दशपला तन्मात्रो वृद्धदारुकः ।।
कर्षैकं पयसा पीत्वा नारीभिर्नैव तुष्यति ।।३१।।

असगन्ध नागौरी १० पल (४० तोला) विधायरा दश पल इन दोनों का बारीक चूर्ण कर बराबर की मिसरी मिलावे फिर इसमें से दो तोले गर्म अथवा धारोष्ण दूध के साथ खाय तो धातु पुष्ट होकर मनुष्य स्त्री से रमण करता न थके ।।३१।।

१७ करवीरादिचूर्णम्

करवीरशाल्मलिजटास्तथा वानरिकं समम् ।।
सूक्ष्मचूर्णं कृतं सर्वं शाणमात्रं पिबेन्निशि ।।
आलोड्य घृतदुग्धेन मानिनीमानभेदनम् ।।३२।।

कनेर की जड़ का चूर्ण १ तोला, नये सेमल की जड़ पांच तोले, कौंच

के बीजों की गीरी ७ तोले इन तीनों को कपड़छान करके बराबर की मिसरी मिलाके घी और मिसरीयुक्त दूध से नित्य छः मासे प्रमाण खावे तो वीर्य पुष्ट होकर स्त्रियों का मानभंग करे॥३२॥

कामदेवचूर्णम्

पलं गोक्षुरबीजस्य द्विपलं कपिकच्छुरा ॥
पलं नागबलाबीजं पलमेकं शतावरी ॥३३॥
विदारीकंदचूर्णस्य पलद्वयमथापि वा ॥
पलं त्रपुषबीजं च वाजिगंधापलत्रयम् ॥३४॥
वासा च तालमूली च गुडूची रक्तचंदनम् ॥
त्रिसुगंधिकणा धात्री लवंगं नागकेशरम् ॥३५॥
एतानि कर्षमात्राणि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥
बला शाल्मलिमूलं च भवेदेकैकविंशतिः ॥३६॥
कुशकाशशिफासप्तशर्करासप्तयोजितम् ॥
दुष्टशुक्रं वीर्यहानिं मूत्रकृच्छ्राणि यानि च ॥३७॥
मूत्राघातं मूत्रदोषांञ्जयेच्छुक्रविवर्द्धनम् ॥
दशकं गच्छति स्त्रीणां हयतुल्यपराक्रमः ॥
कामदेवाभिधं चूर्णं धन्वंतरिनिरूपितम् ॥३८॥

गोखरू १ पल, कौंच के बीज २ पल, गगरेन के बीज १ पल, शतावर १ पल, विदारीकन्द २ पल, असगंध ३ पल, अड़ूसा, मुसली, गिलोय, लालचन्दन, त्रिसुगन्ध (दालचीनी; इलायची, तेजपात) पीपल, आमले, लौंग, नागकेशर इन सबको एक २ तोला लेवे। खरेटी और सेमल की मुसली इक्कीस २ तोले लेवे। कुशा की जड़ काश की जड़ सरपते की जड़ प्रत्येक सात तोले लेवे इन सबका चूर्णकर बराबर शुद्ध खांड मिलावे इस चूर्ण को नित्य दूध से सेवन करे तो दुष्टवीर्य वीर्य का न होना मूत्रकृच्छ्र

मूत्राघात मूत्रदोष इन सबको दूर करे और वीर्य को बढ़ावे दश स्त्रियों से रमण करने की शक्ति होवे घोड़े की समान पराक्रम होवे यह धन्वन्तरिजी का कथन किया हुआ कामदेव चूर्ण है।। ३३-३८।।

मानसाल्लासचूर्णम्

त्वक् पिप्पली लवंगैला चंदनं च शिवापलम् ।।३९।।
सारसार्द्धपलं भंगा सार्द्धद्विपलसंमिता ।।
कर्पूरो मृगनाभिश्च दशमाषमितः पृथक् ।।४०।।
सर्वं तुल्यसिताचूर्णं मानसोल्लाससंज्ञकम् ।।
वृष्यं वह्निप्रदं चैतत्कामोद्दीपनकारकम् ।।४१।।

तज, पीपल, लौंग, छोटी इलायची, सफेद चंदन, आमले प्रत्येक एक पल (४ तोले) लोहभस्म १।। पल, शुद्धभांग २ पल, भीमसेनी कपूर और कस्तूरी दश २ मासे इन सबका चूर्ण करके सबकी बराबर मिसरी मिलावे इस चूर्ण को ६ मासे प्रमाण दूध के साथ भक्षण करे तो मानसोल्लासक चूर्ण वीर्य को पुष्ट करे जठराग्नि को बढ़ावे काम को उद्दीपन करे।। ३९-४१।।

बृहद्वाराहीकंदचूर्णम्

वाराहीकंदं भृंगाटं कंदं मार्जारमेव च ।।
चूर्णं सूक्ष्मं कृतं सर्वं पलमानं पृथक् पृथक् ।।४२।।
घृतभृष्टं तु तच्चूर्णं पश्चादेतन्महौषधम् ।।
चतुर्जातं लवंगं च पिप्पली नागरं तुगा ।।४३।।
एतान्द्विकर्षकान्भागान्सिता सर्वसमानिका ।।
पलार्द्धं भक्षयेन्नित्यं ससितं महिषीपयः ।।४४।।
दिनांते च पिबेन्नित्यं क्लीबत्वनाशनं परम् ।।
प्रमेहव्याधिशमनं वीर्यस्तंभनकारकम् ।।४५।।

वाराहीकंद, सिंघाड़े विदारीकंद, प्रत्येक का चूर्ण चार २ तोले लेकर घी में भून लेवे फिर इसमें दाल चीनी इलायची तेजपात नागकेशर लवंग पीपल सोंठ वंशलोचन इन सब प्रत्येक का चूर्ण दो दो तोले मिसरी सबके बराबर ले सबको एकत्र कर एक चिकने बर्तन में रखे फिर इसमें से नित्य दो तोले खाकर ऊपर से मिसरी मिला भैंस का दूध पीवे इस प्रकार नित्य रात्रि को सेवन करने से प्रमेह नपुंसकता दूर होवे और वीर्यस्तंभन होवे ।।४२-४५।।

मदनप्रकाशचूर्णम्

कोकिलाक्षस्य बीजानि मुसलीकंदनागरम् ।।
वाजिगंधा कपिबीजं शाल्मलीपुष्पमेव च ।।४६।।
बला शतावरीमूलं मोचाह्वं च त्रिकंटकम् ।।
जातीफलं च माषान्नं मातुलानी तुगा तथा ।।४७।।
एतानि समभागानि सिता सर्वसमानिका ।।
पयसा हि पिबेद्रात्रौ कर्षयुग्मं च नित्यशः ।।४८।।
बलवीर्यकरं पुंसां प्रमेहव्याधिनाशनम् ।।
मदनप्रकाशचूर्णं हि प्रौढानां द्रावणं परम् ।।४९।।

तालमखाने, मुसली, विदारीकंद, सोंठ, असगंध, कौंच के बीज, सेमल के फूल, खरैंटी, शतावर, मोचरस, गोखरू, जायफल, भुनी उड़द की दाल, भांग, वंशलोचन इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करे फिर इसमें बराबर की मिसरी मिलावे। इस मदन प्रकाश चूर्ण को नित्य दो तोले खाकर ऊपर से दूध पीवे तो वीर्य की वृद्धि हो प्रमेहों का नाश हो इसके प्रभाव से मनुष्य प्रौढ़ा स्त्रियों को द्रावण करनेवाला होता है।।४६-४९।।

अश्वगंधाचूर्णम्

अश्वगंधा तिलाः कृष्णाः समानं सूक्ष्मचूर्णितम् ।।
पलार्द्धमधुसर्पिर्भ्यां भुक्त्वा चानु पयः पिबेत् ।।
वीर्यवृद्धिकरं चैव क्लीबत्वनाशनं परम् ।।५०।।

असगंध और काले तिल बराबर लेकर बारीक चूर्ण करे फिर घी और शहद में मिलाकर नित्य दो तोले खावे ऊपर से गर्म दूध पीवे तो वीर्य की वृद्धि हो और नपुंसकता दूर होवे ।।५०।।

माषचूर्णम्

त्रिपलं माषचूर्णं तु तत्समा श्वेतशर्करा ।।५१।।
आलोड्य मधुसर्पिर्भ्यां पलार्द्धं भक्षयेन्नरः ।।
बलवीर्यकरं शश्वद्वलीपलितनाशनम् ।।५२।।

शुद्ध उड़दों के १२ तोले चूर्ण को घृत से किंचित् भून लेवे फिर ठंढा करके इसमें बराबर की मिसरी मिलावे फिर घी और शहद मिलाकर दो तोले नित्य भक्षण कर ऊपर से गर्म दूध पीवे तो बल और वीर्य की वृद्धि हो शरीर में गुलजटी पड़ना बाल सफेद होना दूर हो।।५१।।५२।।

वृद्धदारुकचूर्णम्

वृद्धदारस्य मूलानि सूक्ष्मचूर्णीकृतानि च ।।
शतमूलीरसेनैव सप्तवारं विभावयेत् ।।५३।।
तच्चूर्णं सर्पिषा लिह्यात्कर्षमात्रप्रमाणतः ।।
त्रिंशद्दिनप्रयोगेण जायते धातुवर्द्धनम् ।।५४।।

विधारे की जड़ के बारीक चूर्ण को शतावर के रस की सात भावना देवे फिर इसमें से एक तोला चूर्ण घृत में मिलाकर चाट लेवे ऊपर से दूध पीवे इस तरह ३० दिन सेवन करने से वीर्य की वृद्धि होती है।।५३।।५४।।

अकरकराचूर्णम्

अकारकरभः शुंठी लवंगं कुंकुमं कणा ॥
जातीफलं जातिपुष्पं चंदनं कार्षिकं पृथक् ॥५५॥
चूर्णयेदहिफेनं च तत्र दद्यात्पलोन्मितम् ॥
सर्वमेकीकृतं माषमात्रं क्षौद्रेण भक्षयेत् ॥५६॥
शुक्रस्तंभकरं पुंसामिदमानंदकारकम् ॥
नारीणां प्रीतिजननं सेवेत निशि कामुकः ॥५७॥

अकरकरा, सोंठ, लौंग, केशर, पीपल, जावित्री, सफेद चंदन प्रत्येक एक एक तोला लेवे शुद्ध अफीम ४ तोले सबको एकत्र कर इसमें से दो रत्ती चूर्ण को एक मासा शहद में मिलाके चाट ले ऊपर से मिसिरीयुक्त दूध पीवे तो वीर्यस्तंभन हो स्त्रीपुरुषों को आनंददायी हो इसको कामी पुरुष रात्री को शयन करने के समय सेवन करे॥५५-५७॥

गन्धकादिचूर्णम्

गंधकामलकं चूर्णं धात्रीरसविभावितम् ॥
सप्तधा शाल्मलीतोयैः शर्करामधुयोजितम् ॥५८॥
लीढ्वा चानु पयः पानं प्रत्यहं कुरुते तु यः ॥
एतेनाशीतिवर्षोपि वेगेन रमते स्त्रियम् ॥५९॥

शुद्ध आमलासार गंधक और आमलों के चूर्ण को समभाग लेकर आमलों के रस की ७ भावना देवे और सात भावना सेमल के रस की देकर इसमें मिसरी और शहद मिलाकर भक्षण करे ऊपर से मिसरी मिला धारोष्ण दूध पीवे तो अस्सी वर्ष का बूढ़ा भी बड़े वेग से स्त्रीगमन करे॥५८॥५९॥

लक्ष्मणादिचूर्णम्

लक्ष्मणाहस्तिकर्णाभ्यां त्रिकत्रयसमन्वितम् ॥
अभ्वगंधासमायोगाल्लौहं पुंसवनं स्मृतम् ॥६०॥

पुत्रोत्पत्तिकरं वृष्यं कन्यासूतिनिवर्तकम् ॥
कृशस्य बलदं श्रेष्ठं सर्वामयहरं परम् ॥६१॥

लक्ष्मणा, लाल एरंड की जड़, हरड, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, असगंध, इन सबको समान भाग लेवे और उत्तम प्रकार से बनी हुई लोहभस्म सबकी बराबर लेवे फिर इसमें मिसिरी मिलाकर उचित मात्रा से भक्षण करे ऊपर से दूध पीवे तो इसके प्रभाव से पुत्रोत्पत्ति हो शरीर बलवान् हो वीर्य की वृद्धि हो, जिसके कन्या होती हो उसके पुत्र हो कृशमनुष्य बलवान् होवे॥६०॥६१॥

मधुयष्टयादिचूर्णम्

मधुयष्टी तुगाक्षीरी धात्री गोक्षुरकं तथा ॥
वंगमभ्रं कपिबीजं धात्रीरसविभावितम् ॥६२॥
भक्षयेन्मधुसार्पिर्भ्यां ततश्चानु पयः पिबेत् ॥
वीर्यवृद्धिकरं पुंसां क्लीबत्वनाशनं परम् ॥६३॥

मुलहठी, वंशलोचन, आमले, गोखरू, उत्तम दशपुटी वंगभस्म उत्तमप्रकार से बनी हुई ६० पुटीअभ्रक भस्म इन सबको आंवले के रस की सात भावना देकर बारीक चूर्ण कर लेवे फिर उचित मात्रा से चूर्ण को घी और शहद में मिलाके चाटले ऊपर से गर्म मिसरी मिला दूध पीवे यह योग वीर्य को बढ़ानेवाला और नपुंसकता को दूर करनेवाला है॥६२॥६३॥

वीर्यवृद्धिकरान्योगान्षंढादिदोषनाशकान् ॥
देशकालबलं ज्ञात्वा योजयेन्मतिमान्नरः ॥६४॥

इस प्रकार नपुंसकता को दूर करनेवाले और वीर्य के बढ़ानेवाले

चूर्णों को बुद्धिमान् मनुष्य देश काल बलाबल विचारकर सेवन करावे ।।६४।।

कुछ एक औषधि के योग

शतावरी ह्युच्चटा च कपिकच्छुर्विदारिका ।।
मधुयष्टी च माषान्नं तथैवामलकी स्मृता ।।६५।।
एषां पृथक्पृथक् चूर्णं सहितं भक्षयेत्पुमान् ।।
ततः पयोनुपानेन वाजीकरणमुत्तमम् ।।६६।।

शतावर, उटंगण के बीज, कौंच के बीज, विदारीकंद मुलैठी, उड़द, आमले इनका अलग अलग चूर्ण मिसरी मिलाकर खावे ऊपर से गर्म दूध पीवे तो यह एक भी परम वाजीकरण है।।६५।।६६।।

उपसंहार

इति चूर्णविधानं च तरंगेऽस्मिन्हि वर्णितम् ।।
बलवृद्धिकरं शश्वत् षंढादिदोषनाशकम् ।।६७।।

इस प्रकार बल के बढ़ानेवाले और नपुंसकता के नाश करनेवाले चूर्णों का विधान इस तरंग में वर्णन किया है।।६७।।

इति श्रीवैद्यपंचाननपंडितरामप्रसादोपाध्यायप्रणीतनपुंसकामृतार्णवे चूर्णवर्णनंनाम तृतीयस्तरंग ।।३।।

अथ चतुर्थस्तरंगः

कामोद्दीपकपाकवर्णनम्

गुरुरुवाच

अथ पाकान्प्रवक्ष्येहं क्लीबत्वनाशकान् ।।
वीर्यवृद्धिकरांश्चैव बलकांतिविवर्द्धकान् ।।१।।

गुरु कहने लगे हे शिष्य! अब मैं वीर्य की वृद्धि करनेवाले बल और कांति बढ़ानेवाले पुरुषों के नपुंसकता आदि दोषों के नष्ट करनेवाले पाकों का वर्णन करता हूं।।१।।

कौंचपाक

निस्तुषं वानरीबीजं कृत्वा विंशत्पलानि च ।।
त्रिंशत्पलां सितां दत्त्वा घृतं दत्त्वा पलाष्टकम् ।।२।।
दुग्धाढकं समायुक्तं मृदुना वह्निना पचेत् ।।
यावद्दर्वीप्रलेपः स्यात्तन्मध्ये चूर्णितं क्षिपेत् ।।३।।
जातीफलं त्रिकटुकं त्रिगंधं देवपुष्पकम् ।।
आकल्लकं जातिपत्री कोकिलाबीजकेशरम् ।।४।।
पुनर्नवा बले द्वे च मुसली साहिफेनकम् ।।
पारदं लोहचूर्णं च अभ्रकं च पलार्द्धकम् ।।५।।
चंदनागरुकस्तूरीकर्पूरं शाणमात्रकम् ।।
पलार्द्धं भक्षयेदेतत्क्रमाद्वीर्यबलप्रदम् ।।६।।

छिले हुवे कौंच के बीज ८० तोले, मिसरी १२० तोले, गोघृत ३२ तोले दूध ४ सेर, इन सबको एकत्र कर मंद २ आंच से पकावे जब पकते पकते खोवे की सदृश गाढ़ा हो जावे तब नीचे लिखी औषधियों का चूर्ण मिलावे। जायफल, त्रिकुटा, त्रिगन्ध, लवंग, अकरकरा, जावित्री, तालमखाने, केशर, पुनर्नवा, बला, अतिबला, मुसली, चंद्रोदय लोहभस्म अभ्रकभस्म प्रत्येक दो २ तोले चन्दन, अगर, कस्तूरी, कपूर, प्रत्येक ४ मासे इन सबके बारीक चूर्ण को उपरोक्त पाक में मिलाकर चिकने पात्र में रख देवे इसमें से दो तोले प्रमाण नित्य खावे ऊपर से दूध पीवे तो अत्यंत बल और वीर्य की वृद्धि होवे।।२-६।।

आम्रपाक

पक्वाम्रस्य रसे द्रोणे रसाढकमितां सिताम् ॥
घृतप्रस्थमितं दद्यान्नागरस्य पलाष्टकम् ॥७॥
मरिचं कुडवोन्मानं पिप्लीद्विपलोन्मिता ॥
सलिलस्याढकं दत्त्वा सर्वमेकत्र कारयेत् ॥८॥
पचेत्तन्मृण्मये पात्रे दारुदर्व्या प्रचालयेत् ॥
चूर्णान्येषां क्षिपेत्तत्र घनीभूतेऽवतारिते ॥९॥
धान्यकं जीरकं पत्रं चित्रकं मुस्तकं त्वचम् ॥
बृहज्जीरकमप्यत्र ग्रंथिकं नागकेशरम् ॥१०॥
एलाबीजं लवंगं च पृथक्जातीफलं पलम् ॥
सिद्धे शीते प्रदातव्यं मधुनः कुडवद्वयम् ॥११॥
भक्षयेद्भोजनादर्वाक् पलमात्रमिदं नरः ॥
अथवा नियमो नात्र मात्रां खादेद्यथाबलम् ॥१२॥
मानवः सेवनादस्य वाजीव सुरते भवेत् ॥
समर्थो बलवान्पुष्टो हृद्यो नित्यं निरामयः ॥१३॥

पक्के मीठे आमों का रस १६ सेर, शुद्ध मिसरी ४ सेर, गोघृत १ सेर, साकेंठ मेदा ३२ तोले, कालीमिरच ३२ तोले, पीपल ३२ तोले, स्वच्छ जल ४ सेर सबको मिलाकर मट्टी के पात्र में पकावे और लकड़ी की कड़छुली से हिलाता जाय, जब मन्द २ आंच से पकते २ गाढ़ा हो जाय और घी दिखाई देने लगे फिर इसमें धनिया, जीरा, पत्रज, चित्रक, मोथे, तज, कलौंजी, पीपलामूल, नागकेशर, इलायची, लौंग, जायफल, प्रत्येक चार चार तोले लेकर इनका चूर्ण करके उपरोक्त पाक में डाले जब शीतल हो जाय तो इसमें आध सेर शहद मिलावे फिर नित्य भोजन करने से पहले चार तोले खावे अथवा जठराग्नि का बल देखकर मात्रा

कल्पना करे इसके सेवन से घोडे की समान मैथुन करने में प्रवृत होय, सामर्थ्यवान्, वलवान्, हृष्टपुष्ट होय, और नित्य निरोग रहे यह आम्रपाक हृदय को हितकारी है।।७-१३।।

कामसुन्दरपाक

शतावरी च मुसली गोक्षुरस्त्वग्लवंगकम् ।।
खर्जूरमेला कृष्णा च शिवा कमलचंदनम् ।।१४।।
कपिकच्छुभवं बीजं पत्रं मुस्ता च नागरम् ।।
कोकिलाक्षश्च धनिका शुक्तिपूगं पलद्वयम् ।।१५।।
विंशत्पलासिता दर्पकर्पूरश्चार्द्धकार्षिकः ।।
विजया सार्धपलिका प्रमेहघ्नो रसायनः ।।
ज्वरघ्नः पुष्टिजननः पाकोयं कामसुंदरः ।।१६।।

सतावर, मुसली, गोखरू, तज, लवंग, छुवारे, इलायची, पीपल, आमले, कमलगट्टे, चन्दन, कौंच के बीज, पत्रज, मोथा, सोंठ, तालमखाने, धनिया, प्रत्येक एक एक तोला, दक्षिणी चिकनी सुपारी ८ तोले, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर छः २ मासे, धुली हुई भांग ६ तोले इन सबका विधिपूर्वक पाक बनावे और अग्नि का बलाबल देखकर उचित मात्रा से खावे तो यह काम सुन्दर पाक आयु को स्थिर करे प्रमेह और ज्वर को नष्ट करे, वीर्य को पुष्ट करे।।१४-१६।।

रतिवल्लभ पूगपाक

पूग दक्षिणदेशजं दशपलोन्मानं भृशं कर्तयेत्
तच्छिन्नं जलयोगतो मृदुतरं संकुटच चूर्णीकृतम् ।।
तच्चूर्णं पटशोधितं वसुगुणे गोशुद्धदुग्धे पचेत् ।।
गव्याज्यांजलिसंयुतेऽतिनिबिडे दद्यात्तुलार्द्धांसिताम् ।।
पक्वं तज्ज्वलनात्क्षितिं प्रतिनयेत्तस्मिन्पुनः प्रक्षिपेत्

यद्यद्यत्तत्तदुदाहरामि बहुला दृष्ट्वादरात्संहिताः ॥
एला नागबला तथा सचपला जातीफलालिंगिता
जातीपत्रकमत्रपत्रकयुतं तच्च त्वचा संयुतम् ॥१८॥
विश्वा वीरणवारि वारिदवरा वांशीवरी वानरी
द्राक्षा सेक्षुरगोक्षुरातिमहती खर्जूरिका क्षीरिका ॥
धान्याकं सकसेरुकं समधुकं शृंगाटकं जीरकं
पृथ्वीकाथ यवानिका वरटिका मांसी मिसी मेथिका॥१९॥
कंदेष्वत्र विदारिकाथ मुसली गंधर्वगंधा तथा
कर्चूरं करिकेशरं च मरिचं चारस्य बीजं नवम् ॥
बीजं शाल्मलिसंभवं करिकणाबीजं च राजीवजम् ॥
श्वेतं चंदनमत्र रक्तमपि च श्रीसंज्ञपुष्पैः समम् ॥२०॥
सर्वं चेति पृथक् पृथक् पलमितं संचूर्ण्य तत्र क्षिपेत्
सूतं वंगभुजंगलोहगगनं सन्मारितं स्वेच्छया ॥
कस्तूरीघनसारचूर्णमपि च प्राप्तं यथा प्रक्षिपेत्
पश्चादस्य तु मोदकान्विरचयेद्बिल्वप्रमाणानथ ॥२१॥
तान्भोक्तातिसदा यथानलबलं भुंजीत नाम्लं रसं
पूर्वस्मिन्नशिते गते परिणते प्राग्भोजनाद्भक्षयेत् ॥
नित्यं श्रीरतिवल्लभाख्यकमिमं यः पूगपाकं भजेत्
सस्याद्वीर्यविवृद्धवृद्धमदनो वाजीव सक्तो रतौ ॥२२॥
दीप्ताग्निर्बलवान्बली विरतिहो हृष्टः स पुष्टः सदा
वृद्धो योपि युवेव सोपि रुचिरः पूर्णेन्दुवत्सुंदरः ॥२३॥

दक्षिणी सुपारी ४० तोले लेकर काट लेवे फिर जल में भिगोकर धीरे धीरे कूटकर बारीक चूर्ण करे उस चूर्ण को सुखाकर कपड़छान करे फिर चार सेर गौ के दूध में पकावे, फिर उसमें १६ तोले गौ का घी

डाले, और ५ सेर मिसरी डाले जब पकते पकते पाक बनकर तैयार हो तो उसको नीचे उतारकर इन औषधियों का प्रक्षेप करे। इलायची, नागबला, बला, पीपल, जायफल, जावित्री,पत्रज,तज,सोंठ, खस, नेत्रवाला, नागरमोथा, त्रिफला, वंशलोचन, शतावर, कौंच के बीज, दाख, तालमखाने, गोखरू, खजूर, छुवारे, धनियां, क्षीरकाकोली, कसेरू, महुवा, सिंघाडे, जीरा, कलौंजी, अजवायन, वट के बीज, जटामांसी, सौंफ, मेथी, विदारिकंद, मूसली, असगंध, कचूर, नागकेशर, कालीमिर्च, चिरौंजी, सेमर के बीज, गजपिप्पली, कमलगट्टा, दोनों चंदन, लौंग, प्रत्येक चार २ तोले लेकर सबका चूर्ण कर पाक की चासनी में डाले और चंद्रोदय, वंगभस्म, नागभस्म, लोहभस्म, अभ्रक, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर यह अपनी बुद्धि अनुसार वैद्य डाले, फिर सबकों एकजीव कर चार २ तोले के लड्डू बनावे इसको अपनी अग्नि का बलाबल विचारकर खावे और कोई भी पदार्थ न खावे। जब पहले दिनका किया भोजन पच गया हो तो भोजनसे पहले इसको खावे जो मनुष्य इस रतिवल्लभ पूगपाकको सेवन करता है वह बढे हुए वीर्यवाला और कामशक्तिके वेगवाला होकर घोडे की समान मैथुन करे। इसके सेवनसे निर्बल भी बलवान् होकर अति चैतन्य रहे, हृष्टपुष्ट हो और वृद्ध भी सुंदर पूर्ण चंद्रमाकी सदृश कांतिवाला होता है।।१७-२३।।

महाकामेश्वर पाक

एतस्मिनतिवल्लभे यदि पुनः सम्यक् खुरासानिका
धत्तूरस्य च बीजमर्ककरभा पाथोधिशोषस्तथा ।।
सन्माजूफलकं तथा खसफलं त्वक् चापि निक्षिप्यते
चूर्णार्द्धा विजया तदा स हि भवेत्कामेश्वराख्यानकः।२४।

इसी ऊपर कहे रतिवल्लभ पूगपाक में खुरासानी अजवानय, धत्तूरे

के बीज, अकरकरा, समुद्रशोष, माजूफल, खसखस, तज इन सबका चूर्ण करके मिलावे और इस चूर्ण से आधी भांग का चूर्ण मिलावे तो यह कामेश्वर पाक बने। यह पाक वीर्य को गाढ़ा और स्तंभन करता और कामशक्ति को बलवान् करता है॥२४॥

रत्तिवृद्धिकर मोदक

गोक्षुरेक्षुरबीजानि वाजिगंधा शतावरी ॥
मुसलीवानरीबीजं यष्टी नागबला बला ॥२५॥
एषां चूर्णं दुग्धसिद्धं गव्येनाज्येन भर्जितम् ॥
सितया मोदकं कृत्वा भक्ष्यं वाजीकरं परम् ॥२६॥
चूर्णादष्टगुणं क्षीरं घृतं चूर्णसमं स्मृतम् ॥
सर्वतो द्विगुणं खंडं खादेदग्निबलं यथा ॥२७॥

गोखरू, तालमखाने, असगंध, शतावर, मुसली, कौंच के बीज, मुलैठी, बला, नागबला इन सबका चूर्ण करके चूर्ण की बराबर गोघृत और चूर्ण से आठ गुणा दूध डालकर पकावे जब पककर खोवे की समान हो जाय तो इसमें दुगुनी शुद्ध मिसरी मिलाकर लड्डू बना लेवे जठराग्नि के बलानुसार खाय तो यह परम बाजीकरण है॥२५-२७॥

शतावरीपाक

शतावरी श्वदंष्ट्रा च बला चातिबला तथा ॥
मर्कटीक्षुरबीजं च विदारीकंदजं रजः ॥२८॥
एतानि समभागानि पलिकानि विचूर्णयेत् ॥
चूर्णाच्चतुर्गुणं चैव त्रैलोक्यविजयारजः ॥२९॥
एतदेकीकृतं यावत्तदर्धं माहिषं पयः ॥
तावन्मात्रेण दातव्यं शतावर्या रसं तथा ॥३०॥
विदार्याः स्वरसं प्रस्थं सितापलशतद्वयम् ॥

गोलयित्वा सितां चैव पात्रे ताम्रमये दृढे ॥३१॥
पाचयेत्पाकविद्वैद्यो मोदकः परमो हितः ॥
त्र्यूषणं त्रिफला शृंगी त्रिजातं सैंधव शठी ॥३२॥
धान्यक बालकं मुस्तं द्विजीरं कुंदरुर्मुरा ॥
काकोली क्षीरकाकोली कस्तूरी मृद्विका तुगा ॥३३॥
जातीकोषफलं मांसी पत्रं वारेंद्रग्रन्थिजम् ॥
शतपुष्पा च वीदारु प्रियंगुः सलवंगकम् ॥३४॥
सरल शैलजं कुष्ठं जातीपुष्पं यवानिकाम् ॥
कट्फलं केशरं मेथी मधुकं देवताडकम् ॥३५॥
मिषा तालीसपत्रं च खर्जूररसगन्धकम् ॥
त्रिसुगंधिसमायुक्तं कर्पूरेणाधिवासयेत् ॥३६॥
कोलप्रमाणं कर्तव्यं क्षीरं चापि पिबेन्नरः ॥
प्रमदादशकं गच्छेन्न च शुक्रक्षयो भवेत् ॥३७॥

सतावर, गोखरू, बला, अतिबला, कौंच के बीज, तालमखाने, विदारीकंद प्रत्येक चार २ तोले शुद्ध भांग का चूर्ण २८ पल, शुद्धखांड़, १०० पल, भैंस का दूध और शतावर का रस तथा विदारीकन्द का रस प्रत्येक ३२ पल, इन सबको मिलाके तांबे के पात्र में मन्द २ आंच से पकावे। जब पकते पकते गाढ़ा हो जावे तो त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिसुगन्ध, शृंगी, सेंधा, कर्चूर, धनियां, मोथे, सुगंधवाला, दोनों जीरे, कुंदरू, कपूरकचरी, काकोली, क्षीरकाकोली, दाख, वंशलोचन, जावित्री, जायफल, छड़, वारेंद्रपत्र, गठौना, सोये, चव्य, देवदारु, प्रियंगु, लौंग, सरल भूरीछरीला, कुठमीठा चमेली के फूल, अजवायन, कायफल, नागकेशर, मुलेठी, मेथी, देवताड, सौंफ, तालीसपत्र, खजूर, शुद्ध पारे

और शुद्ध गंधक की कजली, इन सबका चूर्ण कर उपरोक्त पाक में मिलावे फिर त्रिसुगंध और भीमसेनी कपूर से सुगंधित कर एक एक तोले का लड्डू बनावे इस लड्डू को प्रातः काल खाकर दूध पीवे और पथ्य से रहे खटाई न खावे तो उस मनुष्य का कभी वीर्य क्षीण न होय और दश स्त्रियों से मैथुन करने पर भी शिथिलता न हो।।२८-३७।।

रतिवल्लभविजयापाक

समूलपत्रशाखायास्तुलां शक्राशनस्य च ।।
संरुघ्योलूखले छित्त्वाऽपां द्रोणे हि तथा च वै ।।३८।।
क्वाथं पादावशिष्टं तु वस्त्रपूतं च कारयेत् ।।
क्षीरप्रस्थं समादाय खडस्यार्द्धं शतं न्यसेत् ।।३९।।
शतावरी रसस्याष्टौ पिप्पल्याः कुडवस्तथा ।।
सर्वमेतत्समालोडच घृतप्रस्थेन मेलयेत् ।।४०।।
ओषधीनां ततश्चूर्णं दापयेत्कलिकं पृथक् ।।
त्रिकटु त्रिफला चव्यमेलात्वक्पत्रकेशरम् ।।४१।।
चित्रकं पिप्लीमूलं धान्यकाजाजिमेथिका ।।
कुष्ठाब्दरेणुकाव्योषं भार्ङ्गी तालीशकेशरा ।।४२।।
तालमूली त्रिवृद्दंती श्रेयसी हिंगु पौष्करम् ।।
लवंगजातिकोषं च यमानी कारवी तथा ।।४३।।
शुभा जातिफलं चंद्रं भृंगी चैव विदारिका ।।
अष्टवर्गं च काकोलं श्लक्ष्णचूर्णं च कारयेत् ।।४४।।
गुडवद्विपचेद्वैद्यो मोदकं कारयेत्ततः ।।
अक्षमात्रं च जग्ध्वैषां शीतलं पाययेज्जलम् ।।४५।।
नाशयेच्छुक्रदोषं च षंढं चैवातिदारुणम् ।।
श्रीकरं लाघवकरं मेधाबुद्धिप्रवर्द्धकम् ।।४६।।

भांग के मूलपत्र शाखासमेत सब लेकर कूट लेवे ऐसी कुटी भांग ६। सवा छः सेर ३२ सेर पानी में पकावे, जब ८ सेर पानी बाकी रहे उसको शुद्ध वस्त्र में छान लेवे फिर इसमें गोदूध २ सेर बूरा ६। सेर, शतावर का रस १ सेर पिप्पली का क्वाथ १ सेर, घी २ सेर, सब मिलाके पकावे जब पकते पकते गाढ़ा हो जाय तो इसमें त्रिफला, त्रिकुटा, चव्य, छोटी इलायची, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, चित्रक, पीपलामूल, धनियां, जीरा, मेथी, मीठाकूठ, मोथे, रेणुका, त्रिकुटा, भार्ङ्गी, तालीसपत्र, नागकेशर, मुसली, निशोत, दन्ती, गजपीपल, हींग, पौष्करमूल, जावित्री, अजवायन, सौंफ, पीपल, जायफल, कपूर, काकड़ासिंगी, विदारीकन्द, अष्टवर्ग (जीवक, ऋषभक, मेंदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धी वृद्धी), शीतलचीनी, प्रत्येक का चूर्ण चार २ तोले मिलाके गुडपाक विधि से पकाकर दो २ तोले के लड्डू बनावे एक लड्डू खाकर ऊपर से थोड़ा जल पीवे तो अतिदारुण नपुंसकता दूर हो वीर्य के सब विकार दूर होकर पुरुषार्थ बढ़े ।।३८-४६।।

खण्डकूष्माण्डूक

पुराणं पीनमानीय कूष्माण्डस्य फलं महत् ।।
तद्बीजाधारबीजत्वक् शिराशून्यं समाचरेत् ।।४७।।
ततस्तस्य तुलां नीत्वा पचेज्जलतुलाद्वये ।।
तस्मिन्नीरेऽर्धशिष्टे तु यत्नतः शीतलीकृते ।।४८।।
तानि कूष्माण्डखण्डानि पीडयेद्दृढवाससा ।।
यत्नतस्तज्जलं नीत्वा पुनः पाकाय धारयेत् ।।४९।।
कूष्माण्डं शोषयेद्धर्मे ताम्रपात्रे ततः क्षिपेत् ।।

क्षिप्त्वा तत्र घृतं प्रस्थं कूष्मांडं तेन भर्जयेत् ॥५०॥
मधुवर्णं तदालोक्य तज्जलं तत्र निक्षिपेत् ॥
सितायाश्च तुलां तत्र क्षिप्त्वा तल्लेहवत्पचेत् ॥५१॥
सुपक्के पिप्पलीशुंठीजीराणां द्विपले पृथक् ॥
पृथक् पलार्द्धं धान्याकं पत्रैलामरिचं त्वचम् ॥५२॥
चूर्णमेषां क्षिपेत्तत्र घृतार्धं क्षौद्रमावपेत् ॥
एतत्पलमितं खादेदथवाग्निबलं यथा ॥५३॥
खण्डकूष्मांडलेहोयं रक्तपितं च नाशयेत् ॥
हति कासक्षयादींश्च बलवीर्यविवर्द्धनः ॥५४॥

बड़े पके हुवे पेठे के शुद्ध छिले हुए टुकड़े १०० पल लेकर २०० पल जल में पकावे, जल आधा बाकी रहे उतारकर ठंडा करके साफ वस्त्र से खूब दवाकर छान लेवे, उस छने हुवे जल को अलग एक पात्र में रख देवे और उन पेठे के टुकड़ों को कुछेक धूप में सुखाकर एक तांबे के पात्र में १ सेर घी डालकर मन्द आंच से भूनता जाय जब पककर लाल हो जावे फिर वह नुचड़ा हुवा अवलेह की भांति पकावे, सिद्ध होने पर इसमें पीपल, सोंठ, जीरा, प्रत्येक दो पल धनियां, पत्रज, इलायची, मिर्च तज, प्रत्येक दो तोले इन सबका चूर्ण करके डाल देवे और खूब मिलाकर ठंडा कर ले ठंडा होने पर आधा सेर शुद्ध शहद भी इसमें मिला दे यह खण्डकूष्मांडावलेह बना इसमें से ४ तोले या जितना माफिक होवे इसको नित्य प्रातः काल खावे तो रक्तपित, खांसी, राजयक्ष्मा, क्षय आदि रोग दूर हों और बल तथा वीर्य की वृद्धि होवे॥४७॥५४॥

व्योषं चतुर्जातफलत्रिकं च लवंगकृष्णागरुचंदनं च ॥
कांडेक्षुबीजं करहाटकं च जातीफलं मर्कटिकाफलं च ॥५५॥

शाल्मल्यनिर्यासबलाश्वगंधागोक्षूरबीजंमुसली कृमिघ्नम् ॥
समुद्रशोषं विषपंजरं च पुष्पं सजात्युद्भवकंकबीजम् ॥५६॥
सर्वैः समंयोज्य सकुंकुमं च सुचूर्णितं विंशतिभागयुक्तम् ॥
कस्तूरिकाषोडशभागचूर्णं खंडं चतुर्भागयुतं विपक्वम् ॥५७॥
दलानि हेम्नो द्विशतानि दत्त्वा तथैव देयानि च राजतानि ॥
एकत्र सर्वंविनिधाय वैद्यो जयाष्टभागं विदधीत लेहम्॥५८।
जातीफलप्रमाणेन भक्षयेत्प्रातरुत्थितः ॥
वीर्यवृद्धिं करोत्येष सर्वव्याधिविनाशनः ॥५९॥
दशकं रमते स्त्रीणां वृद्धोपि तरुणायते ॥
सर्वान्वातामयान्हंति प्रवृद्धं वातशोणितम् ॥
काश्मीरकावलेहोयं बलकांतिविवर्द्धनः ॥६०॥

त्रिकुटा, चतुर्जात, त्रिफला, लौंग, सफेद चंदन, कालाअगर, तालमखाने, अकरकरा, जायफल, कौंच के बीज, सेमल का गोंद, गुलशकरी, असगंध, गोखरू, मुसली, वायविडंग, समुद्रशोष, विषपंजर, जावित्री, खरैंटी ये सब समान भाग लेवे और केशर सब दवाइयों के चूर्ण से बीसवां भाग लेवे और कस्तूरी सबसे सोलहवां भाग लेवे। सब दवाइयों से चौगुनी शुद्ध खांड लेवे। खांड़ की चासनी बनाकर उसमें विधिपूर्वक सब दवाइयों का प्रक्षेप करे फिर २०० वर्क सोने के और २०० चांदी के इसी में मिलावे और केशर से आठवां भाग विजया (शुद्ध भाँग) का बारीक चूर्ण मिलाकर एकजीव करके रखे, फिर इसमें जायफल के बराबर नित्य प्रातःकाल शुद्ध होकर खावे। यह केशरपाक वीर्य को बढ़ावे और अनेक रोगों को दूर करता है। दश स्त्री से नित्य रमण का सामर्थ्य पैदा करे, इसके प्रभाव से बुड्ढा भी जवान की सदृश मैथुन करे। सब किस्म के वातविकार और बढ़ा हुआ वातरक्त इनको

दूर करे। यह केशरावलेह बल और शरीर की कांति को बढ़ानेवाला है।।५५-६०।।

अमृतभल्लातकपाक

भल्लातकानां पवनोत्थितानां तरुच्युतानां च यदाढकं स्यात् ।। घृष्ट्वेष्टिकाचूर्णकणैर्जलैश्च प्रक्षाल्य संशोष्य च मारुतेन।।६१।। शुष्काणितानिद्विदली-कृतानि विपाचयेदप्सु चतुर्गुणासु ।। तत्पादशेषं पुनरेव शीतं क्षीरेण तुल्येन विपाचयेत्तत् ।।६२।। तदर्द्धया शर्करया विमिश्र्य- पश्चात्खजेनोन्मथनं विधाय ।। सत्र्यूषणंत्रैफलचंद्रमासीत्रिवृच्चवासी खदिरामृतं च ।।६३।। सचंदनाकल्लकणाकबावं सदेवपुष्पं मुसलीद्वयं च ।। कंकोलमोवाह्वयदीप्ययुग्म नतं समातंककणा-विदारी ।।६४।। जातीफलं मुस्तकजातिपत्री कुबेर-जीरागरुसाब्धिशोषम् ।। मेदाद्वयं लोहरसेंद्रवंगमभ्रं तथा कुङ्कुमकं च कर्षम्।।६५।। तत्सप्तरात्रादतिजात-वीर्यं सुधारसादप्यधिकं वदंति ।। प्रातः प्रबुद्धः कृतदेवकार्योमात्रांभजेत्सात्म्यशरीरयोग्याम् ।।६६।। न चानुपाने परिहार्यमस्ति नचातपे नाध्वनि मैथुने च ।। यथेष्टचेष्टो विचरेत्प्रयोगान्नरो भवेत्कांचनराशिगौरः ।।६७।। अनेन मेधानरसिंहवीर्यो दृढेंद्रियो व्याधिगतः सुबुद्धिः ।। दंताविशीर्णाः पुनरेव दिव्याः केशाश्चशुभ्राः पुनरेवकृष्णाः ।।६८।। नीलांजनालिप्रतिमा भवंति त्वचो विशीर्णाः पुनरेव भव्या ।। विशीर्णकर्णांगुलिना-सिकोपिकृम्यर्दितो भिन्नगलोऽपि कुष्ठी ।।६९।। शुष्कः

पुनः स्यादृगतमूलशाखस्तरुर्यथा भाति नवांबुसिक्तः ।। बृहस्पतेरप्यधिको हि बुद्ध्या ग्रंथं विशालं च नवं करोति ।।७०।। गृह्णाति सद्यो न च विस्मृतिं च करोति कल्पायुरनल्पवीर्यम् ।। कुर्वन्निमं कल्पमनल्पबुद्धिजी-वन्नरो वर्षशतं सुखी स्यात् ।।७१।।

पके भिलावे जो पवन से टूटकर गिरे हों ४ सेर लेकर ईंट के चूर्ण में घिसकर शुद्ध जल से धोकर पवन से सुखा लेवे। जब सूख जावें तो एक एक के दो टुकड़े करके १६ सेर पानी में पकावे। जब चार सेर पानी बाकी रहे, उतारकर ठंडा करे। फिर उसमें चार सेर दूध मिलाके पकावे, पकने पर दो सेर मिसरी मिला के मथानी से मथ डाले फिर इसमें त्रिकुटा, त्रिफला, कपूर,जटामांसी, निसोथ, वंशलोचन, खैरसार, सिंगियाविष, सफेदचन्दन, अकरकरा, पीपल, कबावचीनी, लौंग, सफेदमुसली, स्याहमुसली, कंकोल, मोचरस, अजवायन, अजमोद, छड़, गजपीपल, विदारीकंद, जायफल, नागरमोथा, जावित्री, लताकरंज, अगर, जीरा, समुद्रशोष, मेदा, महाभेदा, लोहभस्म, चंद्रोदय, अभ्रक, केशर प्रत्येक एक एक तोला लेकर सबका चूर्ण उसी पाक में मिला देवे। एक जीव करके चिकने बर्तन में भरकर सात दिन ढ़ककर रखा रहने देवें तो यह अमृत से भी अधिक गुणसंपन्न अमृतभल्लातकपाक सिद्ध हो गया। इसमें से प्रातः काल शौचादि कर्मों से निवृत्त होकर जितनी ठीक पच सके, उतनी मात्रा से खावे। ऊपर से गर्म जल का घूंट पी लेवे। इसका न कोई अनुपान है और धूप में चलना, मैथुन, आहार विहार का कोई परहेज नहीं, यथेच्छ रहे, इसके प्रभाव से मनुष्य सुवर्ण सदृश कांतिमान् रूपवाला हो, बुद्धि बढ़े, नरसिंहसमान बल हो, इंद्रिय दृढ़ होंवे, सब राग दूर हों, गिरे दांत फिर पैदा हों। सफेद बाल भौंरे के

समान काले हों, गुलजटियें दूर हों, त्वचा मजबूत हो। जिसके कान नाक उंगली गिर गये हों, कृमि पड़ रहे हों, गला बैठ गया हो, उस मनुष्य को इसके सेवन से ऐसा आराम हो जैसे जड़ शाखाहीन वृक्ष जल के संयोग से हरा हो जाता है। इस प्रकार इसके खानेवाला मनुष्य भी सब रोगरहित रूपवान् हो जाता है और बृहस्पति के समान बुद्धिवाला हो। नया ग्रन्थ रचने की सामर्थ्य हो, बात सुनते ही धारण करे, भूले नहीं, कल्पायु हो, अधिक वीर्यवान् हो। इस भिलावे कल्प के सेवन से सौ १०० वर्ष निरोग होकर जीवे।।६१-७१।।

खोपड़ापाक

गोलकं नारिकेलस्य पाचयेच्च विधानतः ।।
पलार्द्धमिक्षुरबीजांस्तस्मिन्दत्त्वा विभावयेत् ।।७२।।
वटदुग्धेन संपूर्य दुग्धे वसुगुणे पचेत् ।।
चतुर्पले घृते भृष्ट्वा सिते प्रस्थे च मेलयेत् ।।७३।।
संस्कृत्य विधिवत्पाकं चूर्णानेतान् क्षिपेत्ततः ।।
जातिपत्रं लवंगं च वंगं जातीफलं तथा ।।७४।।
गोक्षुराकरभौ सुंठी कपिकच्छुं बलां त्वचम् ।।
मधुयष्टीं चोच्चटां च चूर्णं कृत्वा च प्रक्षिपेत् ।।७५।।
शीते मधु प्रदातव्यं कुडवैकप्रमाणतः ।।
स्निग्धे भांडे निधायाथ मात्रा पलमिता भवेत् ।।७६।।
अथवाग्निबलं दृष्ट्वाऽनुपानं पयसश्चरेत् ।।
नारिकेलस्य पाकोयं वाजीकरणमुत्तमम् ।।७७।।

एक उत्तम नया नारियल का गोला लेकर उसको युक्ति से ऐसा काटे कि कटा हुआ टुकड़ा फिर उसी खोपड़े के मुँह पर लग जावे जिसमें से जिस जगह से काटा हो। फिर इसमें दो तोले तालमखाने का चूर्ण

डालकर इसको वड़ के दूध में भर देवे, फिर इस तालमखाने युक्त गोले से आठ गुने दूध में उसको डालकर खोवा करे और खौंच से खूब रगड़े ताके यह खोपड़ा भी दूध में मिल जावे, यदि कुछ बाकी रहे तो उसे पत्थर से पीस डाले फिर इसमें १६ तोले शुद्ध घी डालकर मंद आँच से भून लेवे फिर १ सेर मिसरी की तेज चासनी में इस खोवे को डाल देवे फिर इसमें, जावित्री, लौंग, वंगभस्म, जायफल, गोखरू, अकरकरा, सोंठ, कौंच के बीज, खरैंटी, मुलैठी, उटंगण के बीज, प्रत्येक १।। तोला लेकर चूर्ण करके मिलावे। फिर ठंडा होने पर १६ तोले शहद मिलाकर चिकने बर्तन में रखे। इसमें से चार तोले अथवा जितना माफिक आवे, खाकर ऊपर से दूध पीवे। यह नारिकेलपाक वीर्यबल करनेवाला नपुंसकता आदि दोषों का हरनेवाला है और परम वाजीकरण है।।७२-७७।।

मेथीपाक

मेथीप्रस्थमिता पलद्वयमितं चूर्णं वरीसम्भवं
त्वक्पत्राऽनलविश्वजीरमगधाद्राक्षाशिवागोक्षुरम् ।।
धात्रीनागकणाप्रियंगुमुसलीकीनाशबीजैः समैः
पिष्टैः सूक्ष्मतरं पलैकतुलितैः सर्वैः पृथक्पाचयेत् ।।७८।।
गोदग्धेन चतुर्गुणेन विधिना मंदाग्निना वैद्यराट्
यावत्तद्धनतामियादथ ततः सर्वद्विभागा सिता ।।
पाच्यापाच्यसुशीतमेतदखिलं दृष्ट्वातदेलाद्वयं ।
मज्जाचारुभवाथ देवकुसुमं खार्जूरवातादकम् ।।७९।।
जातीपत्रसमं विदल्यदलितं प्राग्गोघृतैर्भर्जिते
युक्तांशैरवधूल्यमेव सकलं तन्मोदकान्कल्पयेत् ।

वंगाभ्रेण पलार्द्धकेन सहितान्संभक्ष्य यावद्बलं ।
कांतासंगविलासभोगचपलो वृद्धो युवा वै भवेत् ॥८०॥

मेथी का चूर्ण १ सेर, सतावर १० तोले, तेजपत्र, चित्रक, सोंठ, सफेद जीरा, पीपल, दाख, हरड, गोखरू, आमले, गजपीपल, प्रियंगु, मुसली, कौंच के बीज प्रत्येक चार चार तोले लेकर सबका चूर्ण करके सबसे चार गुणे दूध में डालकर खोवा करे फिर आधसेर घी में दस औषधियुक्त खोवे को भूने जब मंद मंद आँच से भुनकर तैयार हो जावे फिर इसको दुगुनी खांड की चासनी में मिलावे। जब देखे कि ठीक पाक तैयार हो गया फिर नीचे उतार लेवे और ठंडा करे तथा इसमें छोटी इलायची और बड़ी इलायची, पिस्ता, लौंग, छुवारा, बादाम, चिरौंजी, जावित्री प्रत्येक १ तोला मिलावे। वंगभस्म, अभ्रकभस्म ये दोनों २ तोले मिलावे, फिर इसके लड्डू बनाकर जठराग्नि का बलाबल विचारकर खावे तो बूढ़ा मनुष्य भी युवा हो और स्त्रीसंग में बड़ी चपलता दिखावे॥७८-८०॥

आमलापाक

सुपक्वधात्रीफलशुष्कचूर्णं पुनः पुनस्तद्रसभावितं च ॥ शतैकवारान्परिशोष्य पश्चाद्धृतेन तुल्येन सिताद्वयेन ॥८१॥ घृतार्द्धभागेन च माक्षिकेण विधाय पाकं सह दुग्धपानैः ॥ भुंजीत यस्त्वाशु च कामिनीनां दशं तु विद्रावयते पुरस्तात् ॥८२॥

अच्छे पके हुए सूखे आमलों का एक सेर चूर्ण लेकर गीले आमलों के रस में भिगो भिगो कर सुखावे। इसी तरह १०० दफा सुखाकर इसमें १ सेर उत्तम घी, २ सेर मिसरी, आधसेर शहद मिलाकर बल के अनुमान खाकर दूध पीवे। इसके प्रभाव से मनुष्य दश स्त्रियों को द्रावित कर

सकता है।।८१।।८२।।

खर्जूरप्रस्थ मगधापलैकं दुग्धेन संपाच्य चतुर्गुणेन ।।
घृतेन संभर्ज्य पलाष्टकेन द्राक्षाश्वगंधामुसलीद्वयेन ।।८३।।
लवंगजातीफलजातिपत्रीपत्राबलाकेशरकैः समांशैः ।।
सर्वद्विभागासुसितासमेतं वंगाभ्रलोहैस्तुपलार्द्धमानैः ।।८४।।
मज्जात्रयाक्षोटककाश्मरीभिः साकं विधायास्यच मोदकान्यः ।। पुष्टस्तुहृष्टः प्रमदामदघ्नोभुंजीत-वैरोगगणप्रसुक्तः ।।८५।।

छुवारा १ सेर (बिना गुठली), पीपल का चूर्ण ४ तोले इन दोनों को ४ सेर दूध में पकावे, जो गाढ़ा हो जाय तो आध सेर घी में मंद मंद आंच में खूब भूने, फिर इसमें मुनक्का, असगन्ध, दोनों मुसली, लौंग, जायफल, जावित्री, पत्रज, वला, केशर, प्रत्येक दो दो तोले लेकर चूर्ण करे फिर सब औषधियों से दुगुनी खांड की चासनी करके उस चासनी में सब दवाइयों को मिला देवे और वंगभस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, प्रत्येक दो दो तोले डाले फिर बादाम, पिस्ता, चिरौंजी, अखरोट की गिरी, किसमिस मिलाकर लड्डू बनावे। इनके खाने में मनुष्य हृष्टपुष्ट हो, गर्ववती स्त्रियों के मान को भंजन करे और सब रोगों से रहित रहे।।८३-८५।।

मुशलीपाक

सुतालमूलीद्वयचूर्णमेव सुवस्त्रपूतं विनिगृह्य प्रस्थम् ।। गोदुग्धप्रस्थैर्वसुभिश्च पाच्यं यावद्घनं तत्प्रसमीक्ष्य सर्वम् ।।८६।। पलाष्टकेनाथ घृतेन भृष्ट्वा पलैकमानानि तथौषधानि ।। संवक्ष्यमाणानिगुरूक्तयुक्त्या खंडं द्विमानं सकलौषधीभ्यः ।।८७।। गोकंटकं चेक्षुशतावरीभ्यां शिवाकः

णावानरबीजपत्रैः ।। लंवगखाजूरसुजातपत्रीमज्जत्रयैश्चदन-गोस्तनीभ्याम् ।।८८।। जातीफलैलानतवंगयुक्तं ग्राह्यं यथोक्तं सकलं पलैकम् ।। पलद्वयं मोदकमस्य प्रातः सायं समश्नाति समाक्षिकाज्यम् ।।८९।। वृद्धोपि तारुण्ययुतस्तरुण्या युक्तोपि चान्यास्तरुणीरिरंसुः ।। वीर्यप्रमोदैर्बलपौरुषाभ्यां युक्तः-सुदृग्रोगगणैर्विमुक्तः ।।९०।।

दोनों मुसलियों का चूर्ण १ सेर लेकर वस्त्र में छान ले। फिर ८ सेर गोदुग्ध में डालकर खोवा कर लेवे फिर इस खोवे को आधसेर घी में भून लेवे फिर युक्तिपूर्वक इसमें गोखरू, तालमखाने, शतावर, हरड, पीपल, कौंच के बीज, पत्रज, लौंग, छुवारा, जावित्री, बादाम, पिस्ता, चिरौंजी, चन्दन, दाख, जायफल, छोटी इलायची, वंगभस्म, प्रत्येक का चूर्ण चार चार तोले, खांड सब औषधियों से दुगुनी डालकर विधिपूर्वक पाक बनावे। इसमें से ४ तोले के लड्डू सबेरे और चार तोले सायंकाल घृत और सहत मिलाके खावे तो वृद्ध पुरुष भी तरुण की समान स्त्री से मैथुन करे और मैथुन करता हुआ भी और स्त्रीरमण की इच्छा करे और बल तथा वीर्य की वृद्धि हो। आनंद और पुरुषार्थ से युक्त हो, आंखों के सब रोग दूर हों।।८६-९०।।

बादामपाक

मज्जां वातादजं पिष्ट्वा प्रस्थार्धं मानतो बुधः ।।
प्रस्थैकं च सितां पक्त्वा विधिना मेलयेत्ततः ।।९१।।
पलद्वयं घृतं दत्त्वा चूर्णनेतांश्च संक्षिपेत् ।।
एलाद्वयं जातिफलं लवंगं केशरं त्वचम् ।।९२।।
कर्षकर्षप्रमाणेन चूर्णयित्वा विमेलयेत् ।।९३।।
मज्जाद्वयं पलैकैकं दलांश्चाथ सुवर्णजान्

राजताञ्छतमानेन संमेल्य विधिना ततः ॥
पंचकर्षप्रमाणेन मोदकान्कारयेद्बुधः ॥९४॥
धनिनां पुरवासानां भक्षणार्थं हि शोभनम् ॥
बलवृद्धिकरं शश्वद्वाजीकरणमुत्तम् ॥९५॥

छिली बादाम की गीरी की पीठी आध सेर, शुद्ध मिसरी १ सेर लेकर विधिपूर्वक चासनी करे, इस चासनी में १० तोले शुद्ध घृत मिलावे फिर बादाम की पीठी भी इसी में मिला देवे. फिर छोटी इलायची, बड़ी इलायची, जायफल, लौंग, केशर, दालचीनी एक एक तोला लेकर इनका बारीक चूर्ण इसी में मिलावे। चिरौंजी ५ तोले, पिस्ता ५ तोले मिलावे और १०० वर्क सुवर्ण के तथा १०० वर्क चांदी के मिलाकर पांच पांच तोले के लड्डू बनावे। यह लड्डू धनिक पुरुषों के और शहरों में रहनेवाले पुरुषों के लिये बहुत अच्छे हैं। बल को बढ़ानेवाले और कामशक्ति को बलवान् करनेवाले हैं॥९१-९५॥

मलाईपाक

सतानिकाह्यर्द्धप्रस्थं सितां प्रस्थां च संपचेत् ॥
चतुर्पलं घृतं दत्त्वा कुर्यात्पाकं विधानतः ॥९६॥
एलाद्वयं जातिपत्रीं काश्मीरं च लवंगकम् ॥
प्रत्येककर्षमाचूर्ण्य दलांश्चैव सुवर्णजान् ॥९७॥
राजतान्मेलयित्वा च मोदकान्पलसम्मितान् ॥
कारयित्वा विधानेन भक्षयेद्धनवांस्ततः ॥
वीर्यवृद्धिकरं शश्वद्वाजीकरणमुत्तमम् ॥९८॥

उत्तम दूध की मलाई आधसेर, घी १ पाव, शुद्ध देशी मिसरी १ सेर, इन सबको मिलाकर मन्द आंच पर विधिपूर्वक पाक बनावे फिर इसमें छोटी इलायची, बड़ी इलायची, जावित्री, केशर, लौंग प्रत्येक एक एक

तोला मिलावे और यथासंभव सुवर्ण के वर्क और चांदी के वर्क मिलाके पांच २ तोले के लड्डू बनावे फिर प्रातःकाल और सायंकाल इच्छापूर्वक धनिक पुरुष खावे इसके खाने से वीर्य की वृद्धि हो तथा कामशक्तियुक्त बलवान् हो॥९६-९८॥

पिट्ठीपाक

प्रस्थैकं माषजां पिष्टिं प्रस्थार्द्धं मुद्गजं तथा ॥
गोदुग्धेन च वै चूर्णमर्द्धप्रस्थप्रमाणतः ॥९९॥
घृते समे विभज्याथ सर्वांश्चैव पृथक्पृथक् ॥
पाकं चैव विधायाथ शर्कराप्रस्थकत्रयम् ॥१००॥
पाकं कृत्वा विधानेन पश्चाच्चूर्णांश्च मेलयेत् ॥
मुशलीद्वयमिक्षुं च अश्वगंधां शतावरीम् ॥१०१॥
वृद्धदारुं कपीकच्छुं पलैकांश्चूर्णयेत्पृथक् ॥
जातीफलं जातिकोशं आकारकरभं त्वचम् ॥१०२॥
लवंगं चैव काश्मीरं तथैव नागकेशरम् ॥
वंगमभ्रं च संमेल्य कर्षकर्षप्रमाणतः ॥१०३॥
कारयित्वा विधानेन द्विपलिकांश्च मोदकान् ॥
प्रातर्नित्यं भक्षणीयं पाकोयं पिष्टिसंभवः ॥१०४॥
कटीशूलं च कार्श्यं च नाशयेन्नात्र संशयः ॥
बलवृद्धिकरं शश्वद्वाजीकरणमुत्तमम् ॥१०५॥

उत्तम उड़द की दाल की बारीक पिसी पीठी १ सेर, मूंग की दाल की पीठी आध सेर, कणकका आटा आधसेर इनको अलग अगल बराबर २ के घी में विधिपूर्वक भून लेवे फिर तीन सेर उत्तम देशी खांड की चासनी करे जब समझे कि चासनी तैयार हो गई तब तीनों चीज भुनी हुई और यह खांड की चासनी दोनों को खूब मिला देवे और इसमें

दोनों मुसली तालमखाने, असगंध, सतावर, विधायरा, कौंच के बीजों की गिरी, प्रत्येक का चूर्ण चार २ तोले जायफल, जावित्री अकरकरा, दालचीनी, लौंग, केशर, नागकेशर, वंग, अभ्रक प्रत्येक एक एक तोला मिलावे सबको अच्छी तरह से मिलाकर दश दश तोले की पिन्नी बनावे इस पिट्ठीपाक को नित्य प्रातःकाल खावे तो कृशता कमर की पीड़ा दूर होवे बल की वृद्धि हो कामशक्ति बलवान् हों वीर्य बढ़े यह परमोत्तम पाक है इसमें संशय नहीं।।९९-१०५।।

एवं पाकविधानं च तरंगेऽस्मिन्हि वर्णितम् ।।
ज्ञातव्यं तात विधिना बलवृद्धिकरं महत् ।।१०६।।

इस प्रकार पाकों के विधान को इस तरंग में वर्णन कर चुके हैं हे तात! इसको तुम विधिपूर्वक समझ लेना यह पाकावली परम बलवीर्य की बढ़ानेवाली है।।१०६।।

इति श्रीवैद्यपंचानन पं० रामप्रसादप्रणीतनपुंसकामृतार्णवे वाजीकरणपाक-वर्णनो नाम चतुर्थस्तरंगः ।।४।।

अथ पञ्चमस्तरंगः

गुटिकारसादिवर्णनम्

शिष्य उवाच

अथ गुटिका रसांश्चैव पुरुषार्थप्रदायकान् ।।
वीर्यवृद्धिकरांश्चैव ब्रूहि मे भिषजां वर ।।१।।

इसके उपरान्त शिष्य बोले हे भिषजांवर! वीर्य के बढ़ानेवाली और पुरुषार्थ के देनेवाली गोलियों और रसों का वर्णन कीजिये।।१।।

गुरुरुवाच

तमुवाच गुरुर्धीमानायुर्वेदस्य पारगः ॥
विधिवच्छ्रुयतां शिष्य गुटिकाश्च रसांस्तथा ॥२॥

इस प्रश्न को सुनकर आयुर्वेद को जाननेवाले गुरु शिष्य को कहने लगे हे शिष्य! अब विधिपूर्वक नपुंसकता को नष्ट करनेवाली गोलियां और रसों का वर्णन सुनो ॥२॥

बहुफली मोचरसं मुसल्यौ करहाटकम् ॥
तुगा च मर्कटी बीजं कोकिलाक्षमुटंगणम् ॥३॥
गोक्षुरं ह्यमृतासत्त्वं जपापुष्पं लिसोरकम् ॥
मस्तंगी जातिकोशं च लवंगं वंशजातकम् ॥४॥
एतानि समभागानि सिता च द्विगुणा भवेत् ॥
पाकं कृत्वा गुटीर्बद्ध्वा कोलमात्रप्रमाणतः ॥५॥
सायंकाले भक्षयित्वा पिबेद्दुग्धं तदोपरि ॥
नपुंसकत्वरोगघ्नं वाजीकरणमुत्तमम् ॥६॥

बबूर के बीज, मोचरस, दोनों मुसली, अकरकरा, वंशलोचन, कौंच के बीज, तालमखाने, उटंगण के बीज, गोखरू, गिलोयका सत, जपा के फूल, लिसोड़े, मस्तंगी, जावित्री, लौंग, वंशलोचन, इन सबको समानभाग लेकर चूर्ण करे फिर सबसे दुगुनी मिसरी की चासनी में मिलाकर छः मासे की गोली बनावे नित्य सायंकाल खाकर ऊपर से दूध पीवे तो नपुंसकता दूर हो, वीर्य की वृद्धि हो॥३-६॥

वाजीकरणगुटिका

करवीरस्य बीजानि बृहतीफलमेव च ॥
वृद्धदारस्य बीजानि वानरीबीजमूलकम् ॥७॥

एतानि समभागानि सूक्ष्मच्चूर्णानि कारयेत् ।।
संमर्द्य तांबूलरसे वटीवल्लयुगं कृतम् ।।८।।
एकैकं भक्षितं पुंसां नपुंसकगदापहम् ।।
वीर्यवृद्धिकरं पुष्टं बलवाजीकरं परम् ।।९।।

कटेरी के बीज, कनेर के बीज, विधायरे के बीज, कौंच के बीज, मूली के बीज, इन सबका बारीक चूर्ण करके बंगला पान के रस में खरल करके एक एक मासे की गोली बनावे एक गोली नित्य खाकर दूध पीवे तो नपुंसकता दूर हो बलवीर्य की वृद्धि हो।।७-९।।

चन्द्रोदयरस

पलं मृदुस्वर्णदलं रसेंद्रात्पलाष्टकं षोडश गंधकस्य ।।
शाणैस्तुकार्पासभवैःप्रसूनैसर्वांविमर्द्याथकुमारिकाद्भिः।।
तत्काचकुंभे निहितं सुगाढे मृत्कर्पटैस्तद्दिवसत्रयं च ।।
पचेत्क्रमाग्नौ सिकताख्ययंत्रे ततो रसःपल्लवरागरम्यः।।
सौवर्णमेतत्सकलामयघ्नं सर्वेषु योगेषु च योजनीयम् ।।
निगृह्य चैतस्य पलं पलानि चत्वारि कर्पूररजस्तथैव।।
जातीफलं चोषणमिंद्रपुष्पं कस्तूरिकायामिह शाण एकः।।
चंद्रोदयोयंकथितोस्य माषोभुक्तोहिवल्लीदलमध्यवर्त्ती।।
मदोद्धतानां प्रमदागणानां गर्वायिकत्वं श्लथयत्यवश्यम्।।
भृतं घनीभूतमतीवदुग्धमानंददायीन्यपराणि पथ्यम्।।

उत्तम कुन्दनसुवर्ण के वर्क ४ तोले, शुद्ध पारा ३२ तोले, शुद्ध गन्धक ६४ तोले, इनकी कजली करके लाल फूल की कपास के फलों के रस में खरल करे। फिर घिकुँवार के रस में ४ प्रहर खरल करे फिर आतशी शीसी में भरके उस शीसी पर ७ कपड़मिट्टी करके वालुकायन्त्र में रख के नीचे आग देवे। जब शीसी के मुख से धूंवा निकल जावे तब ईंट के

टुकड़े से शीसी का मुख बन्द कर देय और क्रम से मंद, मध्य, तीक्ष्ण आंच तीन दिन रात्रि देवे जब शीसी की नली काली हो जाय तो नीचे से आग निकाल देवे फिर स्वांगशीतल होने पर सिद्धचन्द्रोदय को नवीन पत्र की लाली की समान लाल रंग के चंद्रोदय को शीसी फोड़कर निकाल लेवे इसको सर्व रोगों में अनुपान भेद से देवे चन्द्रोदय ४ तोले, भीमसेनी कपूर १६ तोले, जायफल, लौंग, कालीमिर्च यह १६ तोले लेवे और कस्तूरी ४ मासे लेवे सबको खरल करके शीसी में भर के रखे इसमें एक मासा पान में रखके खाय तो मदमाती स्त्रियों के गर्व को अवश्य दूर करे इसके ऊपर कढ़कर गाढ़ा हुवा दूध पिये और घृत मिसरी चावल, माष आदि आनन्ददायक पथ्य भोजन करें।।१०-१४।।

लघुचंद्रोदय रस

जातीफलं लवंगं च कर्पूरं मरिचं तथा ।।
प्रत्येक तोलकं दत्त्वा सुवर्णस्य च माषकम् ।।१५।।
अंडजं माषमानं च सर्वतुल्यमथेश्वरम् ।।
यत्नतो मर्दयेत्खल्वे चर्तुर्गुंजावटीं चरेत् ।।१६।।
एष चंद्रोदयो नाम रसो वाजीकरः परः ।।
हंति रोगानशेषांश्च बलवीर्याग्निवर्द्धनः ।।१७।।

जायफल, लौंग, भीमसेनी कपूर, कालीमिर्च, प्रत्येक एक एक तोला, सुवर्ण के वर्क एक मासा, कस्तूरी एक मासा, रससिंदूर ४।। तोले सबको एकत्र करके खरल करे पान के रस में चार चार रत्ती की गोलियां बनावे मलाई के संयोग से खाय ऊपर दूध पीवे यह चंद्रोदय रस वाजीकरण करता है तथा सर्व रोगों को नष्ट करे। बल, कांति, वीर्य, जठराग्नि इनको बढ़ावे।।१५-१७।।

सिद्धसूतरस

मुक्ताफलं शुद्धसूतं सुवर्णं रौप्यमेव च ॥
यवक्षारं च तत्सर्वं तोलैकैकं प्रकल्पयेत् ॥१८॥
रक्तोत्पलपत्रतोयैर्मर्दयेत्पत्तलीकृतम् ॥
मर्दयेच्च पुनर्दत्त्वा गंधकं तदनंतरम् ॥१९॥
क्षिप्त्वा काचघटीमध्ये सन्निरुध्य त्रियामकम् ॥
सिकताख्ये पचेच्छीते सिद्ध घृतं तु भक्षयेत् ॥२०॥
पंचरक्तिप्रमाणेन मुसलीशर्करान्वितम् ॥
शुक्रवृद्धि करोत्येष ध्वजभंगं च नाशयेत् ॥२१॥
दुर्बलं वपुरत्यर्थं बलयुक्तं करोत्यसौ ॥
मुद्गगर्भं घृतं क्षीरं शालयो माहिषं हितम् ॥२२॥

मोती, शुद्ध पारा, सुवर्णभस्म, चांदी की भस्म, जवाखार प्रत्येक एक एक तोला लेवे फिर लाल कमल के पत्रों के रस में खरल करके बराबर की शुद्ध गन्धक मिला के तीन प्रहर बराबर खरल करे फिर आतसी शीसी में भर के वालुकायन्त्र द्वारा तीन प्रहर की आंच देवे स्वांग शीतल होने पर इस सिद्ध सूत को निकालकर शीसी में रखे। इसमें से पांच रत्ती लेकर मूसली और मिसरी में मिलाकर सेवन करे तो वीर्य की वृद्धि हो इंद्रिय की शिथिलता और अन्य विकार दूर हों। दुर्बल शरीरवाला भी इस रस के प्रभाव से बलवान् हो इसके सेवन के समय मूंग, घी, दूध, सांठीचावल, भैंस का दूध, मक्खन, यह सब हित हैं खटाई, लालमिर्च, तेल, आदि कुपथ्य त्याग देवें।।१८-२२।।

वसंतकुसुमाकररस

द्विभागं हाटकं चंद्रं त्रयो वंगहिकांतकाः ॥
चतुर्भागं शुद्धमभ्रं प्रवालं मौक्तिकं तथा ॥२३॥

भावये द्‌गव्यदुग्धेन तथा चेक्षुरसेन च ।।
वासालाक्षारसोदीच्यरम्भाकंदप्रसूनकैः ।।२४।।
शतपत्ररसेनैव मालत्या कुंकुमोदकैः ।।
पश्चान्मृगमदैर्भाव्यं सुगंधिरससंभवम् ।।२५।।
कुसुमाकर आख्यातो वसंतपदपूर्वकः ।।
गुंजाद्वयेन संसेव्यः सितामध्वाज्यसंयुतः ।।२६।।
मेहघ्नः कांतिदश्चैव कामदः पुष्टिदस्तथा ।।
वलीपलितनाशश्च श्रुतिभ्रंशं विनाशयेत् ।।२७।।
पुष्टिदोयं बलायुष्यपुत्रप्रसवकारकः ।।
तथा सोमरुजं हंति साध्यासाध्यमथापि वा ।।२८।।

सुवर्ण के वर्क दो तोले, वंगभस्म, शीशे की भस्म, कांत लोहभस्म, प्रत्येक एक २ तोला धान्याभ्रकभस्म, मोती, मूंगे की भस्म, प्रत्येक चार २ तोले सबको मिलाकर गौ के दूध, ईख के रस, अडूसा, लाख, नेत्रवाला, कलाकंद, केले के फूल, कमल, मालती, केशर, इनके रसों की भावना देकर सुखाता जावे फिर कस्तूरी तथा और सुगंधित रसों की भावना देवे फिर इस वसंतकुसुमाकर रस की दो रत्ती की गोलियां बनाकर मिसरी शहद घी में मिलाके खावे तो सब प्रकार के प्रमेहों को नाश करे। कांति और कामशक्ति बढ़ावे शरीर को पुष्ट करे। वलीपलित का नाश करे, बहरेपन को दूर करें वीर्य को पुष्ट करे। बल तथा आयु को बढ़ावे, संतान को देनेवाला साध्य तथा असाध्य सोमरोग का नाश करनेवाला यह रस है।।२३-२८।।

पूर्णचंद्ररस

मृताभ्रलोहं सशिलं जतु स्याद्विडंगताथेमधुना घृतेन ।।
पिष्टंप्रशस्तं खलु पूर्णचंद्रोमाषोस्य पुष्टचै भवतिप्रशस्तः।।

रससिंदूर, अभ्रकभस्म, शिलाजीत, वायविडंग, सुवर्णमाक्षिकभस्म, इन सबको समान भाग लेकर खरल करके रखे। इसमें से शहद और घृत में मिलाकर एक मासा खावे तो यह पूर्णचंद्ररस अत्यंत पुष्टि करता है।।२९।।

कामदेवरस

तरं वज्रं सुवर्णं च ताम्रं सूतकगंधकम् ।।
लोहं क्रमविवृद्धानि कुर्यादितानि मात्रया ।।३०।।
विमर्द्य कन्यकाद्रावैर्न्यसेत्काचमये घटे ।।
विमुद्रय पिठरीमध्ये धारयेत्सैंधवैर्भृते ।।३१।।
वह्निं शनैः शनैः कुर्याद्दिनैकं तु तदुद्धरेत् ।।
स्वांगशीतं च संचूर्ण्य भावयेदर्कदुग्धकैः ।।३२।।
अश्वगंधा च काकोली वानरी मुसली क्षुरा ।।
त्रिवारं च रसैर्भाव्यं शतावर्याश्च भावयेत् ।।३३।।
कस्तूरीव्योषकर्पूरं कंकोलैला लवंगकम् ।।
पूर्वचूर्णादष्टमांशमेतच्चूर्णं विमिश्रयेत् ।।३४।।
सर्वैः समां शर्करां च दत्त्वा शाणोन्मितं पिबेत् ।।
गोदुग्धद्विपलेनैव मधुराहारसेवकः ।।३५।।
अस्य प्रभावात्सौंदर्यं बलं तेजो विवर्द्धते ।।
तरुणीं रमयेद्वृद्धो न च हानिः प्रजायते ।।३६।।

रूपरस, हीरे की भस्म, सुवर्ण भस्म, ताम्रभस्म, शुद्धपारा, शुद्धगंधक, लोहभस्म यह क्रम से एक से दूने लेवे, सबकी कजली करके घीकुँवार के रस में खरल करे फिर आतशी शीसी में भरके कपड़मिट्टी कर छेदवाली हांड़ी में रख देवे और उस हांड़ी को सेंधे नमक से भर देवे फिर एक दिन रात मंद मंद आंच देवे जब स्वांग शीतल हो तो

निकालकर खरल में डाले फिर आक के दूध की एक भावना देवे, और असगंध, काकोली, कौंच, मुसली, तालमखाने, इनके रस की तीन तीन भावना देवे तथा शतावर के रस की तीन भावना देवे। फिर कस्तूरी, त्रिकुटा, कपूर, कंकोल, इलायची, लौंग, इनका चूर्ण रस से अष्टमांश मिलावे मिसरी सबकी बराबर मिलावे फिर इसमें से चार मासे औषधी भक्षण कर आधपाव दूध पीवे और इसके सेवन समय मीठे चिकने पदार्थ ही खावे खटाई, लाल मिर्च, वातकर्ता, आदि कुपथ्य न खाय तो इस रस के प्रताप से सुंदरता, बल, तेज बढ़े और वृद्ध मनुष्य भी स्त्री रमण करे तथापि उसके कोई हानि न होवे॥३०-३६॥

बृहत्पूर्णचंद्ररस

द्विकर्षं शुद्धसूतस्य गंधकं च द्विकार्षिकम् ॥
लोहभस्मं परं चाभ्रं जारितं च पलांशकम् ॥३७॥
द्वितोलं रजतं चैव वंगभस्म द्विकार्षिकम् ॥
सुवर्णं तोलकं चैव ताम्रं कांस्यं च तत्समम् ॥३८॥
जातीफलं चेंद्रपुष्पमेला भृंगं च जीरकम् ॥
कर्पूरं वनितामुस्तं कर्षंकर्षं पृथक् पृथक् ॥३९॥
सर्वं खल्वतले क्षिप्त्वा कन्यारसविमर्दितम् ॥
भावयित्वा वरातोयैः केंबुकानां रसेन च ॥४०॥
ऐरंडपत्रैरावेष्ट्य धान्ये रात्रिदिनोषितम् ॥
उद्धृत्य मर्दयित्वा च वटिकां चणसम्मिताम् ॥४१॥
खादेच्च पर्णखंडेन संयुक्तां व्याधिनाशिनीम् ॥
सर्वव्याधिविनाशाय काशीनाथेन भाषितः ॥४२॥
पूर्णचंद्ररसो नाम सर्वरोगेषु योजयेत् ॥
बल्यो रसायनो वृष्यो वाजीकरण उत्तमः ॥४३॥

अयमष्ठीलिका हंति कासश्वासमरोचकम् ॥
आमशूलं कटीशूलं हृच्छूलं पित्तशूलकम् ॥४४॥
अग्निमांद्यमजीर्णं च ग्रहणीं चिरजामपि ॥
आमवाताम्लपित्तं च भगंदरमपि द्रुतम् ॥४५॥
कामलां पाण्डुरोगं च प्रमेहं वातशोणितम् ॥
नातः परतरः श्रेष्ठो विद्यते वाजिकर्मणि ॥४६॥
रसस्यास्य प्रसादेन नरो भवति निर्गदः ॥
मेधां च लभते वाग्मी सर्वशास्त्रसमन्वितः ॥४७॥
मदनस्य समा कांतिर्मदनस्य समं बलम् ॥
गीयते मदनेनैव मदनस्य समं वपुः ॥४८॥
स्त्रीणां तथानपत्यानां दुर्बलानां च देहिनाम् ॥
क्षीणानामल्पशुक्राणां वृद्धानां वातरेतसाम् ॥
ओजस्तेजः करश्चायं स्त्रीषु कामविवर्द्धनम् ॥४९॥
अभ्यासेन निहंति मृत्युपलितं सर्वामयध्वंसनो ॥
वृद्धानां मदनोदयोदयकरः प्रौढांगनासंगमे ॥
नित्यानंदकरः सुखातिसुखदो भूपैः सदा सेव्यते
दृष्टः सिद्धफलो रसायनवरः श्रीपूर्णचंद्रो रसः ॥५०॥

शुद्धपारा दो तोले, शुद्धगंधक दो तोले, लोहभस्म ४तोले,चांदीकी भस्म दो तोले, सुवर्णभस्म एक तोला, तांबे की भस्म १ तोला, कांस्यभस्म १ तोला, जायफल, लौंग, इलायची, भांग, जीरा, कपूर, फूलप्रियंगु, नागरमोथे, प्रत्येक एक एक तोला लेवे। इन सबको खरल में डालकर घीकुँवार के रस में खरल करे फिर त्रिफले के रस में खरल कर अथवा काढ़े में खरल कर सुखावे फिर सुपारी के काढ़े की भावना देकर गोला बनावे और उस गोले को एरंड के पत्तों में लपेटकर तीन दिन

रात धानों की राशि में गड़ा रहना देवे फिर चौथे दिन निकालकर पानी से चने की बराबर गोलियें बनावे। एक गोली पानी के साथ खाय यह संपूर्ण व्याधियों के नाशनार्थ काशीनाथ आचार्य ने कहा है इस पूर्णचंद्ररस को संपूर्ण रोगों में देवे। यह बलकारी, रसायन, वृष्य, उत्तम वाजीकरण कर्ता तथा अष्ठीलिका, खांसी श्वास अरुचि, आमशूल, हृच्छूल, पित्तशूल, मंदाग्नि, अजीर्ण, पुरानी संग्रहणी, आमवात, अम्लपित्त, भगंदर, कामला, पांडुरोग, प्रमेह, वातरक्त इन सबको दूर करे। इससे बढ़कर वाजीकर्ता दूसरा रस नहीं इसके प्रभाव सें मनुष्य रोगरहित होता है सब शास्त्रों के जानने की बुद्धि हो कामदेव के समान कांति, बल, बड़ाई और देह हो। स्त्रियों को जिनके संतान न होती हो ऐसे दुर्बल पुरुषों को क्षीण, अल्पशुक्र, वृद्ध, वातरेतस इनको ओज और तेज का देनेवाला, स्त्रियों में काम बढ़ानेवाला और अभ्यास से सेवन किया अकालमृत्यु और बुढ़ापे को रोकता है, संपूर्ण रोगों को नष्ट करता है, वृद्धपुरुषों को भी स्त्रीसंग में कामवृद्धि करता है नित्य आनंदकारी अत्यंत सुखदाता, अनुभव किया हुवा राजाओं के सेवन योग्य, रसायनों में श्रेष्ठ यह श्रीपूर्णचंद्ररस है।।३७-५०।।

मकरध्वजरस

स्वर्णद्विभागौ वंगं च मौक्तिकं कांतलोहकम् ।।
जातीकोषफले रूप्यं कांस्यकं रससिंदुरम् ।।५१।।
प्रवालचंद्रं कस्तूरी अभ्रकं चैकभागिकम् ।।
स्वर्णसिंदूरतो भागाश्चत्वारः कल्पयेद्बुधः ।।५२।।
नातः परतरः श्रेष्ठः सर्वरोगनिषूदनः ।।
वीर्यवृद्धिकरश्चैव वाजीकरण उत्तमः ।।५३।।

सुवर्णभस्म दो तोले, वंगभस्म, मौक्तिकभस्म, कांतलोहभस्म,

जायफल, जावित्री, चांदी की भस्म, कांसी की भस्म, रससिंदूर प्रत्येक एक २ तोला स्वर्णसिंदूर ४ तोले, सबको एकत्र कर पान के रस में खरल कर सेवन करे यह सर्वरोगों को नष्ट करनेवाला और वीर्य को बढ़ानेवाला उत्तम वाजीकरण है॥५१-५३॥

श्रीमन्मथरस

रसगंधकयोर्ग्राह्यं कर्षमेकं तु शोधितम् ॥
अभ्रं निश्चंद्रकं दद्यात्पलार्द्धं तु विचक्षणः ॥५४॥
कर्पूरं शोधितं दद्याद्वंगं च कोलसंमितम् ॥
ताम्रं कोलार्द्धकं तत्र निःशेषं मरिचं क्षिपेत् ॥५५॥
लौहं कर्षं सुजीर्णं च वृद्धदारुकबीजकम् ॥
विदारी शतमूली च क्षुरबीजं बला तथा ॥५६॥
मर्कटयातिबला चैव जातीकोषफले तथा ॥
लवंगं विजयाबीजं श्वेतसर्जयमानिका ॥५७॥
एतेषां चूर्णमादाय प्रक्षिपेच्छाणसंमितम् ॥
गुञ्जाद्वयं च भोक्तव्यं कोष्णं क्षीरं पिबेदनु ॥५८॥
प्रमदा यस्य विद्यंते गृहे च व्यवसायिनः ॥
न तस्य शिश्नशैथिल्यमौषधस्यास्य सेवनात् ॥५९॥
न च शुक्रक्षयं याति न बलं ह्रासतां व्रजेत् ॥
कामरूपी भवेद्दिव्यो वृद्धः षोडशवार्षिकः ॥६०॥
रसायनवरो बल्यो वाजीकरण उत्तमः ॥
रस श्रीमन्मथो नाम रसेषु ह्युत्तमः स्मृतः ॥६१॥

शुद्धपारा १ तोला, शुद्धगंधक १ तोला, उत्तम अभ्रकभस्म दो तोले, भीमसेनीकपूर और बंगभस्म प्रत्येक आठ २ मासे ताम्रभस्म ४ मासे लोहभस्म १ तोला, विधायरे के बीज, विदारीकंद, शतावर,

तालमखाने, खरेंटी, कौंच के बीज, गगेरन, जायफल, जावित्री, लौंग, भांग के बीज, सफेद राल, अजवायन, प्रत्येक का चूर्ण चार २ मासे लेवे। पहले पारे गंधक क़ी कजली करके फिर उसमें सब धातुओं को मिलाके एकजीव करे फिर सबको मिलाकर पान के रस में खरलकर दो २ रत्ती की गुटिका बना लेवे गोली खाकर ऊपर से थोड़ा गर्म दूध पीवे तो इस रस के प्रभाव से जिस व्यवसायी पुरुष के घर में बहुत स्त्रियें होवें उसकी इंद्रिय में भी शिथिलता नहीं आती और न वीर्यक्षीण हो न बल की हानि हो। इसके प्रभाव से वृद्ध भी १६ वर्ष के समान रूपवाला हो यह रसायन बलकारी और उत्तम वाजीकरण है। श्रीमन्मथरस रसों में उत्तम कहा है।।५४-६१।।

बृहच्छृगाराभ्रक

पारदं गंधकं चैव टंकणं नागकेसरम् ।।
कर्पूरं जातिकोषं च लवंगं तेजपत्रकम् ।।६२।।
एतेषां कर्षभागानि सुवर्णं तत्समं भवेत् ।।
शुद्धकृष्णाभ्रभस्मापि चतुष्कं पिचुभागिकम्।।६३।।
तालीशं घनकुष्ठं च मांसी पुष्पवरांगकम् ।।
एलाबीजं त्रिकटुकं त्रिफला गजपिप्ली ।।६४।।
एषां कर्षद्वयं चैव पिप्पलीरसभावितम् ।।
अनुपानं प्रयोक्तव्यं चोचं क्षौद्रसमायुतम् ।।६५।।
नानारोगप्रशमनं विशेषात्कासरोगनुत् ।।
वातिकं पैत्तिकं चैव श्लैष्मिकं सान्निपातिकम् ।।६६।।
हृच्छूलं पार्श्वशूलं च शिरः शूलं विशेषतः ।।
स्वरामयं तथा कुष्ठं श्लेष्माणं वातशोणितम् ।।६७।।

रक्तपित्तं कासं च नाशयन्नात्र संशयः ॥
मुसलीघृतक्षौद्रैश्च वाजीकरणमुत्तमम् ॥६८॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, सुहागा, नागकेशर, भीमसेनी कपूर, जायफल, लौंग, तेजपात, प्रत्येक एक २ तोला। सुवर्ण के वर्क एक तोला शुद्ध धान्याभ्रक भस्म ४ तोले, तालीसपत्र, नागरमोथा, कूठ, जटामांसी, जावित्री, दालचीनी, छोटी इलायची, सोंठ, मिरच, पीपल, हर्ड, बहेड़ा, आमला, गजपीपल, प्रत्येक दो २ तोले लेवे, इन सबका चूर्ण कर पीपल के क्वाथ की भावना देवे तो यह रस तैयार हो गया। इसको दालचीनी और शहद से चाटे तो यह अनेक रोगों को नष्ट करे विशेषकर खांसी को नष्ट करे। वात के, पित्त के, कफ के, सन्निपात के रोगों को नष्ट करे, तथा हृदय का शूल, पार्श्वशूल, मस्तकपीडा, स्वरभंग, कुष्ठ, कफ के रोग, वातरक्त, रक्तपित्त इनको दूर करता है मुसली और घी, शहद इनके संयोग से खाय तो यह परम वाजीकर्ता है॥६२-६८॥

पुष्पधन्वारस

हरजभुजगलोहान्यभ्रकं च त्रिभागं
कनकविजययष्टी शाल्मली नागवल्यः ॥
सितमधुघृतदुग्धैः सेवितो वीर्यवृद्धी
रमयतिबहुकांताः पुष्पधन्वा रसः स्यात् ॥६९॥

शुद्धपारा १ भाग, शीसे की भस्म १ भाग, लोहभस्म १ भाग, अभ्रक भस्म ३ भाग, सबको एकत्र कर धतूरे के रस की एक भावना और भांग, मुलहंठी, सेमल, पान, इनके रस की एक एक भावना देवे फिर इसको मिसरी शहद, घी में मिलाकर चाटे ऊपर से दूध पीवे इसके प्रभाव से वीर्य की वृद्धि हो अनेक स्त्रियों से रमण करे यह पुष्पधन्वा

रस है॥६९॥

कन्दर्पसुन्दररस

सूतो वज्रमहिर्मुक्ता तारं हेम सिताभ्रकम् ॥
रसैः कार्पासकानेतान्मर्दयेदरिमेदजैः ॥७०॥
प्रवालं चूर्णगंधं च द्विद्विकर्ष विमिश्रयेत् ॥
स्वरसे वाजिगंधाया विमर्द्य मृगभ्रृंगके ॥७१॥
क्षिप्त्वा मृदुपुटे पक्त्वा भावयेद्धातकीरसैः ॥
काकोली मधुकं मांसी बलात्रयबिषेंगुदम् ॥७२॥
द्राक्षा पिप्पली वंदाकवरी पर्णीचतुष्टयम् ॥
परूषकं कसेरुश्च मधुकं वानरी तथा ॥७३॥
भावयित्वा रसैरेषां शोषयित्वा विचूर्णयेत् ॥
एला त्वक्पत्रकं मांसी लवंगागरुकेशरम् ॥७४॥
सुस्त मृगमदं कृष्णा जलं चंद्रश्च मिश्रयेत् ॥
एतच्चूर्णैः शाममितैः रसं कंदर्पसुंदरम् ॥७५॥
खादेच्छाणमितं रात्रौ सिता धात्री विदारिका ॥
एतेषां कर्षचूर्णेन संर्पिष्कर्षेण सम्मितम् ॥७६॥
तस्यानुद्विपलं क्षीरं पिबेत्सुखितमानसः ॥
रमणी रमयेद्बह्वीर्न हानिं क्वापि गच्छति ॥७७॥

शुद्धपारा, हीरे की भस्म, शीसे की भस्म, मोती की भस्म, चांदी की भस्म, सफेद अभ्रकभस्म, प्रत्येक चार २ तोले लेकर कपास के फूलों के रस की एक भावना और खैर के क्वाथ की एक भावना देवे फिर मूंगे की भस्म दो तोले, शुद्ध गन्धक, १ तोला लेकर असगन्धक के रस में खरल करके हिरन के सींगों में भर देवे फिर उन सींगों पर कपड़मिट्टी कर लघुसंपुट में फूंक देवे, फिर धाय के फूल काकोली, मुलेठी,

जटामांसी, बला, अतिबला, नागबला, भसीडा, हिंगोट, दाख, पीपल, बांदा, शतावर, शालपर्णी, पृष्टिपर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, फालसा, कसेरू, महुवा, कौंच के बीज, इनमें से जिसका रस मिले उसकी और बरना क्वाथ की अलग अलग भावना देकर सुखाता जावे। फिर इलायची, तज, पत्रज, जटामांसी, लौंग, अगर, केशर, नागरमोथा, कस्तूरी, पीपल, नेत्रवाला, भीमसेनी, कपूर इन सबका चूर्ण मिलावे तो यह कन्दर्पसुन्दर रस तैयार हुआ। इसमें से चार मासे लेकर उसमें आमले, विदारीकन्द, मिसरी, प्रत्येक एक एक तोला मिलाकर रात्रि के समय खावे। ऊपर से आध पाव पक्का दूध पीवे और प्रसन्नचित्त रहे तो इसके प्रभाव से अनेक स्त्रियों से गमन करके भी वीर्यहानि नहीं होती॥७०-७७॥

लक्ष्मीविलासरस

पलं कृष्णाभ्रचूर्णस्य तदर्द्धौरसगंधकौ ॥
कर्पूरं वै तदर्द्धं च जातीकोषफले तथा ॥७८॥
वृद्धदारुकबीजं च बीजमुन्मत्तकस्य च ॥
त्रैलोक्यविजयाबीजं विदारीकंदमेव च ॥७९॥
नारायणी तथा नागबला चातिबला तथा ॥
बीजं गोक्षुरकस्यापि नैचुलं बीजमेव च ॥८०॥
एतेषां कार्षिकं चूर्णं पर्णपत्ररसेन च ॥
निष्पिष्य वटिका कार्या त्रिगुंजाफलमानतः ॥८१॥
निहंति सन्निपातोत्थानगदान्घोरान्सुदारुणान् ॥
वातोत्थानपिपित्तोत्थान्नास्यत्यत्र नियमःक्वचित्॥८२॥
कुष्ठमष्टादशविधं प्रमेहान्विंशतिं तथा ॥
नाडीव्रणं व्रणं घोरं गुदामयभगंदरम् ॥८३॥

४

श्लीपदं कफवातोत्थं चिरजं कुलसंभवम् ॥
गलशोथमंत्रवृद्धिमतीसारं सुदारुणम् ॥८४॥
कासपीनसयक्ष्मार्शः स्थौल्यदौर्गंध्यमेव च ॥
सर्वशूलं शिरःशूलं स्त्रीणां गदनिषूदनम् ॥८५॥
वटिकां प्रातरेकैकां खादेन्नित्यं यथाबलम् ॥
अनुपानमिह प्रोक्तं मांसं मिष्टं पयो दधि ॥८६॥
वारिभक्तसुरासीधुसेवनात्कामरूपधृक् ॥
वृद्धोपि तरुणस्पर्द्धी न च शुक्रस्य संक्षयः ॥८७॥

उत्तम शुद्ध सहस्रपुटी कृष्णाभ्रकभस्म ४ तोले, पारा, गन्धक दोनों दो दो तोले, भीमसेनी कपूर १ तोला, जायफल, जावित्री, विधायरे के बीज, धतूरे के बीज, भांग के बीज, विदारीकन्द, शतावर, बला, अतिबला, गोखरू, समुद्रफल, इन सबको एक एक तोला लेवे और इन सबको बारीक चूर्ण करके पानों के रस में खरल कर तीन तीन रत्ती की गोलियां बनावे। ये गोलियां सन्निपात से हुए दारुण रोगों को दूर करे और वात से पैदा हुए रोग, पित्त से पैदा हुए रोग, और सब किस्म के रोग, अठारह कुष्ठ, बीस प्रकार के प्रमेह, नासूर, घाव, भगंदर, कफवाद से हुआ श्लीपद, गले की सूजन, अंत्रवृद्धी, अतिसार, खांसी, पीनस, क्षयी, बवासीर, मेदरोग, देह की सुगंधि, सब किस्म के शूल, शिर का दर्द, स्त्रियों के रोग, यह सब इस लक्ष्मीविलास के सेवन से दूर होते हैं। इसको प्रातःकाल जठराग्नि का बलाबल विचारकर खावे और उसको खाकर मांसरस अथवा दूध पीवे और मीठे अन्न, दूध, दही, घृत, जल से पके चावल, मद्यविशेष, आसव इनका सेवन करे और पथ्य से रहे। इसके सेवन से बूढ़ा भी कामदेव के समानरूपवान् हो और युवाके सदृश स्त्रीगमन की इच्छा करे और यथेच्छ स्त्रियों से गमन करने पर भी वीर्य

की हानि न हो॥७८-८७॥

श्रीकामदेवरस

कामदेवमथो सूतं कामिनां कामवृद्धये ॥
यस्य प्रसादतो बल्यो रम्यश्च रमते स्त्रियम् ॥८८॥
पारदं पलमेकं स्याद्द्विपलं शुद्धगंधकम् ॥
रक्तकार्पासतोयेन घृष्ट्वा काचस्य कुप्यतः ॥८९॥
निक्षिप्य टंकणेनैव मुखं तस्य निरोधयेत् ॥
वालुकायंत्रमध्यस्थं कुप्यं च कुरुते दृढम् ॥९०॥
अहोरात्रं पचेदग्नौ शास्त्रवित्कुशलो भिषक् ॥
शीते चादाय पात्रस्थं कूपिकांतरलंबितम् ॥९१॥
दरदेन समं रक्तमुज्ज्वलं भस्म यद्भवेत् ॥
भक्षयेन्माषमेकं च घृतेन मधुना सह ॥९२॥
पश्चाद्दुग्धं गुडं चाज्यं कृष्णेक्षुमपि शर्कराम् ॥
द्राक्षाखर्जूरमधुकप्रभृतीनथ भक्षयेत् ॥९३॥
त्रिफलामधुना याति शांतिं पित्तं चिरोद्भवम् ॥
निर्गुण्डिकारसेनात्र दुर्वारा वातवेदना ॥९४॥
प्रंशमं याति वेगेन नूतनं च वपुर्भवेत् ॥
वीर्यवृद्धिप्रभावेण वृद्धोपि रमते स्त्रियम् ॥९५॥

कामदेव और पारा यह दोनों कामी पुरुष को कामवृद्धिकारक हैं जिनकी प्रसन्नता से निर्बल भी बलवान् और सुन्दर होकर स्त्रियों से रमण करता है। शुद्धपारा ४ तोले, शुद्ध गन्धक ८ तोले, दोनों की कजली करके लाल फूल की कपास के रस में दो प्रहर खरल करके आतशी शीशी में भरके उस शीशी के मुख को सुहागे से बन्द करके वालुकायन्त्र द्वारा शास्त्र का जाननेवाला वैद्य एक दिनरात्रि की आंच

देवे फिर स्वांगशीतल होने पर उस रस को शीशी से निकाल ले, वह रस सिंगरफ के रंग का लाल वर्ण निकलेगा, इस रस को १ मासा घी और सहत से खावे और घी, खांड, दूध कालीमिर्च, छुवारा, महुवा आदि मधुर और चिकने पदार्थ खाय और पथ्य से रहे। त्रिफला और सहतसंग इस रस को खाय तो पित्त के रोग शान्त हों। निर्गुंडी के रस से खाय तो दुर्निवार वात की पीड़ा शान्त हो और नवीन देह हो। इस रस को वाजीकर्ता पदार्थों से सेवन करे तो वीर्य की वृद्धि होने से वृद्धपुरुष भी स्त्रीरमण करे॥८८-९५॥

रससेवन में आज्ञा

रससेवी नरः पथ्यं सेवेत वा ह्यतंद्रितः ॥
तैलमम्लं च तीक्ष्णं च कुपथ्यं परिवर्जयेत् ॥९६॥

रस को सेवनकर्ता मनुष्य को सावधानी से रहकर पथ्य ही सेवन करना चाहिये और तेल खटाई, लाल मिरच आदि तीक्ष्ण पदार्थ और कुपथ्य को त्याग देवे॥९६॥

कस्तूरीगुटिका

सुवर्णं मृगनाभिं च रौप्यकाश्मीरकौ तथा ॥
लघुएला जातिफलं तुगा क्षीरी तथैव च ॥९७॥
जातिपत्रीं च संचूर्ण्य भागवृद्ध्या प्रयोजयेत् ॥
अजादुग्धे च संपेष्य नागवल्लीरसे तथा ॥९८॥
दिनद्वयं विमर्द्याथ युग्मगुंजासमा वटी ॥
संतानिकायुतं भुक्तं रेतःक्षयनिवारणम् ॥९९॥
मधुना मेहनाशाय शैथिल्ये पानसंयुतम् ॥
गुटिकां भक्षयेद्धीमान्धातुसंजीवनीं शुभाम् ॥१००॥

सुवर्ण के वर्क १ भाग, कस्तूरी २ भाग, चांदी के वर्क ३ भाग, केशर

४ भाग, छोटी इलायची के बीज ५ भाग, जायफल ६ भाग, वंशलोचन ७ भाग, जावित्री ८ भाग, इन सबका चूर्ण कर बकरी के दूध में और पान के रस में तीन दिन खरल करके दो दो रत्ती की गोलियां बना लेवे. जिसकी धातु क्षीण हो गई हो उसको मलाई के साथ या मलाई के पाक के साथ खिलावे और सहद के साथ प्रमेहों के नष्ट करने को देवे। पान के संग शिथिलता में देवे। इस प्रकार इन शुभधातुसंजीवनी गोलियों को बुद्धिमान् मनुष्य सेवन करे।।९७-१००।।

वीर्यस्तंभी गुटिका

जातीफलं लवंगं च जातीपत्रं सकुंकुमम् ।।
सूक्ष्मैला चाहिफेनं च आकारकरभस्तथा ।।१०१।।
प्रत्येकं कर्षमात्राणि कर्पूरं शाणमात्रकम् ।।
नागवल्लीदलरसैर्वटी चणकसन्निभा ।।१०२।।
वीर्यसंस्तंभनी ह्येषा बलवर्णाग्निदीपनी ।।
भुक्त्वा शयनसमये पिबेद्दुग्धं सितायुतम् ।।१०३।।

जायफल, लौंग, जावत्री, केशर, छोटी इलायची, अफीम, अकरकरा प्रत्येक एक एक तोला, भीमसेनी कपूर ४ मासे, इन सबको नागरवेल के पान के रस में खरल करके चणे के प्रमाण गोलियां बनावे। यह गोली वीर्य को स्तंभन कर्ता तथा बल, वीर्य, जठराग्नि, इनको बढ़ानेवाली हैं। इनको रात्रि को शयन करते समय खाकर ऊपर से मिसरी मिला दूध पीवे।।१०१-१०३।।

स्तंभनवटिका

भागैकं मृगनाभिं च तथा काश्मीरसंभवम् ।।
जातीफलं लवंगं च प्रत्येकं भागयुग्मकम् ।।१०४।।

चतुर्भागाहिफेनं च विजया भागयुग्मकम् ॥
चणकाभा वटी कार्या वीर्यस्तंभकरी मता ॥१०५॥
भक्षयेन्मधुना सार्द्धं कामी नित्यं निशामुखे ॥
ससितं सर्पिषा युक्तं दुग्धं चैव पिबेदनु ॥१०६॥

कस्तूरी १ तोला, केशर, जायफल, लौंग, प्रत्येक दो दो तोले, अफीम ४ तोले, शुद्ध भांग २ तोले, इन सबको कूटकर कपड़छान करे और पानी के संयोग से रगड़कर गोलियां बनावे। इनमें से कामी पुरुष रात्रि को शयन समय एक गोली सहत के संयोग से खावे और ऊपर से घी मिसरी मिला गर्म दूध पीवे। यह परमोत्तम वीर्यस्तंभन करनेवाली गोलियां हैं॥१०४-१०६॥

वीर्यस्तंभिनी केशरादिगुटिका

काश्मीरं देवसुमनं जातीपत्रफले तथा ॥
शर्करा शाल्मली माजू कारवी चाब्धिशोषकम् ॥१०७॥
तालमूली च माकल्लशिफाबर्बुरसर्जकम् ॥
पाठा मस्तकी दरदमहिफेनं च वत्सकम् ॥१०८॥
एतानि शाणमानानि चूर्णयेच्च पृथक् पृथक् ॥
कस्तूरिका च कर्पूरं शाणार्द्धं दीयते बुधैः ॥१०९॥
समं च मधुना योज्या माषद्वयवटी कृता ॥
ससितदुग्धपानेन भक्षयेत्तां निशामुखे ॥११०॥

केशर, लौंग, जायफल, जावित्री, मिसरी, सेमल की मुसली, माजुफल, कालाजीरा, समुद्रशोष, मूसली, अकरकरा, सालसा, कीकर की कच्ची फ़ली, राल, पाढ़, रूमीमस्तगी, शुद्धसिंगरफ, अफीम, इंद्र जौ प्रत्येक चार चार मासे लेवे। कस्तूरी, भीमसेनी कपूर प्रत्येक दो दो

मासे। इन सब औषधियों का चूर्ण कर बराबर सहत में मिलाकर दो दो मासे की गोलिया बनावे। रात्रि को सोते समय एक गोली खाकर ऊपर से मिसरी मिला दूध पीवे।।१०७-११०।।

वीर्यस्तंभक कामेश्वररस

वीर्यस्तंभककारी ह्येषा बलकामविवर्द्धिनी ।।
जातीफलं च सौराष्ट्री कृष्णधत्तूरबीजकम् ।।१११।।
जातीपुष्पमहेः फेनं नागं हिंगुलमेव च ।।
एतानि समभागानि खसक्वाथेन मर्दयेत् ।।११२।।
गुंजामात्रां च वटिकां सितया सह भक्षयेत् ।।
नाम्ना कामेश्वरः प्रोक्तः परमानंदकारकः ।।११३।।

यह गोली वीर्य को स्तंभन करती तथा बल और काम की वृद्धि करनेवाली है। जायफल, अकरकरा, काले धतूरे के बीज, जावित्री, अफीम, शीशे की भस्म, शुद्ध सिंग्रफ, इन सबको समान भाग लेकर खसखस के क्वाथ में खरल करके एक एक रत्ती की गोलियां बनावे। इनमें से १ गोली मिसरी के साथ खावे तो यह कामेश्वररस परम आनंद का देनेवाला है।।१११-११३।।

एवं प्रतितरंगे च क्लैब्यदुःखनिवृत्तये ।।
नानाविधाः प्रयोगाश्च वर्णिताः शिष्यसत्तम ।।११४।।
तथापि ह्युत्तरे तंत्रे ह्यधिके च तरंगके ।।
रसायनान्वाजिकरान्प्रयोगान्कथयामि वै ।।११५।।

इस प्रकार तरंग प्रतिरंग नपुसंकता रूपी दुःख की निवृत्ति के लिये अनेक प्रकार के योग वर्णन कर चुके हैं। हे श्रेष्ठ शिष्य! उत्तम उत्तम रसायन और वाजीकरणयोग अधिक नवम तरंग में फिर भी कथन करेंगे।।११४-११५।।

इति श्री वै० पंचानन पं० रामप्रसादोपाध्यायकृतनपुंसकामृतार्णवे

वाजीकरणरसादिवर्णनो नाम पञ्चमस्तरंगः ।।५।।

अथ षष्ठस्तरङ्गः

तैलसेकलेपादिवर्णनम्

शिष्य उवाच

तैलसेकप्रलेपादीन् नृणां क्लीबत्वनाशकान् ।।
ध्वजोद्दण्डकरांश्चैव ब्रूहि मे भिषजां वर ।।१।।

शिष्य बोले–हे भिषजांवर! मनुष्यों की क्लीबता (नामर्दी) के नाश करनेवाले तथा उनकी ध्वंज (लिगेंद्रिय) को उद्दण्ड अर्थात् कामशक्ति युक्त बलवान् करनेवाले तैलसेक लेप पट्टियों का वर्णन कृपा करके मेरे पास कहिये।।१।।

गुरुरुवाच

प्रश्नं शिष्यमुखाच्छ्रुत्वा किंचित्तूष्णीं हि चिंतयन् ।।
उवाच वै खिन्नमनाः शास्त्रलोकगतिं विदन् ।।२।।

इस प्रकार प्रश्न शिष्य के मुख से सुनकर शास्त्र और लोक की गति के जाननेवाले गुरु थोड़ी देर तक चुपचाप सोचते रहे फिर खिन्न मन होकर बोले।।२।।

तात लोकगतिं दृष्ट्वा महाखेदोभिजायते ।।
धर्मकर्मविरहिता नित्यमुन्मार्गगामिनः ।।३।।
नीरुजोपि क्रियामेनां करिष्यंति ह्यतः परम् ।।
तेषां वै मैथुनेनैवोभयलोको विनश्यति ।।४।।
विधिं यदि न वक्ष्येऽहं सरुग्वै किं करिष्यति ।।
धूर्तास्तु वै स्वयं तात शिश्नोदरपरायणाः ।।५।।
वर्णाश्रमाचारपराः सत्पुरुषाः स्वयं हि वै ।।
इति मत्वा हितैलादीन्वक्ष्ये क्लीबत्वनाशकान् ।।६।।

हे पुत्र! लोक की गति देखते हुए बड़ा भारी दुःख उत्पन्न होता है। जो मनुष्य धर्मकर्म से हीन होकर नित्यप्रति कुकर्म के रास्ते पर ही चलते हैं वह बिना रोग से भी इन तैलादिकों को इस्तेमाल किया करेंगे फिर नित्य मैथुनोत्साह में ही अपने इस लोक और परलोक को नष्ट कर डालेंगे। यदि मैं इस तैलादि विधि को कथन ही न करूं तो जो मनुष्य क्लीबता (नामर्दी) रोग में ग्रस्त हैं और जिनकी इंद्रिय के पट्ठे मले जाने से खराब हो गये अर्थात् उनमें यथोचित रक्ताभिसरण और वायु की उग्रता नहीं होती, उन रोगियों का क्या उपाय होगा। और जो धूर्तलोग हैं वह तो स्वयं ही शिश्नोदरपरायण होते हैं (जिनका खा लेना और मैथुन कर्तव्य है) हे तात! सत्पुरुष भी वर्णाश्रम धर्म को नहीं छोड़ सकते। सो मैं ऐसा समझकर नपुंसकों के कल्याण के लिये अब तैल आदिकों का कथन करता हूं। तुम सावधान होकर सुनो॥३-६॥

१ बृहतीतैल

बृहतीपंचांगमानीय अजादुग्धे विभावयेत् ॥
यंत्रे पातालिके तैल विधिनां संहरेत्पुमान् ॥
एकाविंशतियोगेन मुच्यते स्वकृतार्दनात् ॥७॥

बड़ी कटेली के जड़ फूल पत्ते फल छिलका लेकर कूट ले फिर बकरी के दूध में खरल करके छाया में सुखा लेवे। इसी प्रकार तीन दफा सुखावे फिर इसकी बड़ी बड़ी गोलियां बनाकर पातालयंत्र द्वारा तेल निकाल लेवे। इस तेल की २१ दिन इंद्रिय पर मालिश करने से हस्तमैथुन से प्राप्त हुई नपुंसकता दूर हो॥७॥

पातालयंत्र

हस्तप्रमाणं निम्नं च गर्तं कृत्वा प्रमाणतः ॥८॥
तस्मिन्भांडं च संस्थाप्य तथान्यत्पात्रमाहरेत् ॥

तस्मिन्नौषधवर्गं च दत्त्वान्यच्च शरावकम् ॥९॥
मुखे च्छिद्राणि संस्थाप्य कृत्वा चैव शरावके ॥
शरावसहित पात्रं गर्तस्थं भाजनं न्यसेत् ॥१०॥
संधिलेपं ततः कृत्वा गर्तमापूर्य मृत्स्नया ॥
पश्चादग्निं च प्रज्वाल्य स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥११॥
तदंतःस्थं च तत्तैलं गृह्णीयाद्विधिपूर्वकम् ॥
पातालाख्यमिदं यंत्रं जानीहि शिष्यसत्तम ॥१२॥

एक हाथ गहरा गढ़ा खोदकर उसमें बड़े मुख का पात्र रखे, पीछे दूसरे पात्र में औषधि रख ऊपर से छेदोंवाला शराव ढक दे फिर शरावयुक्त औषधिवाले पात्र को उस गढ़ेवाले पात्र पर युक्ति से उलटा करके रख दे ताकि दोनों के मुख मिल जावें और वह छिद्रोंयुक्त शराव दोनों के मुख के बीच में आ जावे फिर इन दोनों के मुख को विधिपूर्वक कपड़मिट्टी से बंद कर देवे और गढ़े को मट्टी से दबाकर भर दे। ऊपर से अग्नि जला देवे। उस अग्नि की आंच से ऊपर के दवाइयों का तेल नीचे के बर्तन में टपक जावेगा। जब यह स्वांगशीतल हो जावे फिर युक्ति से नीचे के पात्र में से तेल निकाल ले। इसको हे शिष्यसत्तम! पाताल यंत्र कहते हैं॥८-१२॥

दूसरा प्रकार

अग्नितापसहे काचे विधिनाऽनेन पातयेत् ॥
काचानां मुखं समेल्य लोहोशीरे मुखं न्यसेत् ॥१३॥

अथवा दो अग्निसहनशीला शीशियां लेकर एक में औषधि को भरके उसके मुख में लोहे के तार या खस ठूस दे ताके शीशी उलटी होने से औषधि न गिरे फिर दूसरी बोतल से मुख जोड़कर उस पाताल यंत्र की विधि से तेल खींच लेवे॥१३॥

तीसरी विधि

कांस्यपात्रमथादाय छादयेत्सूक्ष्मवस्त्रत: ॥
तदुपरि न्यसेच्चूर्णं पत्रेणाच्छादयेत्तत: ॥१४॥
अग्नियुक्तं तत: पात्रं युक्त्या तदुपरि न्यसेत् ॥
ऊष्मणा चूर्णतस्तैलं कांस्यपात्रे हि गच्छति ॥१५॥

तीसरी विधि यह है कि एक कांसे का कटोरा अथवा चीनी का प्याला लेकर उसके मुख को बारीक मलमल से ढक देवे फिर जिस औषधि का तैल निकालना हो उसका चूर्ण उस कटोरे के मुख पर वस्त्र के ऊपर बिछा दे। उसके ऊपर एक पत्ता अथवा कागज रखकर ऊपर अग्नि से भरा तसला सावधानी से रख देवे और यह खयाल रखे कि आंच से कपड़ा जलकर दवाई कटोरे में न गिर जाय। इस मंद आंच की गर्माई से चूर्ण में से तेल निकलकर कटोरे में आ जावेगा फिर आगवाला पात्र जल्दी से नीचे उतार कटोरेमें से तेलको काममें लावे। यह थोड़े से तेल निकालने की विधि आधुनिक लोगों ने बनाई है परंतु उत्तम पहलेवाली दो विधियां ही हैं।।१४।।१५।।

२ अर्कतैल

वस्त्रं वा अर्कदुग्धेन सप्तवारं विभावयेत् ॥
निरातपे विशोष्याथ नवनीतेन लेपयेत् ॥१६॥
वर्तिकां कारयित्वा तु वह्निना योजयेत्तत: ॥
वर्तित: पतितं तैलं कांस्यपात्रे विनि:क्षिपेत् ॥१७॥
तत्तैलं लेपयेच्छिश्ने पत्रैरंडेन वेष्टयेत् ॥
नाशयेद्धस्तजं दु:खं तथा वै गुदसंभवम् ॥१८॥

आक के दूध में कपड़े को भिगोकर सुखावे। इसी तरह सात बार सुखाकर उस कपड़े में मक्खन लगाकर वर्ती बनावे। फिर उस वर्ती को

जलाकर नीचे कांस की थाली में रखे। इसमें से जो तेल टपककर थाली में गिरे उस तेल को इंद्रिय पर मलकर ऊपर एरण्ड का पत्र लपेटे। इस प्रकार २१ दिन करने से अयोनिमैथुन का विकार दूर होता है।।१६-१८।।

३ राल तैल

श्वेतचंदनचूर्णं च चतुःपलप्रमाणतः ।।
द्विगुणं सालनिर्यासं लोबानं द्विपलं तथा ।।१९।।
लवंगं वै द्विकर्षं च सर्वान्संचूर्ण्य भावयेत् ।।
संकर्ष्य विधिना तैलं वृक्कशिश्नं च लेपयेत् ।।
षंढत्वनाशनं ज्ञेयं वृक्णबलप्रदं परम् ।।२०।।

सफेद चन्दन का बूरा २० तोले, सफेद राल ४० तोले, लोबान १० तोले, लौंग २ तोले। सबको बकरी के दूध में खरल करके छाया में सुखा के पूर्वोक्त विधान से तैल खैंच ले फिर इसको गुर्दों पर और इंद्रिय पर लेप करने से दोनों में बल आता है और नपुंसकता दूर होती है।।१९।।२०।।

४ कामदेवतैल

कामदेवस्य तैलस्य विधानं चाधुना शृणु ।।२१।।
जातीफलं लवंगं च सुगुंजां जातिपत्रिकाम् ।।
आकारकरभं चौलं मूलं करवीरजं सितम् ।।२२।।
ज्योतिष्मतीं समादाय त्रित्रिकर्षं पृथक्पृथक् ।।
इंद्रगोपं च गंडूषं षट्षट् कर्षप्रमाणतः ।।२३।।
कारस्करमितं कर्षं रजश्च गजदंतजम् ।।
अजादुग्धे भावयित्वा छायायां परिशोषयेत् ।।२४।।
पातालसंज्ञके यंत्रे विधिना तैलं पातयेत् ।।
नित्यं च मर्दयेच्छिश्ने ह्यग्रभागं विहाय च ।।२५।।

एकविंशतिपर्यंतं तांबूलेन च वेष्टयेत् ॥
दोषं नाशयते शीघ्रमयोनिमैथुनोद्भवम् ॥२६॥
उद्दण्डो जायते शिश्नःदशस्त्रीद्रावकः स्थिरः ॥
रोगार्ताय हि दातव्यं न दातव्यं प्रमादतः ॥२७॥

हे तात! अव कामदेव तैल का विधान सुनो। जायफल, लौंग, सफेद रतक, जावित्री, अकरकरा, दालचीनी, सफेद कनेरे के जड़ का वक्कल, मालकांगुनी प्रत्येक तीन तोले, केंचुवे, वीरवहूटी छः छः तोले, कुचले हाथीदांत का बुरादा, एक एक तोला। इन सवको बकरी के दूध में रगड़कर छाया में सुखावे फिर पातालयंत्र द्वारा विधिपूर्वक तेल निकाल लेवे। फिर सीवन और सुपारी छोड़कर लिंग पर इस तेल की मालिश करके ऊपर से बंगलापान लपेटे। इसी प्रकार २१ दिन करे। हस्तमैथुन और गुदमैथुन से उत्पन्न हुई नपुंसकता दूर होकर इन्द्रिय उद्दण्ड रहे। दश स्त्रियों के गमन की शक्ति हो, यह तेल जिनकी इंद्रिय में अयोनिमैथुन से शिथिलता हुई हो उन्हीं को इस्तेमाल करना चाहिये। अन्य मनुष्यों को प्रमादवश सेवन नहीं करना चाहिये॥२१॥२७॥

५ पलाशबीजतैल

पलाशसंभवान्बीजान्किम्पाकं कनकप्रभाम् ॥
कपोतारण्यजं विष्ठं प्रत्येकं षट् च कर्षकम् ॥२८॥
लवंगाकारकरभौ चोलं च कर्षसम्मितम् ॥
अजादुग्धे पेषयित्वा शोष्य तैलं च पातयेत् ॥२९॥
पूर्वोक्तेन विधानेन शिश्नपृष्ठे विलेपयेत् ॥
विंशैकदिवसै रोगान्मुच्यते हस्तसंभवात् ॥३०॥

ढ़ाक के बीज, कुचले, मालकांगुनी, जंगली कबूतर की बीट, प्रत्येक छः छः तोले, लौंग, कुचले, दालचीनी एक एक तोला। इनको बकरी के

दूध में रगड़कर छाया में सुखावे फिर पातालयंत्रद्वारा तैल निकालकर पहिले कही हुई विधि से लिंग की पीठ पर मले। २१ दिन ऐसे करने से हस्तमैथुन का विकार दूर होता है॥२८-३०॥

क्लैब्यहरं तैलम्

चुक्रं कारस्करं चैव ह्यश्वगंधा च कंगुनी ॥
त्वचं लवंगं सुमुनं जातिकोशं सुरक्तिका ॥३१॥
बीजं पलाशजं चैव विष्ठा वाराहसंभवम् ॥
विषं चाथ समाकुटच प्रत्येकं वै त्रिकार्षिकम् ॥३२॥
गंडूषं इंद्रगोपं च पल्लिं वै भूमिसंभवाम् ॥
मेदं च व्याघ्रजं शुद्धं प्रत्येकं षट्च कार्षिकम् ॥३३॥
काश्मीरं मृगमदं चैव मलं मनुजकर्णजम् ॥
टंकंटंकं प्रगृह्याथ सर्वान् सूक्ष्मं विचूर्णयेत् ॥३४॥
मेषीदुग्धे भावयित्वा विधिना तैलंकर्षयेत् ॥
तांबूलं वेष्टयेत्पश्चात् त्रिसप्ताहे विधानतः ॥३५॥
यदि काचिद्भवेत्पीडा तैलं तत्र न लेपयेत् ॥
तैलं क्लैब्यहरं नाम लिंगोद्दण्डत्वकारकम् ॥३६॥
शैथिल्यं न भवेत्तस्य दशवारानियाद्यदि ॥
हस्तगुदसंभवक्लैब्यनाशनं परमं मतम् ॥३७॥

चोक, कुचले, असगन्ध, मालकांगुनी, दालचीनी, लौंग, जावित्री, जायफल, सफेद रतक, ढाक के बीज, जंगली सुअर की विष्ठा, तेलियाविष प्रत्येक तीन तीन तोले, गंडोये, बीरबहूटी, सांडा, बाघ की चरबी, प्रत्येक छः छः तोले, केशर, कस्तूरी, मनुष्य के कान का मैल प्रत्येक तीन तीन मासे इन सबको भेड़ के दूध में खरल कर छाया में सूखावे फिर पातालयंत्र द्वारा तैल निकाल ले। इस तैल को इंद्रिय की

सीवन और सिर छोड़कर २१ रोज इंद्रिय पर मले। ऊपर से पान बांधे। इस तरह करते यदि कुछ फुन्सी हों तो बीच में तेल लगाना बन्द कर दे। आराम होने पर फिर लगावे। यह क्लैब्यहर तैल लिंग को लकड़ी की ताकतवाला बना देता है। स्त्री से १० बार गमन करने में भी शिथिलता नहीं होती। हस्तमैथुन और गुदामैथुन से प्राप्त हुई नपुंसकता दूर होती है परन्तु यह तैल नामर्द को ही देना चाहिये। प्रमादी पुरुषों को कभी भूलकर भी न बताना चाहिये।।३१-३७।।

पानिनाशक तैल

रोगार्ताय तु दातव्यमप्रकाश्यं तु ह्यन्यथा ।।
जोतिष्मती तु कुडवमजेपालं पलद्वयम् ।।
जातीफलं जातिपत्री चोलं च देवपुष्पकम् ।।३८।।
सर्वान्संमेल्य विधिना तैलं संकर्षयेत्ततः ।।
अग्रभागं च सीमानौ त्यक्त्वा लेपं प्रलेपयेत् ।।३९।।
पिडिकादर्शनात्त्यक्त्वा लेपने तैलसंभवम् ।।
रोपणीं प्रक्रियां कुर्याद्यावदारोग्यतां व्रजेत् ।।४०।।
अनेनैव विधानेन शिश्ननाडीभवं जलम् ।।
नश्यति नात्र संदेहो योगोयं परमोत्तमः ।।४१।।

मालकांगुनी १ पाव, जमालगोटे की गिरी आधपाव, जायफल, जावित्री, दालचीनी, लौंग यह एक एक छटांक लेकर सबका विधिपूर्वक तेल खैंच लेवे। इस तेल को इंद्रिय का अग्रभाग और सीमन छोड़के मले, जब फुन्सियां हो जावे तो तेल लगाना छोड़कर रोपणी मरहम लगावे। इस प्रकार करने से इंद्रिय की नसों की शिथिलताकारक पानी नष्ट हो जाता है। यह परम उत्तम योग है।।३८-४१।।

अजेपाल तैल

कर्षाजेपालजं तैलं द्विपलं जातिसंभवम् ।।
संमेल्य मर्द्दनं शिश्ने नाडीनां दोषनाशनम् ।।४२।।

एक तोला जमालगोटे का तैल लेकर १० तोले चमेली के तेल में मिलाकर इंद्रिय पर मर्दन करना इंद्रिय की नाड़ियों के विकार को दूर करता है।।४२।।

राक्षसतैल

अश्वगंधा तथा चुक्र करवीरं सुमनं त्वचम् ।।
जातीकोशं पलांश च आकारकरभं तथा ।।४३।।
लवंगं मर्कटीबीजं किंपाकं कनकप्रभम् ।।
चंदनं देवदारुं च बृहतीमर्कमूलकम् ।।४४।।
एरंडमाफूकं चैव धत्तूरं विषमेव च ।।
काश्मीरं मृगनाभिं च प्रत्येकं कर्षमानकम् ।।४५।।
चर्मको रोहितः पल्ली हींद्रगोपश्च कर्कटः ।।
शशःशल्यःशिवा गोधासिंहो व्याघ्रश्चभल्लुकः ।।४६।।
वन्यकपोतो गंडूषः गृध्रवाराहकस्तथा ।।
मेदोमांसान्यथाशक्यानानीयत्रिककार्षिकान् ।।४७।।
मेषीदुग्धे भावयित्वा पूर्ववत्तैलमाहरेत् ।।
नानायोगप्रयोगैश्च शैथिल्यं यन्न निर्गतम् ।।४८।।
उद्दण्डं जायते सोऽपि कोटियोगैर्विसर्जितः ।।
शैथिल्यं न भवेत्तस्य नित्यं दिक् स्त्री प्रगच्छतः ।।४९।।
तैलोयं राक्षसो नाम गोपनीयः प्रयत्नतः ।।
धनिनां यत्र युंजीत प्रायश्चित्तं समाचरेत् ।।
अन्यथा यः प्रकाशेत स भिषङ्नरकं व्रजेत् ।।५०।।

असगन्ध, चोक, सफेद, कनेर की जड़, जावित्री, दालचीनी, जायफल, पलाश के बीज, कुचले, मालकांगुनी, लौंग, कौंच के बीज, अकरकरा, सफेद चन्दन, देवदारु, बड़ी कटेली, आक की जड़, एरण्ड, अफीम, धतूरा, तेलियाविष, केशर, कस्तूरी प्रत्येक एक एक तोला, चमगादड़, साण्डा वीरबहूटी, केंकड़ा, खरगोश, सेह, स्यार, गोधा, शेर, व्याघ्र, रीछ, कबूतर, जंगली, कबूतर, गंडोये, गीध, जंगली सूअर, इनमें से जिसका मांस मिले, मांस लेवे। जिसकी चरबी मिल सके, चरबी लेवे। प्रत्येक तीन तोले लेकर भेड़ के दूध की भावना देकर पातालयंत्र से तेल खैंच लेवे। जिस मनुष्य को अनेक औषधि तैल प्रयोग से आराम न हुआ हो और अनेक वैद्यों ने इलाज करके छोड़ दिया हो और आराम न हुआ हो उसकी इंद्रिय कामशक्ति के बल से उद्दण्ड रहे। नित्य दश स्त्रियों से गमन करते हुए भी शिथिल न हो। इस राक्षसनाम तैल को कभी किसी के पास न बताना चाहिये। हमेशा छिपाके रखना चाहिए। जिस जगह इस तैल को बनाकर धनिक पुरुष के यहां उपयोग करे, पहले इसके बनाने का प्रायश्चित करना चाहिए। जो वैद्य बिना समझे हरेक को यह तैल समझावे अथवा उपयोग करे वह पापी वैद्य नरक में पड़ता है।।४३-५०।।

इति तैलविधानं च ह्यवश्यं ते निवेदितम् ।।

इस तरह यह तैलों की विधि नपुंसकों पर दया करके और तुमको योग्य समझकर कथन कर दिया है।।

यावदारोग्यतां याति तावद्यामं विवर्जयेत् ।।५१।।

तैलसेवन के समय जब तक बिल्कुल तन्दुरुस्त न हो जाय तब तक मैथुन आदि का विशेष परहेज रखे।।५१।।

अथ सेकान्प्रलेपांश्च क्लैब्यानां हितकाम्यया ॥
श्रूयतां विधिवत्तात वक्ष्ये विधिविधानतः ॥५२॥

अब इसके आगे नपुंसकों के कल्याण के लिये सेंक और लेपों की विधि और उनके सेवन की विधि को वर्णन करता हूं। तुम सावधान होकर सुनो॥५२॥

१ सेंक

इंद्रगोपश्च गंडूषो ह्यश्वगंधा तथैव च ॥
चुक्रं हरिलाचणकं भर्जितं च विनिक्षिपेत् ॥५३॥
चूर्णं वै दंतजं तत्र मेल्यं पोटलियुग्मकम् ॥
कृत्यसंत्यत्रिके तैले ह्युष्णे पोटलिकाक्षिपेत् ॥५४॥
मुहूर्तं सेकयेत्ताभ्यां तांबूलं वेष्टयेत्ततः ॥
अनेनविधिनां सेकं सप्तरात्रं च कारयेत् ॥५५॥

वीरबहूटी, केंचुए, असगंधनागौरी, चोख, अम्बा, हलदी भुने चणे, हाथी दांत का बुरादा, इन सबको छः छः मासे लेकर कूट छान कर दो पोटली बनावे फिर गुलरोगन को कोयले की आँच पर रख उसमें पोटली भिगोकर सहता सहता दो घड़ी तक सेंक करके ऊपर गर्म करके बंगला पान बांधे। इसी प्रकार सात रोज करे॥५३-५५॥

सेंक के बाद लेप

कुडवैकमुच्चटाबीजान्मेषीक्षीरे चतुर्गुणे ॥
पाचयित्वा विधानेन शिश्ने मासं विमर्दयेत् ॥
औद्दण्डचं जायते शिश्ने दोषं हत्वा ह्ययोनिजम् ॥५६॥

एक पाव उटंगण के बीज लेकर १ सेर भेड़ के दूध में खीर बनावे फिर इस खीर को लिंग पर आधे घंटे तक मलता रहे। इस प्रकार एक महीना करने से अयोनि मैथुन का दोष दूर होकर इंद्रिय में बल आ

जाता है। कामशक्ति बलवती होती है॥५६॥

अथवा

नागरं देवसुमनमाकारकरभं तथा ॥५७॥
चूर्णितं मधुयोगेन मासैकं लेपयेद्बुधः ॥
तांबूलैर्वेष्टितं कृत्वा पुरुषार्थप्रदायकम् ॥५८॥

सोंठ लौंग अकरका इन तीनों के चूर्ण को शहद मिलाके इंद्रिय पर लेप करे। ऊपर पान लपेटे, ऐसा एक महीना करने से इंद्रिय दृढ़ हो जाती है॥५७-५८॥

२ सेक

पलं गजदंतचूर्णं तथैव मत्स्यदंतजम् ॥
जातीफलं लवंगं च माषाष्टकमुदाहृतम् ॥५९॥
अरण्यजं पलांडुं च संचूर्ण्य पोटलीसमौ ॥
विधाय मेषीदुग्धं च पात्रे तु मृण्मये क्षिपेत् ॥६०॥
भाण्डोपरि च्छिद्रयुक्तं शरावं स्थापयेत्ततः ॥
अग्नौ संस्थापयेद्भांडं पोटल्युपरि संन्यसेत् ॥६१॥
स्वेदेनोष्मीभवेद्यावत्तावत्सेकं विधानतः ॥
कर्तव्यं घटिकायुग्मं तांबूलं वेष्टयेत्ततः ॥
दश दिवसान्विधायाथ शीतं वारि न संस्पृशेत् ॥६२॥

हाथीदांत का बुरादा ४ तोले, मच्छी के दांत का बूरा ४ तोले, लौंग ८ मासे, जायफल ८ मासे, ज़ंगलीगठा एक अदद। इन सबका चूर्ण कर दो पोटली बनावे फिर एक मिट्टी की हांड़ी में भेड़ का दूध डालकर ऊपर छिद्रयुक्त शरावी रखे फिर इसको आग पर गर्म होने को रखे। दूध के पकने से जो भाफ शरावी के छिद्र द्वारा निकले उस पर पोटली रखे। उस पोटली के गर्म होने पर उससे इंद्रिय की नसों को नाभि पर्यंत सेंक

करे कि उसको शराव पर गर्म होनी रखे। दूसरी को उठाकर सेंक करे। इसी तरह १ घंटा तक सेंके। ऊपर गर्भ करके बंगलापान बांधे। ऐसे दस दिन करे और ठंडे पानी से परहेज रखे।।५९-६२।।

सेंक के पीछे लेप

एलाफलं जातिकोशं मूलं कर्वीरजं सितम् ।।६३।।
शाल्मलीत्वचमादाय ह्याकुकुं षट्चमाषकम् ।।
कर्षतैले विनिक्षिप्य ह्युष्णं कृत्वा विलेपयेत् ।।६४।।
अवश्यं पुंस्त्वमाप्नोति षण्ढत्वं तस्य नश्यति ।।
शीतं वारि न सेवेत मैथुनं चापि वर्जयेत् ।।६५।।

बड़ी इलायची, जायफल, सफेद कनेर की जड़ का छिलका, अफीम, सेमल का छिलका, प्रत्येक छः छः मासे कपड़छान करके एक तोला तिल तैल में मिलाकर गरम करके इंद्रिय पर लगावे। इस तरह २१ रोज करने से अवश्य नपुंसकता दूर होकर पुरुषार्थ प्राप्त होता है। परंतु इस अवसर में शीतल जल और मैथुन से विशेष परहेज रखने चाहिये।।६३-६५।।

सेंक

आकारकरभं कुष्ठं जातीपत्रं फलं तथा ।।
अधकर्षप्रमाणेन सर्वान् संचूर्णयेत्पृथक् ।।६६।।
गुडमेरंडबीजांश्च कार्पासबीजखर्परम् ।।
तिलान्कर्षप्रमाणेन माक्षिकं द्विपलोन्मितम् ।।६७।।
सर्वेषां पोटलीं कृत्वा ह्यजादुग्धेन स्वेदयेत् ।।
अनेन जायते चौच्छ्रं ध्वजदोषनिवारणम् ।।६८।।

अकरकरा, कूठ, जायफल, जावित्री, हरेक छः छः मासे पुराना गुड़, एरंड के बीज, बिनोलै की गिरू, तिल प्रत्येक एक एक तोला, शहद दो

तोले, सबको कूट छानकर बकरी के दूध में भिगोकर अग्नि पर गर्म करके इंद्रिय पर सेंक करे तो इंद्रिय का विकार दूर होकर उद्दंडता हो।।६६-६८।।

अथवा

मलं मनुजकर्णस्य मेदः सूकरसंभवम् ।।
संखल्य लेपयेन्नित्यं हस्तदोषस्य शांतये ।।६९।।

मनुष्य के कान का मैल जंगली सूकर की चरबी में खरल करके लेप करे। ऐसे नित्य ४० दिन करने से हस्तमैथुन से प्राप्त हुई नपुंसकता दूर होती है।।६९।।

इन्द्रगोपादिलेप

टंकंटंकमिंद्रगोपं श्वेतगुंजां ह्यकर्भकौ ।।
माषैकं च समादाय लोहपाषाणसंकरम् ।।७०।।
तीक्ष्णमद्ये विमद्यार्थं शिश्ने नित्यं विलेपयेत् ।।
तांबूलं वेष्टयेत्पश्चात्सप्तरात्रिश्च नित्यशः ।।
अयोनिजं हरेद्दोषं कामवृद्धिकरं परम् ।।७१।।

वीरबहूटी, सफेद रतक, अकरकरा प्रत्येक तीन तीन मासे संखिया। १ मासा, इन सबको तीक्ष्ण मद्य में खरल करके इंद्रिय पर लेप करके पान लपेटे। इसी प्रकार सात रोज करने से इंद्रिय की शिथिलता दूर होकर कामशक्ति बलवती होती है।।७०।।७१।।

करवीरजटादिलेप

करवीरत्वग्द्विकर्षं दुग्धे प्रस्थद्वये पचेत् ।।७२।।
तच्च दुग्धं दधि कृत्वा मंथनेन विलोडयेत् ।।
नवनीतं विनिष्कृष्य स्वौषधिं तत्र निक्षिपेत् ।।७३।।
जातीफलमजेपालं विषमाखुपषाणकम् ।।

विधिना मर्दयेत्खल्वे ततो लेपं समाचरेत् ।।७४।।
त्यक्त्वाग्रभागंसीमानौ तांबूले तं प्रवेष्टयेत् ।।
पिडिका चेद्भवेच्छुद्धनवनीतेन लेपयेत् ।।
षंढत्वनाशनार्थाय लेपोयं समुदाहृतः ।।७५।।

दो तोले सफेद कनेर के जड़ के छिलके को कूटकर दो सेर दूध में पकाकर जमावे। फिर इस दही में मक्खन निकालकर जमालगोटा, जायफल, विषसंखिया इन चारों को पीसकर उपरोक्त मक्खन में खूब खरल करके इंद्रिय का अग्रभाग और सीमन छोड़कर लेप करे, ऊपर पान बांधे। इस प्रकार ७ रोज करे। यदि सूजन या फुन्सी हो जाय तो लेप बन्द करके शुद्ध धुला हुआ मक्खन लगावे। इसके प्रभाव से अयोनिमैथुन की नपुंसकता दूर होती है।।७२-७५।।

लेप

आमिषं तु कुलीरस्य तिलतैलेषु पाचयेत् ।।
ध्वजस्तेनोपलिप्तस्तु शैथिल्यं परिमुंचति ।।७६।।

कुलीर के मांस को तिलों के तेल में भूनकर इंद्रिय पर लेप करे तो इंद्रिय की शिथिलता दूर हो।।७६।।

कार्पासबीजलेप

कार्पसबीजमज्जाहिफेनं जातीफलं विषम् ।।
आकारकरभं सर्वं पलार्द्धं सूक्ष्मचूर्णितम् ।।७७।।
पलपंचमिता ग्राह्या वसा सूकरसंभवा ।।
संमर्दयेन्मेलयित्वा द्वात्रिंशत्प्रहरावधि ।।७८।।
लिंगलेपं विधायाथ नागवल्लीदलेन च ।।
बध्नीयान्नश्यति क्षिप्रं ध्वजपातः कियद्दिनैः ।।७९।।

बिनौले की मींगी, अफीम, जायफल, सिंगियाविष, अकरकरा,

प्रत्येक दो दो तोले लेकर कपड़छान चूर्ण करे। फिर इसमें २० तोले जंगली सूकर की चरबी मिलाकर ३२ पहर खरल करे फिर इसको (सुपारी व सीवन बचाकर) इंद्रिय पर लेप करे। ऊपर बंगलापान बांधकर पट्टी बांध देवें। इस प्रकार १४ दिन करने से लिंग की शिथिलता दूर होती है॥७७-७९॥

आखुविष्ठालेप

आखुविष्ठां समानीय मधुना पेषयेद्भृशम् ॥
विधिना लेपयेच्छिश्ने ध्वजस्योच्छ्रायकारकम् ॥८०॥

चूहे की मेगनों को शहद में एक दिन खूब रगड़े फिर लिंग पर लेप करे तो लिंग की शिथिलता दूर हो॥८०॥

अरिष्टकादिलेप

त्वचामरिष्टकभवामाकारकरभं तथा ॥
तीक्ष्णे मद्ये मर्दयित्वा शिश्ने नित्यं प्रलेपयेत् ॥८१॥
तांबूलं वेष्टयेत्पश्चाद्विंशैकदिवसानयम् ॥
योगोऽयोनिरतोद्भूतषण्ढत्वस्य विलोपकः ॥८२॥

रीठे का छिलका और अकरकरा इन दोनों को तीक्ष्ण मद्य में खरल करके २१ दिन पर्यंत इन्द्रिय पर लेप करके पान बांधे। इस प्रयोग से हस्तमैथुन और गुदमैथुन से पैदा हुई नपुंसकता दूर हो॥८१॥८२॥

करवीरादिलेप

करवीरमूलत्वचं संमर्द्य बृहतरिसे ॥
विधिना लेपयेच्छिश्ने ध्वजस्योत्तेजनाय वै ॥८३॥

सफेद कनेर की जड़ के छिलके को बड़ी कटेली के रस में खरल करके लिंग पर लेप करे तो कामशक्ति बलवती होती है॥८३॥

मूलिकाबीजादिलेप

कार्पासबीजमादाय निस्तुषं कारयेद्बुधः ॥
तथैव मूलिकाबीजान्कर्षद्वयमितान्पृथक् ॥८४॥
आकारकरभं कुष्ठं प्रत्येकं षट्चमाषकम् ॥
मद्ये तु मर्दयित्वा वै शिश्ने नित्यं प्रलेपयेत् ॥८५॥

बिनौले की गिरी मूली के बीज प्रत्येक दो दो भाग अकर्करा कड़वा कूठ, प्रत्येक एक एक भाग, इन सबको मद्य में खरल करके इंद्रिय पर लेप करे। इस प्रकार २१ दिन करने से लिंग की शिथिलता दूर हो॥८४॥८५॥

मर्दन

गोघृतमर्कदुग्धं च माक्षिकं समभागतः ॥
कांस्यपात्रे मर्दयित्वा शिश्ने नित्यं विमर्दयेत् ॥८६॥
मासैकमर्दनेनैव शैथिल्यं च विनाशयेत् ॥
हस्तमैथुनजं दुःखं प्रणश्यति न संशयः ॥८७॥

गौ का घी, आक का दूध, शहद इन तीनों को कांसी के बर्तन में कांसी के कटोरे से खूब रगड़े फिर इसमें से नित्य इंद्रिय पर मले तो इंद्रिय की शिथिलता दूर हो और हस्तमैथुन का विकार दूर हो॥८६॥८७॥

इंद्रिय सूख गई हो तो मर्दन

चोलोद्भवं तथा तैलं लवंगानां च मर्द्दयेत् ॥
स्वकृतोत्थं शिश्नशोषं मासमेकं च नश्यति ॥८८॥

दालचीनी तथा लौंग इनमें से किसी एक अथवा दोनों का तेल निकालकर इंद्रिय पर मलने से अपने कुकर्म से प्राप्त किया लिंगेद्रियक सूखना एक महीने में दूर होता है॥८८॥

इंद्रिय में स्पर्शज्ञानदायकतेल

यस्य शूकप्रयोगेण हस्तेन मर्दनेन च ॥
महता शिश्नयोगेन स्पर्शज्ञानं विनश्यति ॥
लोबानोद्भवं तैलं तत्र योज्यं सदा बुधैः ॥८९॥

इंद्रिय को बढ़ानेवाले लेप आदिकों के करने से तथा हाथ से मलने से अथवा इंद्रिय बड़ी होने के कारण यदि लिंगेंद्रिय का स्पर्शज्ञान जाता रहा हो तो बुद्धिमानों को उचित है उस जगह लोबान का तेल मला करें॥८९॥

इंद्रिय के बांकपन का यत्न

मनःशिला टंकणं च कुष्ठं कर्षप्रमाणतः ॥९०॥
जातीपत्ररसं चैव कर्षं वै त्रयमेव च ॥
तिलतैले पाचयित्वा लिम्पेदेकांतरे दिने ॥९१॥
एकं दिनं विहायाथ चत्वारिंशद्दिनेषु च ॥
विकृतिः शिश्नस्य नश्येत्कामोत्तेजकरं परम् ॥९२॥

मनसिल, सुहागा, कूठ, प्रत्येक एक एक तोला, चमेली के पत्तों का रस ३ तोले, तिल का तेल ६ तोले। इन सबको तेल में डालकर आंच पर पकावे। तेलमात्र शेष रहने पर इंद्रिय पर मले। चालीस दिन में २१ बार लगावे। एक दिन बीच में छोड़ कर एक दिन लगावे। इस प्रकार लगाने से इंद्रिय का बांकपन दूर हो और कामशक्ति बलवती हो॥९०-९२॥

इति तैलविधानं च लेपसेकविधिं तथा ॥
रोगार्ताय हि कर्त्तव्यमप्रकाश्यं तु चान्यथा ॥९३॥

इस प्रकार तेल लेप सेंक की विधि कथन कर चुके हैं सो यह तैलादि

रोगियों के कल्याण के लिये ही प्रकाश करने चाहिये अन्यथा प्रकाश करना नहीं चाहिये।।९३।।

तैललेप के समय पथ्यापथ्य

उष्णं च शीतमल्मं च तैलं च वातकारकम् ।।
त्याज्यं शिश्नगदे नित्यं व्रणवत्सेवनं हितम् ।।
मुद्गं घृतं शुभान्नं च दुग्धं वा तण्डुलं तथा ।।९४।।

मिर्च आदि तीक्ष्ण और अत्यंतगर्म, अत्यंत शीत, खटाई, तेल, वातकारी पदार्थ इन सबको इंद्रिय के विकार में त्याग देवे और व्रणरोग में जो हित हो उसका सेवन करे। तथा मूंग, घृत, शुभ हलका अन्न, दूध, चावल इनका सेवन करे।।९४।।

इति श्रीवैद्यपंचाननपंडितरामप्रसादोपाध्यायप्रणीतेनपुंसकामृतार्णव ध्वजविकारनाशकतैलादिवर्णन नाम षष्ठस्तरंगः ।।६।।

अथ सप्तमस्तरंगः

नपुंसककारणत्वेन प्रमेहवर्णनम्

शिष्य उवाच

यदुक्तं श्रीमता नाथ क्लैब्ये मेहोऽपि कारणम् ।।
अतस्तद्ब्रूहि कृपया सनिदानचिकित्सितम् ।।१।।

शिष्य बोले-हे नाथ! श्रीमान् ने नपुंसकता में प्रमेह को भी कारणता दी थी अर्थात् नपुंसकों का निदान कथन करते समय प्रमेह से नपुंसकता होना भी कथन किया था। इसलिये सविनय प्रार्थना है कि, उस प्रमेह

का भी कुछ निदान और चिकित्सा नपुंसकों के कल्याण के लिये कृपया कथन कीजिये।।१।।

प्रश्नं शिष्यमुखाच्छ्रुत्वा गुरुः संहृष्टमानसः ॥
उवाच कृपया शिष्यं मनसा तं प्रशंसयन् ॥२॥

इस प्रश्न को शिष्य के मुख से सुनकर प्रसन्नमन हुए गुरु मन में शिष्य की बड़ाई करते हुए कृपा करके कहने लगे।।२।।

गुरुरुवाच

तात कारणता मेहे क्लीबतायाऽपि वर्तते ॥
दोषा धातून्दूषयित्वा मेहांश्च जनयंति वै ॥३॥
यतो बस्तिगता दोषाः सुखस्वप्नादिकारणैः ॥
वीर्यं मूत्रं च संदूष्य पुंस्त्वं च नाशयंति वै ॥४॥
अतः किंचिन्निदानं च चिकित्सां सिद्धिसंयुताम् ॥
वक्ष्ये युक्तिप्रमाणैश्च विधिवच्छास्त्रसंमितैः ॥५॥

हे तात! प्रमेह में भी नपुंसकता की कारणता अवश्य है क्योंकि वात पित्त कफ प्रायः सब धातुओं को दूषित करके ही प्रमेह को पैदा करते हैं और सुखपूर्वक बैठने सोने आदि अनेक कारणों से कुपित हुए दोष वस्ति में प्राप्त होकर वीर्य को, मूत्र को भी दूषित कर देते हैं, फिर वीर्य और मूत्र के दूषित होने से मूत्रवाही और वीर्यवाही नली भी दूषित होती है। उसमें प्रमेहपिडिका आदि विकार होने से ध्वजभंग हो जाता है और वीर्य के दूषित होने से शुक्रक्षय होकर नपुंसकता हो जाती है और पुरुषार्थ नष्ट हो जाता है। इसलिये प्रमेह का कुछ निदान और सिद्धचिकित्सा का वर्णन शास्त्रसंमत युक्ति और प्रमाण से विधिपूर्वक कथन करेंगे। तुम सावधान होकर सुनो।।३-५।।

प्रमेहनिदान

आस्यासुख स्वप्नसुखं दधीनि ग्राम्यौदकानूपरसाः पयांसि ॥
नवान्नपानं गुडवैकृतं च प्रमेहहेतुः कफकृच्च सर्वम् ॥६॥

बैठने के सुख से, दिन में सोने से, स्वप्न में स्त्रीसंग करने से, दही, ग्रामसंचारी जीवों के मांस (भेड़, बकरी) जलसंचारी मछली, आदि के खाने से, जल के समीप रहनेवाले जीवों के मांस खाने से और अनेक मांसरस, दूध, नया अन्न, नया जल, गुड़ और गुड़ के विकार विशेष तथा और विकारों से भी और कफ के पैदा करनेवाले सब पदार्थ प्रमेह के कारण हैं अर्थात् इन कारणों से प्रमेह होता है॥६॥

संप्राप्ति

मेदश्च मांसं च शरीरजं च क्लेदं कफं बस्तिगतं प्रदूष्य ॥
करोति मेहान्समुदीर्णमुष्णैस्तानेवपित्तंपरिदूष्यचापि ॥
क्षीणेषु दोषेष्ववकृष्यधातून्संदूष्यमेहान्तकुरुतेऽनिलश्च॥७॥

बस्तिगत कफ, मेद, मांस और शरीर में से होनेवाले क्लेद (जल) को दूषित कर कफ के प्रमेह को पैदा करता है और अपने कारणों से अर्थात् अत्यंत गर्म पदार्थों के सेवन करने से बढ़ा हुआ पित्त भी, मेद मांस आदिकों को दूषित करके पित्त के प्रमेहों को पैदा करता है। इसी प्रकार दोषों (वात, पित्त, कफ) के क्षीण हो जाने से वायु भेद मज्जा आदि धातुओं को दूषित करके उनके स्थान से खींचकर बस्ती के मुख पर लाकर वायु के प्रमेहों को पैदा करता है॥७॥

सव प्रमेहों में मूत्रदूष्य

दोषो हि बस्तिं समुपेत्य मूत्रं ॥
संदूष्य मेहान् कुरुते यथास्वम् ॥८॥

इस प्रकार वातादिदोष वस्ति में प्राप्त होकर मूत्र को दूषित करके

प्रमेहों को पैदा करते हैं॥८॥

प्रमेह में दूष्य

मेदो मांसं तनुक्लेदो वसा मज्जा लसीकया ॥
ओजो रसोऽसृक्छुक्रं च मूत्रं मेहेषु दुष्यति ॥९॥

मेद, मांस, देह का क्लेद, चिकनाई, मज्जा, लसी का (मांस के घाव का जल), ओज, रस, रुधिर, शुक्र, मूत्र इनको दोष दूषित करके प्रमेहों को पैदा करते हैं। इस वास्ते इन सबको दूष्य अर्थात् दूषित होनेवाले कहते हैं॥९॥

प्रमेह के पूर्वरूप

दंतादीनां मलाढ्यत्वं प्राग्रूपं पाणिपादयोः ॥
दाहश्चिक्कणता देहे तृट् स्वाद्वास्यं च जायते ॥१०॥

दांत, तालु, गला आदि में मैल जमा रहना, हाथ पैरों में दाह को होना, देह का चिकना रहना, प्यास लगे और मुख में मिठास रहे। यह प्रमेह के पूर्वरूप हैं॥१०॥

प्रमेह के सामान्य लक्षण

सामान्यलक्षणं तेषां प्रभूताविलमूत्रता ॥
शुक्रद्रवोऽप्रमाणेन मूत्रे विषमतोपि वा ॥११॥

बहुत गंदला पेशाब आना तथा वीर्य मिला मूत्र उतरना, मूत्र से आगे अथवा पीछे वीर्य का गिरना, यह सामान्यता से प्रमेह के लक्षण है॥११॥

प्रमेहभेदों की कल्पना

दोषदूष्यविशेषेऽपि तत्संयोगविशेषतः ॥
मूत्रवर्णादिभेदेन भेदो मेहेषु कल्प्यते ॥१२॥

यद्यपि दोष वात पित्त कफ और दूष्य (रक्तरक्तादि) विशेष नहीं

भी हैं अर्थात् जितने हैं उनसे अधिक नहीं हो सकते, इसलिये वातादि भेद से प्रमेह भी अधिक न होने चाहिए। परंतु इन ही दोषदूष्यों की न्यूनाधिकता से और मूत्र के वर्णादि भेद से प्रमेह २० प्रकार के कथन किये हैं।।१२।।

कफ के १० प्रमेह

अच्छं बहुसितं शीतं निर्गंधमुदकोपमम् ॥
मेहत्युदकमेहेन किंचिदाविलपिच्छिलम् ॥१३॥
इक्षो रसमिवात्यर्थं मधुरं चेक्षुमेहतः ॥
सांद्रीभवेत्पर्युषितं सांद्रं स्रेहेन मेहति ॥१४॥
सुरामेही सुरातुल्यमुपर्यच्छमधोघनम् ॥
संहृष्टरोमा पिष्टेन पिष्टवद्बहुलं सितम् ॥१५॥
शुक्राभं शुक्रमिश्रं वा शुक्रमेही प्रमेहति ॥
मूत्राणून्सिकतामेही सिकतारूपिणो मलान् ॥१६॥
शीतमेही सुबहुशो मधुरं बहु शीतलम् ॥
शनैः शनैः शनैर्मेही मंदं मंदं प्रमेहति ॥
लालातंतुयुतं मूत्रं लालामेहेन पिच्छिलम् ॥१७॥

(१) उदकप्रमेह में, स्वच्छ बहुत सफेद, शीतल, गंधरहित, पानी के समान, कभी कुछ गदलाई लिये, मूत्र होता है। (२) ईख के रस के समान अत्यंत मीठा इक्षुमेह में मूत्र आता है। (३) सांद्रमेह में रात्रि को पेशाब करके पात्र में धरे तो सवेरे गाढ़ा हो जाता है (४) जिसका मूत्र मद्य के समान ऊपर स्वच्छ नीचे गाढ़ा हो उसको सुरामेही कहते हैं (५) पिसे हुए चावलों के पानी के समान सफेद और बहुत मूत्र मूते और मूत के समय रोमांच हो उसको पिष्टमेह कहते हैं (६) शुक्र में, वीर्य के समान या वीर्यमिला मूत्र होता है। (७) सिकतामेह में मूत्र में

बालू के समान छोटे छोटे कण गिरते हैं। (८) शीतमेह में मीठा और अत्यंत शीतल ऐसा बार बार बहुत मूत्र होता है। (९) शनैर्मेह में थोड़ा थोड़ा बूंद बूंद मूत्र आता है। (१०) लालामेह में लार के समान तारयुक्त चिकना मूत्र होता है। ये १० कफ की अधिकता से होते हैं॥१३-१७॥

पित्त के ६ प्रमेह

गंधवर्णरसस्पर्शैः क्षारेण क्षारतोयवत् ॥१८॥
नीलमेहेन नीलाभं कालमेही मषीनिभम् ॥
हारिद्रमेही कटुकं हरिद्रासन्निभं दहेत् ॥१९॥

(१) क्षारमेह में खारे जल के समान गंध रस स्पर्श में मूत्र होता है। (२) नीलमेह में नीले रंग का मूत्र होता है (३) काल में हमें, काले रंग का मूत्र होता है (४) हरिद्रामेह में हलदी की समान रंगवाला दाहयुक्त मूत्र होता है॥१८॥१९॥

विस्रमांजिष्ठमेहेन मंजिष्ठासलिलोपमम् ॥
विस्रमुष्णं सलवणं रक्ताभं रक्तमेहतः ॥२०॥

(५) मांजिष्ठमेहमें, आमदुर्गंधयुक्त और मंजीठ के समान रंग का होता है (६) रक्तमेह में दुर्गंधयुक्त, गरम, खारयुक्त और रुधिर समान लाल मूत्र होता है। ये ६ पित्त से होते हैं॥२०॥

वायु के ४ प्रमेह

वसामेही वसामिश्रं वसाभं मूत्रयेन्मुहुः ॥
मज्जाभं मज्जमिश्रं वा मज्जमेही मुहुर्मुहुः ॥२१॥
कषायमधुरं रूक्षं क्षौद्रमेहं वदेद्बुधः ॥
हस्ती मत्त इवाजस्रं मूत्रं वेगविवर्जितम् ॥
सालसकिं विबद्धं च हस्तिमेही प्रमेहति ॥२२॥

(१) वसामेही, चरबी के समान या चरबी मिला मूत्र मूते। (२) मज्जामेह में, मज्जा के समान या मज्जामिला बार बार मूत्र आता है। (३) क्षौद्रमेह में, शहद के समान, कषैला, मीठा, मूत्र होता है। (४) हस्तिमेह में मस्तहाथी के समान वेगरहित तारयुक्त ठहर ठहर के मूते ये चार वात के विकार से होते हैं॥२१॥२२॥

असाध्य

आलस्यं ष्ठीवनं देहे मक्षिकाणां परिग्रहः ॥२३॥
मूर्च्छाच्छर्दिज्वरश्वासकासविसर्पगौरवः ॥
पिडिकापीडितश्चैव प्रमेहो हंति मानवम् ॥२४॥

आलस्य, मुख से लारों का गिरना, शरीर पर मक्खियों का बैठना, मूर्च्छा, छर्दी, ज्वर, श्वास, खांसी, दारुणप्रमेह* की पिडिका (फुनसी) का होना इन उपद्रवों से युक्त प्रमेह मनुष्य को मार डालता है॥२३॥२४॥

सब प्रमेहों में मूत्र में मीठा आता है।

सर्व एव प्रमेहास्तु कालेनाप्रतिकारिणः ॥
मधुमेहत्वमायांति तदासाध्या भवंति हि ॥२५॥

सब प्रकार के प्रमेहों में प्रमेह के पैदा होते ही यत्न न करने से कुछ काल पाकर पेशाब में मीठा आने लग जाता है इसी कारण सब प्रमेहों की ही मधुमेह संज्ञा होती है। मधुमेह होने से प्रायः प्रमेह असाध्य हो जाते हैं॥२५॥

वातादिभेद से साध्यासाध्य

मेहाः कफभवाः साध्याः कृच्छ्रसाध्यास्तु पित्तजाः ॥
असाध्या वातजा ज्ञेयाश्चिकित्सा शोषिणी यतः ॥२६॥

* प्रमेहपिडिका सुश्रुतादिग्रंथों में देखें।

कफ के प्रमेह साध्य हैं। पित्त के कष्टसाध्य हैं। वायु के असाध्य हैं क्योंकि प्रमेहों में सब चिकित्सा शोषण होती है वायु शोषण पदार्थों से कुपित होता है।।२६।।

प्रमेहों से नपुंसकता

रसशुक्रादिदुष्टत्वाद्वीर्यत्वं नश्यति स्वयम् ॥
पिडिकाभिर्दारुणाभिर्ध्वजभंगः प्रवर्तते ॥२७॥
एवं प्रवर्तिते चक्रे जीवनं हि निरर्थकम् ॥
अतस्तद्दोषशांत्यर्थं सिद्धयोगान्वदामि ते ॥२८॥

हे तात! जब प्रमेहों में रस, रक्त, मांस, वीर्य आदि सबही खराब हो जाते हैं तब वीर्य की शक्ति तो स्वयं ही नष्ट हो जाती है और दारुण प्रमेह की पिंडिकाओं का विकार इंद्रिय में भी होकर ध्वजभंग नपुंसकता आकर अपना अधिकार जमा लेती है, इस प्रकार इस रोग का चक्र चलने से मनुष्य का जीवन ही निरर्थक हो जाता है। इसलिये हे शिष्य! अब तुम्हारे पास इस दुष्ट प्रमेह के शासनकर्ता सिद्ध योगों का वर्णन करता हूँ, तुम सुनो।।२७।।२८।।

कफ के प्रमेहों का यत्न

त्रिफलां दारुहारिद्रं मुस्तकं देवदारुकम् ॥
क्वाथयित्वा मधुयुतं कफमेहनिवृत्तये ॥२९॥

त्रिफला, दारुहलदी, नागरमोथा, देवदारु इनका क्वाथ करके शहद मिलाकर पीवे तो कफ के प्रमेह नष्ट हों।।२९।।

मुस्ताहरीतकीलोध्रैः कट्फलेन कृतं शृतम् ॥
पीतं मधुयुतं हंति प्रमेहं कफहेतुकम् ॥३०॥

नागरमोथा, हरड, लोध, कायफल, इनके क्वाथ में शहद डालकर पीना कफ के प्रमेहों को दूर करता है।।३०।।

पित्त प्रमेह की चिकित्सा

पटोलनिंबामलकामृतानां पिबेत्कषायं मधुना समेतम् ॥
उशीरलोध्रार्जुनचंदनानां तथापिबेत्पित्तनिमित्तमेही॥३१॥

पित्त के प्रमेह में पटोलपत्र, निंबू का वक्कल, आमले, गिलोय इनका क्वाथ कर शहद मिलाकर पीवे। अथवा खस, लोध, धव, लाल चन्दन इनका क्वाथ शहद मिलाकर पीवे तो पित्त का प्रमेह नष्ट हो॥३१॥

वात प्रमेह यत्न

त्रिफलागोक्षुरुचूर्णं घृतमाक्षिकसंयुतम् ॥
लेहयेन्मासयुग्मं च वातमेहनिवृत्तये ॥३२॥

त्रिफले और गोखरू के चूर्ण को शहद और घी में मिलाकर नित्य दो महीने चाटे तो वातप्रमेह निवृत्त हो॥३२॥

सब प्रकार के प्रमेहों का यत्न

मधुना त्रैफलं चूर्णमथ वाऽश्मजतूद्भवम् ॥
लोहजं वाऽभयोत्थं वा लिहेन्मेहनिवृत्तये ॥३३॥

त्रिफले के चूर्ण को शहद में मिलाकर चाटने से सब प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं। अथवा शिलाजीत के खाने से भी सर्व प्रमेह नष्ट होते हैं और लोह भस्म अथवा हरडका चूर्ण शहद में मिलाकर चाटने से प्रमेह दूर होते हैं॥३३॥

गुडूच्याः स्वरसः पेयो मधुना सह मेहनुत् ॥३४॥

गिलोय का स्वरस शहद मिलाकर पीवे तो सब प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं॥३४॥

सिंहामृत घृत

कंटकार्य्या गुडूच्याश्च संहरेच्च शतं पलम् ॥
संकुटचोलूखले विद्वांश्चतुर्द्रोणेंभसः पचेत् ॥३५॥

तेन पादावशेषेण घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥
त्रिकटुत्रिफलाराह्नाविडंगान्यथ चित्रकम् ॥३६॥
काश्मर्यः पंचमूलानि पूतिकस्य त्वगेव च ॥
कलिंग इति सर्वाणि सूक्ष्मपिष्टानि कारयेत् ॥३७॥
अक्षमात्रं पिबेत्प्रातः शालिभिः पयसा हितैः ॥
प्रमेहं मधुमेहं च मूत्रकृच्छ्रं भगंदरम् ॥३८॥
आलस्यं चांत्रवृद्धिं च कुष्ठरोगं विशेषतः ॥
क्षयं चैव निहंत्येतन्नाम्ना सिंहामृतं घृतम् ॥३९॥

कटेली और गिलोय को सौ सौ पल लेकर कूटकर ६४ सेर पानी में पकावे जब १६ सेर बाकी रहे तो उतारकर छान लेवे फिर इस क्वाथ में त्रिफला,त्रिकुटा, रायसन,वायविडंग,चीता, कुम्भेर,पंचमूल, पूतिकरंजकी छाल, इन्द्रजौ इन सबका कल्क बनाकर एक सेर घृत सिद्ध करे फिर प्रात:काल इस घृत में से एक तोला घृत खाकर दूध पीवे और दूध चावल खाय तो प्रमेह मधुमेह, मूत्रकृच्छ्र, भगंदर, आलस्य, अंत्रवृद्धि, कुष्ठ, क्षय यह सब रोग नष्ट होते हैं॥३५-३९॥

धान्वन्तर घृत

दशमूलं करंजौ द्वौ देवदारुहरीतकी ॥
वर्षाभूर्वारुणो दन्ती चित्रकं सपुनर्नवम् ॥४०॥
सुधानिंबकदंबाश्च बिल्वभल्लातकानि च ॥
शठी पुष्करमूलं च पिप्पलीमूलमेव च ॥४१॥
पृथग्दशपलान्भागानेतांस्तोयार्म्मणे पचेत् ॥
यवकोलकुलित्थानां प्रस्थं प्रस्थं विपाचयेत् ॥४२॥
तेन पादावशेषेण घृतप्रस्थं पचेद्भिषक् ॥
निचुलं त्रिफला भार्ङ्गीं रोहिषं गजपिप्पली ॥४३॥

भृंगवेरं विडंगानि वचा काम्पिल्लकं तथा ॥
गर्भेणानेन तत्सिद्धं पाययत्तु यथाबलम् ॥४४॥
एतद्धान्वंतरं नाम विख्यात सर्पिरुत्तमम् ॥
कुष्ठप्रमेहगुल्मांश्च श्वयथुं वातशोणितम् ॥४५॥
प्लीहोदराणि चार्शांसि विद्रधिः पिडिकाश्च याः ॥
अपस्मारं तथोन्मादं सर्पिरेतन्नियच्छति ॥४६॥
पृथक्तोयार्म्मणे तत्र पचेद्द्रव्याच्छत शतम् ॥
शतत्रयाधिके तोयमुत्सर्गक्रमतो भवेत् ॥४७॥

दशमूलकी सब औषधियें १०० पल,दोनों करंज १०० पल, देवदारु,हरड,पुनेरा,वरना,दंती,चीता,पुनर्नवा,थूहर, निम्ब, कदम्ब, बलगिरि,भिलावे,कचूर,पोकरमूल,पीपलामूल प्रत्येक चालीस२ तोले लेवे। जौर, वेर, कुलथी प्रत्येक एक एक सेर लेवे फिर इनको अलग अलग सोलह सेर जल में पकावे चौथा हिस्सा बाकी रहे तो उतारकर छान लेवे फिर इस क्वाथ में जलवेत्, त्रिफला, भारंगी, रोहिषतृण, गजपीपल, अदरख, वायविडंग, वच, कमीला, प्रत्येक एक एक तोले लेकर कल्क बनावे उत्तम गोघृत १ सेर लेकर इन औषधियों का क्वाथ और कल्क मिलाकर सिद्ध करे। इस घी को धान्वन्तरघृत कहते हैं। इसके सेवन से कोढ़, प्रमेह, गुल्म, सूजन, वातरक्त, प्लीहा, उदररोग, बवासीर, विद्रधि, प्रमेह पिडिका, अपस्मार, उन्माद, यह सब रोग नष्ट होते हैं इस घृत में ऊपर कही सौ सौ पल औषधि अलग अलग सोलह सोलह सेर जल में पकाने चाहिये।।४०-४७।।

चन्द्रप्रभा

चंद्रप्रभावचामुस्ताभूनिंबसुरदारवः ॥
हरिद्रातिविषा दार्वी पिप्पली मूलचित्रकम् ॥४८॥

धान्यकं त्रिफला चव्यं विडंगं गजपिप्पली ॥
सुवर्णमाक्षिकं व्योषं द्वौ क्षारौ लवणत्रयम् ॥४९॥
एतानि टंकमानानि संगृह्णीयात्पृथक्पृथक् ॥
द्विकर्षं हतलोहं स्याच्चतुष्कर्षा सिता भवेत् ॥५०॥
शिलाजत्वष्टकर्षं स्यादष्टकर्षाश्च गुग्गुलोः ॥
विधिना योजितैरेतैः कर्तव्या गुटिका शुभा ॥५१॥
चंद्रप्रभादिर्विख्याता सर्वरोगप्रणाशिनी ॥
निहंति विंशतिमेहान्कृच्छ्रमष्टविधं तथा ॥५२॥
चतस्रश्चाश्मरीस्तद्वन्मूत्राघातांस्त्रयोदश ॥
अण्डवृद्धिं पाण्डुरोगं कामलां च हलीमकम् ॥५३॥
श्वासं कासं तथा कुष्ठमग्निमांद्यमरोचकम् ॥
वातपित्तकफव्याधिंबल्या वृष्या रसायनी ॥५४॥

कचूर,वच,नागरमोथा,चिरायता,देवदारु,हलदी,अतीस,दारुहलदी, पीपलामूल, चित्रक, धनिया.त्रिफला, चव्य, वायविडंग, गजपीपल सोनामक्खी की भस्म, सोंठ, मिरच, पिपल, सज्जीखार, जवाखार, संचरनमक, सेंधानमक, बिडनमक प्रत्येक चार २ मासे, लोहभस्म २ तोले, मिसरी ४ तोले, उत्तम शिलाजीत ८ तोले, शुद्ध गुग्गुल ९ तोले। इन सबको मिलाकर लोहे के इमामदस्ते से खूब कूटे और एक जीव बना देवे फिर दो दो मासे की गोली बनावे। यह चन्द्रप्रभा गुटिका सर्वरोगनाशिनी है। इसके सेवन से बीस प्रकार के मूत्रकृच्छ्र, पथरी, मूत्राघात, अण्डवृद्धि, पांडुरोग, कामला, हलीमक, श्वास, खांसी, कुष्ठ, मन्दाग्नि, अरोचक ये सब रोग नष्ट हों। वात्त, पित्त, कफ के सब रोग नष्ट होते हैं और बलकारक वृष्य और रसायन है।।४८-५४।।

गन्धकयोग

गंधकं गुडसंयुक्तं कर्षं भुक्त्वा पयः पिबेत् ।।
विंशतिस्तेन नश्यंति प्रमेहपिटिका अपि ।।५५।।

शुद्ध आमलासार गन्धक एक तोले लेकर गुड़ में मिलाकर खावे। ऊपर दूध पीवे तो बीस प्रकार का प्रमेह और प्रमेहपिडिका नष्ट होती है।।५५।।

नागभस्म योग

शुद्धस्य च मृतस्याहे रजोवल्लमितं लिहेत् ।।
सुनिशामलकं क्षौद्रं सर्वमेहप्रशांतये ।।५६।।

शुद्ध किये शीशे की भस्म ३ रत्ती लेकर हलदी और आमले के चूर्ण के साथ सहत में मिलाकर नित्य चाटे तो सब प्रकार के प्रमेह नष्ट होते हैं।।५६।।

अभ्रक योग

निश्चंद्रमभ्रकं भस्म सवरा रजनीरजः ।।
मधुना लीढमचिरात्प्रमेहान्विनिवर्तयेत् ।।५७।।

निश्चन्द्र अभ्रक भस्म में त्रिफला और हलदी का चूर्ण मिलाकर शहत में चाटे तो सब प्रमेह शीघ्र नष्ट होते हैं।।५७।।

शिलाजीत प्रयोग

शिलाजतुरसं पीत्वा प्रातः क्षीरसितायुतम् ।।
मुच्यते सर्वमेहेभ्यस्त्रिसप्तदिवसैनरः ।।५८।।

शिलाजीत को मिसरी मिले दूध से नित्य प्रातःकाल सेवन करे तो २१ रोज में सब प्रमेह दूर हों।।५८।।

वंगेश्वर रस

रसस्य भस्मना तुल्यं वंगभस्म प्रकल्पयेत् ।।

अस्य गुंजाद्वयं हंति मेहान्क्षौद्रसमन्वितम् ॥
पक्वोदुंबरचूर्णं च मधुना चानुपानकम् ॥५९॥

पारे की भस्म (अथवा चन्द्रोदय या रससिंदूर) और बंगभस्म, दोनों को मिलाकर सहत के साथ दो रत्ती प्रमाण चाटे और ऊपर से गूलर के फलों का चूर्ण शहत में मिलाकर खावे तो सब प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं॥५९॥

महावंगेश्वररस

वंगं कांतं गगनं हेमपुष्पसमं समम् ॥
कुमारीरसतो भाव्यं सप्तवारं भिषग्वरैः ॥६०॥
एष वंगेश्वरो नाम प्रमेहान्विंशति जयेत् ॥
मूत्रकृच्छ्र सोमरोगं पांडुरोगं महाश्मरीम् ॥६१॥

वंगभस्म, कांतभस्म, नागभस्म, धतूरे के फूल इनको समभाग लेकर घीकुमार के रस में खरल करके एक रत्ती प्रमाण गोलियां बनाकर सहत के साथ खावे तो यह वंगेश्वर रस २० प्रकार के प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, सोम, पांडुरोग, पथरी इन सबको दूर करता है॥६०॥६१॥

मृतं वंगं मृतं चाभ्रं शुद्धपारदगंधकम् ॥६२॥
भूनिंबपिप्पलीमूलं त्रिकटुत्रिफलात्रिवृत् ॥
रसांजनविडंगाब्दबिल्वगोक्षुरदाडिमम् ॥६३॥
प्रत्येकं तोलकं ग्राह्यं शुद्धमश्मजतोः पलम् ॥
गोपालकर्कटीमूलस्वरसैर्वटिकां कुरु ॥६४॥
प्रमेहान्विंशति हंति मूत्रकृच्छ्रं हलीमकम् ॥
अश्मरीं कामलां पांडुं मूत्राघातमरोचकम् ॥६५॥
अनुपानं प्रयोक्तव्यं छागीदुग्धं पयोथवा ॥
धात्रीफलस्य निर्यासं क्वाथं कौलत्थजं पिबेत् ॥६६॥

वंगभस्म, अभ्रकभस्म, शुद्धपारा, शुद्धगंधक, चिरायता, पीपलामूल, वायविडंग, त्रिकुटा, त्रिफला, निसोथ, रसौत, मोथा, बेलगिरी, गोखरू, अनारदाना, प्रत्येक दो २ तोले लेवे,शुद्धशिलाजीत ४ तोले लेवे।प्रथम पारे गंधक की कजली करके फिर सबका चूर्ण उसमें मिलाके गोपालकर्कटी (कचरी) की जड़ के स्वरस में खरल कर दो दो रत्ती की गोली बनावे और बकरी के दूध अथवा जल, या आमले के रस के साथ खाय अथवा कुलथी के काढ़े से खाय तो यह प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हलीमक, पथरी, कामला, पांडु, मूत्राघात, अरोचक इन सबको दूर करता है।।६२-६६।।

पंचाननवटी

चित्रकं गंधपाषाणं त्र्यूषणं पारदं विषम् ।।
त्रिफला मुस्तकं चैषां श्लक्ष्णचूर्णीकृतं शुभम् ।।६७।।
गुंजानुमानकां तां तु प्रातरेकां च भक्षयेत् ।।
अष्टादशविधं कुष्ठं वातगुल्मं स शूलकम् ।।६८।।
वातरोगं कफं सर्वं प्रमेहाश्मरिकृच्छ्रजम् ।।
प्लीहानं राजरोगं च वह्निसादमरोचकम् ।।६९।।
त्वरितं हंति चाभ्यासाज्ज्वरघ्नी संप्रकीर्तिता ।।
पंचाननवटी ह्येषा रोगाणां क्षयकारिणी ।।७०।।

चित्रककी छाल, सोंठ, मिरच, पीपल; शुद्ध गंधक, शुद्ध पारा, सिंगियांविष, त्रिफला, नागरमोथा इन सबको बराबर लेवे। पहले पारे गंधक की कजली करके फिर सब दवाइयों का चूर्ण भी कजली में ही मिला देवे। पानी के संयोग से रगड़कर एक एक रत्ती की गोली बनावे। इस गोली के सेवन से कुष्ठ, वातगुल्म, शूल, वायु के रोग, कफरोग, सब किस्म के प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, प्लीहा, राजरोग, मंदाग्नि, अरुचि,

ज्वर, यह सब दूर होते हैं। यह पंचाननवटी सब रोगों को नष्ट करनेवाली है।।६७-७०।।

त्रिफलापाक

प्रस्थार्द्धं त्रिफलाचूर्णं शुद्धतोये विभावयेत् ।।
चतुःपले घृते भर्ज्य मंदमंदेन वह्निना ।।७१।।
त्रिकुटा गोक्षुरु एला चित्रकं पुष्करं तथा ।।
शाणद्वयप्रमाणेन मुस्तक त्वक्पचत्रजम् ।।७२।।
निस्तुषं धान्यकं दद्यात्पलार्द्धं च प्रमाणतः ।।
काश्मीरमश्मजं शुद्धं षण्मासं च प्रमाणतः ।।७३।।
प्रस्थैकस्य सितायास्तु पाक कृत्वा विधानतः ।।
शीते मधु प्रदातव्यं कुडवैकमितं तथा ।।७४।।
कर्षद्वयप्रमाणेन भोक्तव्यं च द्विसंध्ययोः ।।
नेत्ररोगशिरोरोगान्सर्वान्मेहांश्च नाशयेत् ।।७५।।

आधसेर त्रिफले का चूर्ण लेकर १ पाव शुद्ध जल में भिगोकर २० तोले घृत में मंद मंद आंच से भूनकर एक सेर मिसरी की चासनी में मिलावे। फिर इस चासनी में सोंठ, मिरच, पीपल, गोखरू, इलायची, मोथा, तज, पत्रज, पोहकरमूल, चित्रक, प्रत्येक आठ आठ मासे लेकर चूर्ण करके उसी चासनी में डाल देवे और दो तोले निस्तुष धनियां कूटकर डाले। शुद्ध शिलाजीत, केशर, यह छः छः मासे मिलाकर चासनी को नीचे उतारकर शीतल करे फिर इसमें एक पाव शुद्ध शहद मिलाकर चिकने बर्तन में रख देवे। इसमें से नित्य प्रातःकाल और सायंकाल दो दो तोले खाय तो आखों के रोग, शिर के रोग, सब प्रकार के प्रमेह नष्ट हों।।७१-७५।।

इति मेहविधानं च सनिदानं चिकित्सितम् ।।
ज्ञातव्यमल्पाक्षरैस्तद्बह्वर्थं शास्त्रसम्मतैः ।।७६।।

इस प्रकार नपुंसकता में प्रमेह भी कारण होने से प्रमेह का निदान चिकित्सा का विधान कह चुके हैं सो हे तात! इन बहुत अर्थ और शास्त्रों के सम्मत थोड़े अक्षरों से तुम अच्छी तरह से समझ लो।।७६।।

इति श्रीवै० पंचानन पं० रामप्रसादोपाध्यायविनिर्मितनपुंसकामृतार्णवे नपुंसकत्वे कारणत्वात्प्रमेहवर्णनो नाम सप्तमस्तरंगः ।।७।।

अथाष्टमस्तरङ्गः

नपुंसकत्वे कारणत्वेनोपदंशफिरंगवर्णनम्

शिष्य उवाच

उपदंशफिरंगाभ्यां शिश्नं चापि विशीर्यते ।।
शिश्नेन हि विना नाथ कुतः पुंस्त्वस्य संभवः ।।१।।
वीर्यशिश्नविकाराभ्यां ध्वजभंगः प्रवर्तते ।।
अतस्तद्दोषशांत्यर्थं यथावद्वक्तुमर्हसि ।।२।।

शिष्य कहने लगे हे गुरो! उपदंश और फिरंग से भी तो लिंगेंद्रिय गल जाती है और गिर भी जाती है, बस सब लिंगेंद्रिय विकाररहित निरोग न हो तो पुरुषार्थपना कहां हो सकता है और वीर्य में तथा लिंगेद्रिय में विकार होने से ध्वजभंग नपुंसकता झट आ प्रवृत्त होती है। इसलिये उनकी शांति के लिय भी ठीक ठीक निदानचिकित्सा का वर्णन कीजिये।।१।।२।।

गुरुरुवाच

उपदंशे फिरंगे च किंचिद्भेदो हि वर्तते ॥
तदहं संप्रवक्ष्यामि सनिदानं चिकित्सितम् ॥३॥

गुरु कहने लगे हे तात! उपदंश और फिरंग में किंचिन्मात्र भेद है। सो वह निदान चिकित्सायुक्त कथन करता हूं॥३॥

प्रायोपदंशमेहैश्च पीडिता मानवा भृशम् ॥
ध्वजभंगत्वमापन्ना निर्जीवा इव संस्थिताः ॥४॥

क्योंकि प्रायः उपदंश, फिरंग, प्रमेह से पीड़ित होकर मनुष्य ध्वजभंगता को प्राप्त होकर मानो जीवनरहित हो रहे हैं॥४॥

उपदंशनिदान

हस्ताभिघातान्नखदंतपातादधावनाद्रत्युपसेवनाद्वा ॥
दुष्टस्त्रिया योनिविकारसेवनात्पंचोपदंशाः प्रभवतिशिश्ने ॥५॥

हस्तमैथुन आदि से हाथ की चोट लगने से, नख और दांत के लगने से, लिंग को न धोने से, अत्यन्त स्त्री गमन करने से, दुष्ट विकृत आदि योनिवाली अथवा गर्मी आदि रोगयुक्त योनि में मैथुन करने से पांच प्रकार का उपदंश लिंगेन्द्रिय में होता है॥५॥

वातोपदंश के लक्षण

सतोदभेदस्फुरणैः सकृष्णैः स्फोटैर्व्यवस्येन्मरुतोपदंशम् ॥६॥

लिंगेन्द्रिय के ऊपर काले रंग के फोड़े हों उनमें सूई चुभने की सी और तोड़ने की सी पीड़ा हो और स्फुरण हो यह वातोपदंश के लक्षण हैं॥६॥

पित्तोपदंश के लक्षण

पीतैर्बहुक्लेदयुतैः सदाहैः पित्तेन रक्तैः पिशितावभासैः ॥

पित्त के उपदंश में पीले रंग के फोड़े होते हैं उनमें से पानी स्रवता है।

दाह होवे और रुधिर की दुष्टता से मांस के समान लाल रंग के घाव हों।।

कफोपदंश

सकंडुरैः शोथयुतैर्महद्भिः शुक्लैर्घनैः स्रावयुतैः कफेन ।।७।।

कफ के उपदंश में सफेद और मोटे, खाजयुक्त, गाढ़ी राधवाले घाव होते हैं।।७।।

सन्निपातोपदंश

नानाविधस्रावरुजोपपन्नमसाध्यमाहुस्त्रिमलोपदंशम् ।।८।।

अनेक किस्म के स्राव पीड़ायुक्त तीनों दोषों के लक्षणोंवाला उपदंश असाध्य होता है।।८।।

असाध्य उपदंश

संजातमात्रे न करोति मूढः क्रियां नरो यो विषये प्रसक्तः ।।
कालेन शोथकृमिदाहपाकैर्विशीर्णशिश्नो म्रियते स तेन ।।९।।

उपदंश के पैदा होते ही जो मूर्ख इसका यत्न नहीं करते और स्त्रीसंग आदि विषयों में लगे रहते हैं उनका लिंग थोड़े ही समय में सूजन और कीड़े, दाहवाला होकर गलकर गिर जाता है।।९।।

उपदंश की चिकित्सा

उपदंशेषु सर्वेषु स्निग्धस्विन्नस्य देहिनः ।।
मेढ्रमध्ये शिरां विध्येत्पायेद्वा जलौकसः ।।१०।।
सद्यो निहंति दोषस्य रुक्छोथावुपशाम्यति ।।
पाको निवार्यो यत्नेन शिश्नक्षयकरश्च यत् ।।११।।

सब किस्म के उपदंशों में स्नेहन, स्वेदन, कराकर लिंग की नस में रक्त निकलवावे। अथवा जोंक लगवाकर रक्त मोक्षण करावे ताके रुधिर के निकलने से दोष शांत होकर पीड़ा और सूजनभी शांत हो जाती है

और उपदंश में विशेष करके इंद्रिय के घावों को शीघ्र सुखा देना चाहिये क्योंकि वह बढ़कर लिंग को नष्ट कर डालते हैं।।१०।।११।।

उपदंश पर लेप

वटप्ररोहार्जुनजंबुलोध्रपथ्याहरिद्रारचितप्रलेपः ।।
व्यथां तथा शोथमपाकरोति सर्वोपदंशेषु यतो हितोयम् ।।१२।।

बड़ के अंकुर, कोहवृक्ष की छाल, जामुन की छाल, हरड, हलदी, लोध इन सबको जल के संयोग से रगड़कर किंचित् गर्म करके लेप करे तो सब किस्म के उपदंशोंसे हुई लिंग की पीड़ा और सूजन दूर होती है।।१२।।

त्रिफलायाः कषायेण भृंगराजरसेन च ।।
उपदंशेषु पक्वेषु व्रणप्रक्षालनं हितम् ।।१३।।

त्रिफले के क्वाथ अथवा भांगरेके रससे उपदंश के घावों को धोना घावों को आराम करता है।।१३।।

लेप

पूगीफलं हरिद्रां च श्लक्ष्णं पिष्ट्वा प्रलेपयेत् ।।
लिंगशोथव्यथाकंडूनाशनं नास्त्यतः परम् ।।१४।।

सुपारी और हलदी को बारीक पीसकर लेप करना उपदंश की सूजन, पीड़ा, खाज इनको दूर करता है।।१४।।

भूनिंबादिघृत

भूनिंबनिंबत्रिफलापटोलकरंजधात्रीखदिराशनानाम् ।।
कषायकल्कैः शृतमाज्यमाशुसर्वोपदंशापहरं प्रदिष्टम्।।१५।।

चिरायता, निंबू, त्रिफला, पटोलपत्र, करंज के फल, आमले, खैरसार, विजयसार प्रत्येक एक एक पाव लेकर १६ सेर जल में पकावे।

जब चार सेर रहे उतारकर छान लेवे और फिर उपरोक्त सब दवाइयों का चार चार तोले चूर्ण दूसरी दफा फिर लेकर इस क्वाथ में रगड़कर १ सेर गोघृत में मिलाकर घृत सिद्ध करे। इस घृत के खाने और लगाने से सब प्रकार के उपदंश दूर होते हैं।।१५।।

करंजादिघृत

करंजनिंबार्जुनशालजंबूवटादिभिः कल्ककषायसिद्धम् ।।
सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोषं सदाहपाकं स्रुतिरागयुक्तम् ।।१६।।

करंज के पत्र और फल, नीम के पत्र, कोह की छाल, शाल की छाल, जामुन, वट, पीपल, गूलर, पाखर, पिलखन, वेतस इन सबकी छाल लेकर उपरोक्त रीति से घृत सिद्ध करे। इस घृत के खाने और लगाने से दाह, पाक, स्राव, लाली युक्त उपदंश दूर होता है।।१६।।

उपदंश का भेद फिरंग

उपदंशस्य भेदोऽयं फिरंग इति कथ्यते ।।
दुष्टयोनिप्रभावाच्च संसर्गोष्णप्रशीततः ।।१७।।
उष्णदेशोद्भवा ये च शीतदेशभवाश्च ये ।।
विकृतानां प्रसंगाच्च फिरंगमुपपद्यते ।।१८।।

हे तात! उपदंश का ही भेद फिरंग रोग है। यह रोग दुष्ट योनि अथवा रोगयुक्त योनि के संसर्ग से अथवा गरम देश के पुरुष शीतल देश के रहनेवाली स्त्रियों से मैथुन करें या शीत देशवासी मनुष्य उष्णदेशवासी स्त्रियों से मैथुन करे तो यह फिरंग होता है और विकृत अर्थात् उलटे स्वभाववाले देशनिवासियों के संसर्ग से यह फिरंग रोग उत्पन्न होता है अथवा फिरंगियों के देश में होनेवाले उपदंश को भी फिरंग कहते हैं उनके संसर्ग से हुआ उपदंश इस देश में भी फिरंगनाम से कहा जाता है। यथार्थ में यह उपदंश का ही भेद है।।१७।।१८।।

फिरंगका रूप

फिरंगस्त्रिविधो ज्ञेयो बाह्य आभ्यंतरस्तथा ॥
बहिरन्तर्भवश्चापि तेषां लिंगानि च ब्रुवे ॥१९॥
तत्र बाह्यफिरंगः स्याद्विस्फोटसदृशोऽल्परुक् ॥
स्फुटितो व्रणवद्वेद्यः सुखसाध्योपि स स्मृतः ॥२०॥
संधिष्वाभ्यंतरः स स्यादामवात इव व्यथाम् ॥
शोथं च जनयेदेष कष्टसाध्यो बुधैः स्मृतः ॥२१॥

फिरंग रोग तीन प्रकार का है। १ बाहर, दूसरा भीतर, तीसरा बाहर और भीतर। इस प्रकार ३ किस्म का है उन तीनों के चिह्न अब कथन करते हैं। बाहर के फिरंग में जो फोड़े होते हैं उनमें थोड़ी पीड़ा होती है और फोड़े की समान फूटता है इसका यत्न भी फोड़े के घाव की समान सुखसाध्य है और अन्दर का होनेवाला फिरंग सन्धियों में होता है और उसमें संधियों में अत्यंत पीड़ा तोद आदि होते हैं अथवा जिनमें बाहर और भीतर के दोनों लक्षण मिलते हों और शोथ भी पैदा हो गया हो तो यह कष्टसाध्य है॥१९-२१॥

फिरंग के उपद्रव

कार्श्यं बलक्षयो नासाभंगो वह्नेश्च मंदता ॥
अस्थिशोषोस्थिवक्रत्वं फिरंगोपद्रवा अमी ॥२२॥

शरीर का कृश होना, बल का नाश, नाक बैठ जाना, अग्निमंद होना, हड्डियों का सूखना, या टेढ़ा हो जाना। ये फिरंग रोग के भेद हैं॥२२॥

साध्याऽसाध्यत्वं च

बहिर्भवो भवेत्साध्यो नवीनो निरुपद्रवः ॥
आभ्यंतरस्तु कष्टेन साध्यः स्यादयमामयः ॥२३॥

वहिरंतर्भवो जीर्णे क्षीणस्योपद्रवैर्युतः ॥
व्याप्तो व्याधिरसाध्योऽयमित्याहुर्मुनयः पुरा ॥२४॥

जो फिरंग नवीन बाहर प्रगट हुआ हो और उपद्रवरहित हो वह साध्य है और जो भीतर प्रगट हुआ हो और पुराचीन हो वह कष्टसाध्य है और जो बाहर और भीतर प्रगट हो, पुराचीन हो और मनुष्य क्षीण हो और उपद्रवयुक्त हो तो असाध्य समझना ॥२३॥२४॥

फिरंग की चिकित्सा

फिरंगे सर्पिषः पानं तीक्ष्णं वापि विरेचनम् ॥
रक्तस्य मोक्षणं चैव हितं च पथ्यभोजनम् ॥२५॥

फिरंग रोग में फिरंगनाशक घृतों का पीना और जमालगोटे आदि से तीक्ष्ण विरेचन करना, तथा रक्तमोक्षण करना और पथ्य भोजन का सेवन करना तथा पथ्य से रहना, यह सब हितकारक है॥२५॥

रसकर्पूरसेवन

केवलं रसकर्पूरमूर्ध्वपातनकारितम् ॥
रक्तिकार्द्धप्रमाणेन पक्वगोधूमवेष्टितम् ॥२६॥
अथवा रक्तिकामानं पक्वचूर्णेन वेष्टितम् ॥
विधिना भक्षयेद्रोगी लवंगचूर्णसंयुतम् ॥२७॥
अलवणं भक्षयेच्चान्नं अथवा घृतसंयुतम् ॥
स्नातको ब्रह्मचारी च तिष्ठेद्विधियुतो बुधः ॥२८॥
पूर्वं विरेचनं कुर्यात्तत्पश्चाद्भक्षयेद्वटीम् ॥
उपदंशफिरंगघ्नी उत्तमेयं प्रकीर्तिता ॥२९॥

रसकपूर को लेकर डमरूयंत्रद्वारा उड़ा लेवे फिर इस उड़े हुए रसकपूर को एक रत्ती अथवा आधी रत्ती प्रमाण लेकर कनक की रोटी के अंदर के गूदे में डालकर युक्ति से गोली बनावे ताकि गोली से बाहर

किंचिन्मात्र भी रसकपूर न रहे। फिर इस गोली को लौंगों के बारीक चूर्ण में लपेटकर फिरंगरोगवाला इस गोली को साबूत ही निगल जावे। मुख में न लगने देवे, ऊपर से केवल एक घूंट सील गर्म पानी को पीवे और बिना नमक व मीठे के केवल सूखी रोटी खाय अथवा केवल घी से ही खावे और स्नान न करे ब्रह्मचारी रहे। इस प्रकार ७ रोज अथवा १४ रोज खाना चाहिए परंतु पहले तीक्ष्ण विरेचन द्वारा शुद्ध शरीर होकर खावे तो उपदंश और फिरंग अवश्य नष्ट हो, यह अनुभव किया हुआ परमोत्तम योग है।।२६-२९।।

मर्हम

तुत्थं सिक्थं च कांप्पिल्लं सिंदूरं मृतमश्मकम् ।।
पूगीफलं च खर्जूरं भर्जितं शाणमात्रकम् ।।३०।।
कर्पूरं च वेदगुंजां सर्वं संमेलयेद्बुधः ।।
एकोत्तरशतं धौते नवनीते विमेलयेत् ।।३१।।
उपदंशफिरंगघ्नं लेपनं परमोत्तमम् ।।
अनुभूतश्च योगोयं योगेषु प्रवरो मतः ।।३२।।

नीलाथोथा, मोम, कमीला, सिंदूर, मुर्दाशंख, सुपारी का कोयला, छुवारे का कोयला, प्रत्येक चार चार मासे, रसकपूर ४ रत्ती, सबको बारीक करके १०१ बार धुले मक्खन में मिलाकर उपदंश और फिरंग के जख्मों पर लगावे तो वह जख्म जल्दी अच्छे हो जाते हैं। यह परमोपयोगी उत्तम अनुभव किया परम उत्तम मर्हम है।।३०-३२।।

चोपचीनीयोग

चोपचीनीभवं चूर्णं शाणमानं समाक्षिकम् ।।
फिरंगव्याधिनाशाय भक्षयेल्लवणं त्यजेत् ।।३३।।

चोपचीनी के ४ मासे चूर्ण को शहद में मिला के चाटे और केवल घृतरोटी खावे और नमक आदि से परहेज रखे तों फिरंगरोग दूर हो।।३३।।

उशवाऽवलेह

चतुःपलां ध्रुवजटां नवकर्षं किरातकम् ।।
दशकर्षा त्रिवृद्ग्राह्या षट्कर्षा स्वर्णपत्रिका ।।३४।।
हरीतकीत्रयं चैव त्रित्रिकर्षं पृथक् पृथक् ।।
शतपत्री निराधारा शतपुष्पा तथैव च ।।३५।।
नीलोत्पलं पर्पटं च सार्द्धकर्षैलवालुकम् ।।
कर्षकर्षप्रमाणेन धान्यकं रक्तचंदनम् ।।३६।।
चोपचीनीपलं चैकं योजयेन्मतिमान्नरः ।।
सर्वं संकुटच विधिना श्लक्ष्णं चूर्णं च कारयेत् ।।३७।।
वातामकोद्भवे तैले मर्दयेच्च चतुःपले ।।
त्रिगुणे माक्षिके शुद्धे विधिना मेलयेद्भिषक् ।।३८।।
कर्षमानं भक्षयित्वा कोष्णतोयं ततः पिबेत् ।।
वसंते भक्षयेन्नित्यं प्रातःकाले यथाबलम् ।।३९।।
घृतं मुद्गं तथा शालीन्भक्षयेन्मतिमान्नरः ।।
अम्लं तैलं दधि दुग्धं गुडं चापि परित्यजेत् ।।४०।।
नानायोगेषु योगोयमुत्तमः परिकीर्तितः ।।
मेहं कुष्ठं फिरंगं हि उपदंशं च नाशयेत् ।।४१।।
सर्वान्रक्तभवांश्चैव रोगान्नाशयति ध्रुवम् ।।
कृपया ह्येकदा मह्यं मातुलेन प्रकाशितम् ।।४२।।

उशवा २० तोले, चिरायता ९ तोले, उत्तम निशोथ १० तोले, सनाय ६ तोले, बड़ी हर्डका बक्कल ३ तोले, काबली हरड़ का बक्कल ३

तोले, जंगाहरड ३ तोले, गुलाब के फूल १।। तोला, आकाशवेल (अफतिमुन) १।। तोला, नीलोफर १।। तोला, पापड़ा १।। तोला, एलुवा १।। तोला, चोपचीनी ५ तोले, लालचंदन १ तोला इन सबको कपड़छान करके बीस तोले बादाम रोगन में मसलकर सबसे तीन गुने शुद्ध शहद में मिलाकर चिकने बर्तन में भरकर रख देवे। इसमें से एक तोला, अथवा जितना वैद्य उचित समझे उतना खिलाकर ऊपर से थोड़ा सा गरम जल पिलावे और मूंग, चावल, घी आदि पथ्य भोजन करावे। तेल, खटाई, दही, दूध, उड़द की दाल, लाल मिर्च से परहेज रखे और इसको वसंत ऋतु में बराबर दो महीने खिलावे तो प्रमेह, कुष्ठ, फिरंग, उपदंश और रक्त के विकार इन सबको नष्ट करता है। यह परमोत्तम उशवावलेह एक समय स्नेहवश कृपा करके हमारे मामा केशवानंदजीने कथन किया था।।३४-४२।।

जंबु आदि तैल

जंबुवेतसपत्राणि धात्रीपत्रं तथैव च ।।
नक्तमालस्य पत्राणि तद्वत्पद्मोत्पलानि च ।।४३।।
बला चातिबलाम्रास्थि मधुकं च प्रियंगवः ।।
लाक्षा कालीयकं लोध्रं चंदनं त्रिवृताह्वया ।।४४।।
एतान्येकीकृतान्येव वत्समूत्रेण पेषयेत् ।।
अक्षमात्रयुतैर्द्रव्यैस्तैलप्रस्थं विपाचयेत् ।।४५।।
सर्वव्रणहरं तैलमेतत्सिद्धं प्रयोजितम् ।।
उपदंशहरं श्रेष्ठं फिरंगनाशकंतथा ।।४६।।

जामुन का छिलका, वेत का छिलका, आमले के पत्र, करंजुवे के पत्र, नीलोफर, कमल, वला, अतिबला, आम की गुठली, मुलैठी, फूलप्रियंगु, लाख, कालीयक, लोध, लालचंदन, निशोथ प्रत्येक एक एक तोला लेकर

बछड़े के मूत्र में रगड़कर कल्क बनावे। इस कल्क द्वारा एक सेर तेल को सिद्ध करे। इस तेल को लगाने से सब प्रकार के घाव, उपदंश के घाव, फिरंग के घाव नष्ट होते हैं।।४३-४६।।

कोशात की तैल

तिक्तकोशातकीलम्बाबीजनागरसाधितम् ।।
तैलं हंत्यचिराद्घोरं व्रणं दुष्टमनेकधा ।।४७।।

कड़ुवी तोरी के बीज, कड़वी तोंबी के बीज, सोंठ, इन तीनों को कल्क करके तैल को सिद्ध करे। इसके लगाने से अनेक प्रकार के घोर दुष्ट घाव नष्ट होते हैं।।४७।।

उपदंशघ्न रस

पारदः कर्षमात्रः स्यात्तावन्मात्रं तु गंधकम् ।।
तावन्मात्रस्तु खदिरस्तेषां कुर्यात्तु कज्जलीम् ।।४८।।
रजनीकेशरं त्र्युटचौ जीरयुग्मं यवानिका ।।
चंदनद्वितयं कृष्णा वांसी मांसी च पत्रकम् ।।४९।।
अर्द्धकर्षमितं सर्वं चूर्णयित्वा च निक्षिपेत् ।।
तत्सर्वं मधुसर्पिर्भ्यां द्विपलाभ्यां पृथक्पृथक् ।।५०।।
मर्दयेदथ तत्खादेदर्द्धं कर्षमितं नरः ।।
व्रणः फिरंगरोगोत्थस्तस्यावश्यं विनश्यति ।।५१।।
अन्योऽपि चिरजातोऽपि प्रशाम्यति महाव्रणः ।।
एतद्भक्षयतः शोथो मुखस्यांतर्न जायते ।।५२।।
वर्जयेदत्र लवणमेकविंशतिवासरान् ।।
घृतयुक्तामथो शुष्कां भक्षयेत्करपट्टिकाम् ।।५३।।

शुद्ध पारा १ तोला, गंधक १ तोला, कत्था १ तोला, इन तीनों को खरल में डालकर तीन दिन खूब रगड़े, जब कज्जली हो जाय फिर इसमें

हलदी, केशर, इलायची, जीरा, काला जीरा, अजवायन, चन्दन, लालचंदन, पीपल, वंशलोचन, जटामांसी, पत्रज यह छः छः मासे मिलावे और वारीक पीसकर एक जीव कर देवे फिर इसमें शहद ८ तोले डालकर खूब घोटे फिर ५ तोले घृत मिलाकर खरल करे, फिर छः छः मासे की गोली बनावे और १ गोली नित्य २१ रोज तक खाय, नमक न खाये, केवल सूखी रोटी अथवा घी रोटी खावे। इसके खाने से मुँह नहीं आता और फिरंग, घाव, सब प्रकार के नये पुराने जख्म नष्ट होते हैं।।४८-५३।।

प्रसंगात्कथिता तात उपदंशहरी क्रिया ।।
व्रणवत्कुष्ठवच्चात्र कर्तव्या विविधाः क्रियाः ।।५४।।
स्वेदनं वमनं चाथ तीक्ष्णं चैव विरेचनम् ।।
ततश्च औषधीनां वै प्रयोगमुपयोजयेत् ।।५५।।

हे तात! प्रसंगवश इस तरंग में उपदंश और फिरंग नाशक थोड़ी सी क्रिया कथन कर दी है। प्रायः फिरंग में कुष्ठ और व्रण की समान अनेक क्रियाओं से शरीर के दोष को शमन कराना चाहिये और पहले स्वेदन स्नेहन कराकर वमन करा देना चाहिए। फिर तीक्ष्ण औषधि (जमालगोटा आदि) से विरेचन कराकर फिर दोषघ्न रोगनाशक औषधियों से रोग की शान्ति करे।।५४।।५५।।

विधिनानेन प्रथमं प्रमेहादीन्विनाशयेत् ।।
ततः शुद्धे शरीरे च कुर्याद्वाजीकरं विधिम् ।।५६।।

पहले इस प्रकार पूर्वोक्त विधिसे प्रमेह उपदंश आदि उपद्रवोंको शमन करे। जब शुद्ध शरीर हो जाय तो वाजीकरण पदार्थों से विधिपूर्वक शरीर और वीर्यकी शक्तिको बलवान् करनेका उपाय करे।।५६।।

इति श्रीवैद्य पंचानन पं० रामप्रसादोपाध्यायकृतनपुंसकामृतार्णवे उपदंशरोगवर्णनो नामाष्टमस्तरंगः ।।८।।

अथ नवमस्तरंगः

अथोत्तमवाजीकरणरसायनयोगवर्णनम्

गुरुरुवाच

यद्यत्तात त्वया पृष्टं तत्तत्सर्वं हि वर्णितम् ॥
उत्तमानधुना योगान्वाजीकररसायनान् ॥१॥
तव बुद्धिप्रभावेण विनयावनतेरथ ॥
प्रसन्नोहमतस्तात वक्ष्ये तदपि श्रूयताम् ॥२॥

हे तात! तुमने हमसे जो जो कुछ पूछा वह हमने सब कुछ सुना दिया है परंतु तुम्हारी बुद्धि के प्रभाव से और नीतियुक्त नम्रता से मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूं इसलिये अब उत्तम वाजीकरण और रसायन योगों का थोड़ा और कथन करता हूं सो तुम सुनो॥१-२॥

दशमलारिष्ट

पर्ण्यौ बृहत्यो गोकंटबिल्वाग्निमंथनोरलूः ॥
पाटला काश्मरी चेति दशमूलमिहोच्यते ॥३॥
दशमूलानि कुर्वीत भागैः पंचपलैः पृथक् ॥
पंचविंशपलं कुर्याच्चित्रकं पौष्करं तथा ॥४॥
कुर्याद्विंशत्पलं लोध्रं गुडूची तत्समा भवेत् ॥
पलैष्षोडशभिर्धात्री रविसंख्यैर्दुरालभाः ॥५॥
खदिरो बीजसारश्च पथ्या चेति पृथक् पलैः ॥
अष्टाभिर्गुणितैः कुष्ठं मंजिष्ठा देवदारु च ॥६॥
विडंगं मधुकं भार्ङ्गी कपित्थोक्षः पुनर्नवा ॥
चव्यमांसी प्रियंगुश्च सारिवा कृष्णजीरकम् ॥७॥

त्रिवृता रेणुका रास्ना पिप्पली क्रमुकः सटी ॥
हरिद्रा शतपुष्पा च पद्मकं नागकेशरम् ॥८॥
मुस्तमिंद्रयवा भृंगी जीवकर्षभकौ तथा ॥
मेदाश्चान्या महामेदा काकोल्या ऋद्धिवृद्धि च ॥९॥
कुर्यात्पृथक् द्विपलिकान्पचेदष्टगुणे जले ॥
चतुर्थांशभृतं नीत्वा मृद्भांडे संनिधापयेत् ॥१०॥
ततष्षष्टिपलां द्राक्षां पचेन्नीरे चतुर्गुणे ॥
त्रिपादशेषं शीतं च पूर्वक्वाथे भृतं क्षिपेत् ॥११॥
द्वात्रिंशत्पलकं क्षौद्रं गुडं दद्याच्चतुः शतम् ॥
त्रिंशत्पलानि धातक्याः कंकोलं जलचंदनम् ॥१२॥
जातीफलं लवंगं च त्वगेलापत्रकेशरम् ॥
पिप्पली चेति संपूर्णभागैर्द्विपलिकैः पृथक् ॥१३॥
शाणमात्रां च कस्तूरीं सर्वमेकत्र निक्षिपेत् ॥
भूमौ निखनयेद्भांडं ततो जाते रसे पिबेत् ॥१४॥
कतकस्य फलं क्षिप्त्वा रसं निर्मलतां नयेत् ॥
ग्रहणीमरुचिं शूलं श्वासकासभगंदरान् ॥१५॥
वातव्याधिं क्षयं छर्दिं पाण्डुरोगं सकामलम् ॥
कुष्ठान्यर्शांसि मेहांश्च मंदाग्निमादैराणिच ॥१६॥
शर्करामश्मरीं चैव मूत्रकृच्छ्रं क्षयं नयेत् ॥
कृशानां पुष्टिजननो वंध्यानां पुत्रदः परः ॥
अरिष्टो दशमूलाख्यस्तेजः शुक्रबलप्रदः ॥१७॥

शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटेली, बड़ी कटेली, गोखरू, बिल्बर अरणी, अरलू, पाटला, कुह्मार, इनको दशमूल कहते हैं। दशमूल की प्रत्येक औषध पांच पांच पल (अर्थात् सब मिलाके, दशमूल ५० पल)

और चित्रक २५ पल, पुहकरमूल २५ पल, लोध २० पल, गिलोय २० पल, आमले १२ पल, धमासा १२ पल, खैरसार ८ पल, विजयसार ८ पल, हरड ८ पल, कूठ, मंजीठ, देवदारु, वायविडंग, मुलैठी, भारंगी, कैथ, बहेड़ा, पुनर्नवा, चव्य, जटामांसी, प्रियंगु, सारिवा, कालाजीरा, निशोथ, रेणुका, रास्ना, पीपल, सुपारी,कचूर, हलदी, सौंफ, पद्माख, नागकेशर,मोथा,इंद्रजौ,काकड़ासिंगी, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धी, वृद्धी, प्रत्येक दो २ पल लेकर सबसे आठ गुणे जलमें पकावे चतुर्थांश बाकी रहने पर उतार लेवे। मुनक्का ६० पल लेकर चारगुणे जल में पकावे तीसरा हिस्सा बाकी रहने पर उतार ले, इन दोनों क्वाथों को एकत्र करके मिट्टी के पात्र में भरकर उसमें शहद ३२ पल, गुड़ १०४ पल, धाय के फूल ३० पल, कंकोल, नेत्रवाला, लालचंदन, जायफल, लौंग, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, पीपल प्रत्येक दो दो पल, कस्तूरी चार मासे लेवे, सबका चूर्ण कर उसी पात्र में डालकर पात्र का मुख बंद कर देवे और उसको पृथ्वी में (खातयुक्त गरम पृथ्वी में) गाड़ देवे एक महीने बाद निकालकर इसमें निर्मली फल का चूर्ण डालकर रसमात्र शुद्ध करके नितार लेवे (अथवा अर्क़ खींच लेवे) इसको भोजन के समय उचित मात्रा से सेवन करे, इसके सेवन करने से संग्रहणी, अरुचि, शूल, श्वास, खांसी, भगंदर, वातव्याधि, क्षय, वमन, पांडुरोग, कामला, कोढ, बवासीर, प्रमेह मंदाग्नी, उदररोग, शर्करा,पथरी, मूत्रकृच्छ्र, धातुक्षय, ये सब दूर होवें, कृश मनुष्यों को पुष्ट करे, वंध्या पीवे तो संतानवाली होवे, यह दशमूलारिष्ट तेज, वीर्य और बल को देता है।।३-१७।।

मृतसंजीवनीसुरा

नवं गुडं च संगृह्य शतमेकपलं तथा ।।
बर्बुरीत्वचं च संगृह्य बदरीत्वचमेव च ।।१८।।

प्रस्थंप्रस्थं प्रदातव्यं पूगं देयं यथोचितम् ॥
दत्त्वा लोध्रं च कुडवमार्द्रकं च पलद्वयम् ॥१९॥
तोयमष्टगुणं दत्त्वा गुडं संघोलयेत्सुधीः ॥
प्रथमे चांद्रकं दद्याद्द्वितीये बर्बुरीत्वचम् ॥२०॥
तृतीये बदरीं दत्त्वा गोलयित्वा भिषग्वरः ॥
मुखे शरावकं दत्त्वा यत्नात्कृत्वा च बंधनम् ॥२१॥
मुखं संबंधनं कृत्वा स्थापयेद्दिनविंशतिम् ॥
मृण्मये मोचिकायंत्रे मयूराख्येपि यंत्रके ॥२२॥
यथाविधि प्रकारेण मंदमंदेन वह्निना ॥
चुल्लीमध्ये विधातव्य मृत्तिकादृढभाजने ॥२३॥
तदौषधं च तन्मध्ये समुद्धृत्य विनिक्षिपेत् ॥
नले च युगलं दत्त्वा कुंभौ च गजकुंभवत् ॥२४॥
कुंभमध्ये निधातव्यं पूगं च तैलवालुकम् ॥
देवदारुं लवंगं च पद्मकोशीरचंदनम् ॥२५॥
शतपुष्पा यवनीका मरिचं जीरकद्वयम् ॥
शठी मांसी त्वगेला च जातीफलसमुस्तकम् ॥२६॥
ग्रंथिपर्णी तथा शुंठी मेथी मेषी च चंदनम् ॥
एषां चार्द्धपलान्भागान्कुट्टयित्वा विनिक्षिपेत् ॥२७॥
यथाविधिप्रकारेण चालनं दापयेत्सुधीः ॥
बुद्धिमान्सोंजनं कृत्वा उद्धरेद्विधिवत्सुराम् ॥२८॥
एतन्मद्यं पिबेन्नित्यं यथाधातुवयः क्रमम् ॥
आरोग्यजननं देहदार्ढ्यकृद्बलवर्द्धनम् ॥२९॥
मेध्याग्निस्मृतिकृद्वीर्यशुक्रकृद्वातनाशनम् ॥
बलपुष्टिकरं चैवं कामदं दीपनं परम् ॥३०॥

दश स्त्री रमयेन्नित्यमानंद उपजायते ॥
रणे तेजोमयः सद्यो यथा भीमः पराक्रमी ॥३१॥

नवीन गुड़ ४०० तोले, कीकरकी छाल, बेरी की छाल, सुपारी प्रत्येक एक एक सेर, लोध १ पाव, अदरख ८ तोले, इनसे आठ गुणा जल लेकर उसमें गुड़ घोल देवे फिर यथाक्रम पहले अदरख, वेर की छाल आदि डालकर उत्तम रीति से मिला देवे। फिर सुपारी और लोध के चूर्ण का प्रक्षेप करके उस पात्र का मुख बंद करके २० रोज तक रखा रहने देवे फिर इसको मिट्टी के वारुणी यंत्र अथवा मयूरयंत्र में डालकर मंद मंद अग्नि से गरम करे। फिर इसमें सुपारी, एलवालुक, देवदारु, लौंग, पद्माख, खस, लालचंदन, सौंफ, अजवायन, मिरच, दोनों जीरे, कचूर, जटामांसी, दालचीनी, इलायची, जायफल, नागरमोथा, गठौना, सोंठ, मेथी, मेढासिंगी, चंदन प्रत्येक दो दो तोले कूटकर डाल देवे और लकड़ी से खूब मिला देवे। फिर मुख बंद कर नाल लगाकर विधिपूर्वक अर्क खींच लेवे। फिर अवस्था आदि का विचार करके वैद्य योग्य मात्रा से सेवन करावे इसके सेवन से मनुष्य आरोग्य रहे, देह दृढ़ हो, बल, मेधा, अग्नि, स्मृति, वीर्य पुष्ट हो, कामाग्नि दीपन हो, दश स्त्रियों से रमण करने की शक्ति हो, रण में लड़ने की शक्ति बढ़े। यह मृतसंजीवनी सुरा है क्षत्रियों के सेवन योग्य है॥१८-३१॥

भल्लातक

अनुभूतं शुभं योगं प्राप्तमाप्तसकाशतः ॥
तदहं संप्रवक्ष्यामि शृणु तात विधानतः ॥३२॥
पक्वान्भल्लातकांश्चैव मृदुवातेन पातितान् ॥
आनीय विधिना कुटय तद्दूरीकृतमूर्द्धजान् ॥३३॥
घृतेन पाणिं संलिप्य सगुडं मृदु पेषयेत् ॥
माषमात्रप्रमाणेन वटी कार्या प्रयत्नतः ॥३४॥

शुद्धं घृतं समानीय मुखे संलिप्य पाययेत् ॥
वटिकां भक्षयित्वाथ घृतानुपानमाचरेत् ॥३५॥
सायं प्रातश्च संभुज्य लवणादीन्परित्यजेत् ॥
नीरोगो बलवान्धीमान्मासैकेन भविष्यति ॥३६॥
घृतेन भक्षयेदन्नं वातातपं परित्यजेत् ॥
उपदंशप्रमेहार्शः फिरंगाश्चैव दारुणाः ॥३७॥
वातव्याधिस्तथा चैवं नश्यंति नात्र संशयः ॥
विरेचनं पुरा कृत्वा पश्चादेनं प्रभक्षयेत् ॥३८॥

हे तात! एक महात्मा का कथन किया हुवा और आजमाया हुवा एक उत्तम योग सुनाता हूं तुम सावधान होकर सुनो। मन्द मन्द पवन से उत्तम पककर गिरे हुये भिलावे लेकर उनके ऊपर की टोपियें उतार डाले फिर हाथों को घी लगाकर इनको खूब कूटे (घी इसलिये लगाया जाता है कि जिस स्थान पर भिलावे के रस का छींटा पड़ जाय वहीं पर सूजन पैदा हो जाती है इसलिये हाथों को घी लगा लेवे और शरीर पर भिलावे का छींटा लगने से बचावे) और बराबर का पुराना गुड़ मिलाकर भिलावे और गुड़ को एक जीव कर देवे फिर इसकी एक एक मासे की गोली बनावे फिर रोगी को पहले वमन विरेचन कराकर इन गोलियों का सेवन करावे, गोली खाने से पहले उत्तम साफ घी का एक घूंट लेकर मुख में चारों तरफ फेरकर निगल लेवे फिर १ गोली मुख के अन्दर डालकर निगल लेवे ऊपर से फिर घी का घूंट लेवे यदि गोली वड़ी हो तो छोटी छोटी बनाकर निगल जावें और मुख में ज्यादा न लगने देवे इस प्रकार एक महीना दोनों वक्त सेवन करने से उपदंश, प्रमेह, बवासीर, दारुण, फिरंग यह सब दूर होते हैं इसमें संशय नहीं॥३२-३८॥

महाकल्कनामक रस

महाकल्कं प्रवक्ष्यामि श्रूयतां शिष्यसत्तम ॥
धान्याभ्रकं विनिक्षिप्य मुसलीरसमर्दितम् ॥३९॥
स्थाल्यां क्षिप्त्वा निरुध्याथ पिधान्या मध्यरंध्रया ॥
स्थाल्यधो ज्वालयेद्वह्निं यामपर्यंतमुद्धृतम् ॥४०॥
ततः क्षिपेत्पिधान्यां हि व्योम्नस्त्वष्टगुणं पयः ॥
जीर्णे पयसि पिष्ट्वा तत्तालमूलीरसैः पुनः ॥४१॥
इत्थं हि साधयेव्द्योम त्रिवारमतियत्नतः ॥
अजादुग्धपुटैः पश्चाद्वारिणा विंशतिं खले ॥४२॥
कंपिल्लेन रसेनापि विष्णुक्रांतारसेन च ॥
कदलीकंदतोयेन तालमूलीरसेन च ॥४३॥
शतवारं पुटं देयं भवेद्व्योमरसायनम् ॥
तद्व्योमभस्मितं ताप्य भस्मताम्रस्य भस्म च ॥४४॥
शुल्बभस्म च तत्सर्वं समांशं परिकल्पयेत् ॥
भावयेत्सप्तधा निंबरसैर्लोध्ररसेन च ॥४५॥
त्रिफलायाः कदल्याश्च केतक्यामार्कवस्य च ॥
कोरकस्यापि सारेण तावद्वाराणि यत्नतः ॥४६॥
इति निष्पन्नकल्केऽस्मिंस्तत्समां त्रिफलां क्षिपेत् ॥
भस्मसूतं सिता व्योषं चित्रकं च पृथक् पृथक् ॥४७॥
मधुना गुटिकाः कार्याः शाणेन प्रमिताः खलु ॥
महाकल्क इतिख्यातो ह्यश्विभ्यां परिकीर्तितः ॥४८॥
विधिना वर्षपर्यन्तं भक्षयेन्मतिमान्नरः ॥
बलवृद्धिकरः शश्वत्सर्वरोगनिवारकः ॥४९॥

मेहानर्शांस्तथा पांडुकासश्वासहलीमकान् ॥
उपदंशं फिरंगं च कुष्ठं वापि निहन्त्यसौ ॥५०॥

हे शिष्य! अब मैं तुमको महाकल्कनामक उत्तम रसायन सुनाता हूं सो सुनो। उत्तम काली धान्याभ्रक को मूसली के रस में खरल करके एक हाण्डी में भर देवे और उस हांडी के ऊपर बीच में छेदवाला शराव (ढकना) ढक देवे और किनारों से बन्द कर देवे फिर इस हांडी के नीचे तीक्ष्ण अग्नि जलावे। और उस ऊपरवाले छिद्र द्वारा थोड़ा थोड़ा करके अभ्रक से आठ गुना दूध डाले जब सब दूध जल जावे। फिर इस अभ्रक को निकाल के मूसली के रस में फिर खरल करे और उसी प्रकार हांडी में रखके आठ गुना दूध जलावे ऐसे ही तीन वार अग्नि पर रखता जाय और उतारकर मूसली के रस में खरल करता जाय फिर २० पुट बकरी के दूध की देवे और कमीला के रस की, तथा कोयला और केले के कंदके रस की, तथा मूसली के रस की जब मिलाकर १०० पुट देवे पुट प्रति पुट अग्नि देता जाय तो यह उत्तम अभ्रक भस्म तैयार हुई। इसमें सोनामक्खी की भस्म, तांम्रभस्म, कांतलोहभस्म मिलाकर नीम, लोध, केलाकंद, त्रिफला, केतकी, भांगरा, सेमल के फूल इनके रस की एक एक भावना देकर सुखाकर पीस लेवे। फिर इसमें बराबर का त्रिफले का चूर्ण, तथा रससिंदूर, त्रिकुटा, चित्रक यह मिलाकर शहद से चार चार मासे की गोलियां बनावे इनमें से एक एक गोली एक वर्ष पर्यंत नित्य खाय और पथ्य से रहे। अथवा जिस तरह वैद्य उचित समझे खिलावे इस महाकल्क के सेवन से सर्व रोगमात्र नष्ट होकर बल की वृद्धि हो सब किस्म के प्रमेह, बवासीर, पांडु, खांसी, श्वासरोग, हमीमक, उपदंश, फिरंग, कुष्ठ यह सब रोग नष्ट होते हैं।।३९-५०।।

दिवालमुश्क

नवमाषकं चोलं च माषकं दलरौप्यजम् ॥
प्रवालं मौक्तिकं चैव भेदखर्परमुत्तमम् ॥५१॥
मणिं याकूतनाभं च मृगनाभिं तथांबरम् ॥
उत्तमस्वर्णपत्राणि सार्द्धमाषप्रमाणतः ॥५२॥
काश्मीरकं लघु एला द्विमाषं च पृथक्पृथक् ॥
आमपट्टस्य चूर्णं तु टंकमात्रप्रमाणतः ॥५३॥
चंदनं शतपत्री च गोजिह्वा पत्रपुष्कम् ॥
जातिपत्री तथा चैव शाणमात्रप्रमाणतः ॥५४॥
निस्तुषं धान्यकं चैव तुगाक्षीरी तथैव च ॥
कर्षार्धकप्रमाणेन योजयेन्मतिमान्नरः ॥५५॥
वैक्रांतमाफुकं चैव खर्परं च पृथक्समम् ॥
द्विरक्तिकात्तर चैव टंकद्वयप्रमाणकम् ॥५६॥
त्रिटंकं निस्तुषं शुद्धं बीजं कुल्फकसंभवम् ॥
मृदुदाडिमसारं च सारं मुष्टिबदरजम् ॥५७॥
सारामृतफलाभेदं सपादयुग्ममाषकम् ॥
अर्धकुडवप्रमाणेन गंधशतपत्रीजलम् ॥५८॥
द्विभागा च सिता शुद्धा भागैकं माक्षिकं स्मृतम् ॥
संमेल्य विधिना सर्वमवलेहं च कारयेत् ॥५९॥
कस्तूरिकावलेहोयं भक्षणीयः सदानरैः ॥
वातरोगादिशमनं बलकांर्तिविवर्द्धनम् ॥६०॥
यथापि उत्तमा योगा ह्यस्मात्पूर्वं प्रकाशिताः ॥
लोके प्रथाधुना चास्य अत अत्र उदाहृतम् ॥६१॥

दालचीनी ९ मासे, चांदी के वर्क १ मासा, अनवीधे मोती, जहरमोहरा खताई, मूंगे की जड़, उत्तम याकूत, कहरवा, अंबर, कस्तूरी, सोने के वर्क प्रत्येक डेढ़ २ मासा, केशर, छोटी इलायची प्रत्येक २ मासे, आवरेशम का चूर्ण ३ मासे, चंदनसफेद पिसा गुलाब के फूल, गाजुवां, गाजुवां के फूल, जावित्री प्रत्येक ४ मासे, धनिये के चावल, वंशलोचन प्रत्येक छः २ मासे, अफीम, संगय सब, प्रत्येक छः मासे २ रत्ती, कुलफे, के बीज छिले हुवे ९ मासे, सब, अनार, व्रीही, इन तीनों का रुव्व सवा दो २ मासे, गुलाव का अर्क आधपाव वेदमुश्क आधपाव, शदह् १ भाग, मिसरी २ भाग, सबको विधिपूर्वक मिलाकर अवलेह अर्थात् माजून बनावे। इसको दिवालमुश्क कहते हैं। यह उचित रीति से सेवन करने से वायु के रोगों को दूर करता है और बल तथा कांति को बढ़ाता है यद्यपि इससे बहुत उत्तम योग हम पहले कथन कर चुके हैं परन्तु यह व्यवहार में प्रसिद्ध है इसलिये यहां भी लिख दिया है।।५१-६१।।

गुरुरुवाच

नवभिश्च तरंगैश्च क्लीबानां हितकाम्यया ।।
सर्वं हि कथितं युक्त्या त्वया पृष्टो यथातथम् ।।६२।।
ईश्वरं च गुरुं चैव आयुर्वेदरतांस्तथा ।।
प्रणम्य यत्करोषि त्वं सर्वं तच्च भविष्यति ।।६३।।

गुरु कहने लगे हे तात! जो कुछ तुमने पूछा अथवा अपनी इच्छा से मैंने युक्तिपूर्वक नौ तरंगों में नपुंसकों के कल्याण के लिये समझा दिया है सो ईश्वर को और गुरु को तथा आयुर्वेद के जाननेवाले आचार्यों को प्रणाम करके जो वैद्यक संबंधी क्रिया करोगे वह तुम्हारी सब शीघ्र सफल होगी।।६२।।६३।।

एवं गुरुमुखाच्छ्रुत्वा नपुंसकामृतार्णवम् ॥
प्रेम्णा साश्रुनेत्रोयं पादयोः पततिस्म तम् ॥६४॥

इस प्रकार गुरु के मुख से नपुंसकों के लिये अमृत का समुद्ररूप ९ तरंगों में यह ग्रंथ सुनकर शिष्य के नेत्रों में प्रेम का जल भर आया और उसी समय श्रीगुरुमहाराज के चरणयुगल में गिर पड़ा॥६४॥

पंचषड्नवचंद्रेऽब्दे शुक्ले भाद्रपदे शुभे ॥
कुजे चैव त्रयोदश्यां ग्रंथपूर्तिः कृता मया ॥६५॥

श्रीविक्रमाब्द से सं० १९६५ भाद्रपदशुक्लत्रयोदशी भौमवार को यह ग्रंथ बनाकर मैंने पूर्ण किया॥६५॥

सोयं सद्भिः समाधेयः पश्यद्भिर्लोकसंस्थितिम् ॥
मुखराणांत्रुटिदग्धैर्वाक्यैर्हानिर्न मे क्वचित् ॥६६॥

सो यदि इसमें कुछ त्रुटि रह गई हो तो श्रेष्ठ पुरुषों को उचित है कि यह संसार की अवस्था देखकर और मेरी बुद्धि पर क्षमा करके समाधान करेंगे। और यदि निंदक लोग अपने छलयुक्त दूषण से दग्ध हुवे वाक्यों से मेरी निन्दा भी करें तो उनसे हानि ही क्या है क्योंकि वे विचारे तो संसार में सत्पुरुषों में दूषण लगाने के लिये ही पैदा हुवे हैं॥६६॥

दोहा

यथाबुद्धि कल्पित करि, शिष्यगुरूसंवाद ॥
पुंस्त्वकरण क्लैब्यहरण, विरच्यो रामप्रसाद ॥१॥
आयुर्वेद अध्ययन करि, सत् शास्त्रनको मंथ ॥
भेट जगतहित कर यह, कल्प किया सद्ग्रंथ ॥२॥

इति श्रीटकसालनिासिवैद्यपंचाननपंडितरामप्रसादोपाध्याय-
कृतोनपुंसकामृतार्णवः समाप्तः

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS